अनुक्रमणिका

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना।

सकल भव्य जीवों से मेरी यह प्रार्थना है कि इस अपार संसार में जीव पापकर्म उपार्जन करके अनेक प्रकार के दुःखों के विभागी हुए जाते हैं, निज स्वभावकूं भूल कर पर स्वभाव में रत रहते हैं, कुगुरु, कुदेव, कुधर्म, में रच रहे हैं, खोटी मति को अच्छीमाति समझ कर अंगीकार कर रहे हैं, और कितनेक भद्रिक भव्य जीव अच्छी मतिको अच्छी जान तो लेतें हैं मगर अंगीकार किया हुवा छोड़ नहीं सक्ते जैसे रायप्रसेनी सूत्रमें लोह वणिकका द्रष्टान्त है । और कितने ही ऐसे हैं के-रागद्वेष में लिप्त होकर धर्म अधर्म कूं तो कुछ नहीं जानते केवल मति पक्षपात सें कुदेव, कुगुरों को नहीं छोडते ॥ २ ॥ कितने ऐसे भी हैं न्याय ऽन्याय, धर्म ऽधर्म, साधू असाधू को वे कुछ नहीं जानते और अपनेसें सबको अच्छा समझते हैं उनके भांतें स्वेत स्वेत सर्व दुग्ध और पीत पीत सर्व स्वर्ण है ॥ ३ ॥ चोथे लंबरके जीव ऐसे भी हैं कि अपनी बात कों छोडते नहीं और दूसरे की सुनते नहीं ॥ ४ ॥ इस तरै संसार में च्यार प्रकार के अनेक मनुष्य हैं, इस हेतु सर्व सज्जनों से मेरी यह प्रार्थना है कि सरल परिणामों से हिताऽहित धर्माऽधर्म, का विचार गौरके साथ करैं क्यों के अव्वल तो मनुष्यशरीर ही पाना मुसकिल है, उसमैं आर्य क्षेत्र उच्च कुल पाना बहुतही

कठिन है, कदाचित् ए सब होयतो दीर्घ आयु पूर्ण इंद्रीबल, होना अत्यंत ही दुर्लभ है फिर सद्गुरु संयोग और वीतराग के वचन श्रवण में चित्त लगाना मुसकिल है, फिर सास्त्र श्रवणके बाद् सत्याऽसत्य का निर्णय कर असत्यका त्याग और सत्य का ग्रहण करना तथा धर्मकार्यमें प्रवृत्तहोना महामुसकिल है।

सब लोग जानते हैं कि एक दिन मरणा है, नजरमें देख-ते देखते स्वजन स्नेही भाई व मित्र, गरीब, अमीर, राजा, प्रजादि सब चले जा रहे हैं जैसें ही एक दिन सब को जाना होगा सर्वदा स्थिर कोई भी नहीं रहता लेकिन बिचार ऐसा बांधते हैं कि-हम अजर अमर ही हैं अथवा लाखो क्रोडो बरसों तक जीना होगा, मरते हैं सो और हैं, हम कोई और हैं, मोह कर्म बसमे मदांधकी तरै हो रहे हैं, और धर्म कार्य करना वा किसी गुण-वानके पास सुनना, निरपक्ष पुस्तकों को देखना तो व्यर्थ सम-झे है कहतें हैं हमें फुरसत नहीं मिलती लेकिन, उन लोगो को-येह बिचार अवश्य चाहिए के जिस वक्त कालवली आवैगा तो कोई डाक्टर, वैद्य, हकीम, ज्योतसी, बली धनी, सूरमा कुटम्ब, फोज, पलटन, किला, तोपखानादि, किसीका जोर नहीं चलेगा आखिर शरीरको छोडकर एका एक जीव शुभाशुभ कर्मको संग लकर पर भवमें जायगा, इसलिये अवश्य चाहिए कि जरा न आवे रोगन व्यापे इन्द्रीयों का बल पराक्रम हीन न पडे, जिसके पहले पह-ले जो कुछ बन सके यथासक्ति धर्म कार्य करे जिससें पर भवमें दुखः न पावै, और अनादिकालसें जीव कर्म संततीके साथ है उससें मुक्ति होनेका मार्ग मिले, इसलिये सर्वथा प्रकार हिन्सा, झूट, चोरी, मैथुन, परिग्रहादि कुकर्मोका त्याग करके शुद्ध सा

धुपना पाले, अथवा साधुपना नहीं ग्रहण कर सकै तो, जीवा जीव पुन्यपापादिक यथार्थ बिचार करके यथासक्ति ब्रत पच खान कर शुद्ध श्रावकपणां पालै, और गुणवंतोंका गुणगाणे में हमेसा तत्पर रहै, जिसमें अपनी आत्मा का कल्याण होय, मैंने जो निजबुद्धि अनुसार गुणवानोंके गुण गाये हैं सोपर हितेच्छु सज्जन धर्मानुरागी भाइयों के वांचनार्थ ये पुस्तक, आत्महित उपाय सगुणावली, छपाकर प्रकट करीहै सो कविजन, पंडित जन गुणवान् इसै पढ कर मेरा हास्य न करेंगै मुझै कोई ऐसा व्याकरण, काव्य, कोष, ह्रस्व, दीर्घादि, वर्णोका विशेष बोध नहींहै सो कोई भूल रहगई होवे तो गुणीजन क्षमा करेंगे, मैं नें तो अपने आत्महितार्थ जिन गुण गाये है श्रीजिनराज देवके गुणोंका तो पार नहीं है अनन्त हैं और मेरी बुद्धि छोटी सी जैसें कोई बावना पुरुष बडे ऊंचे अमृतफल तोड खाने के लीये प्रयास करे या कोई कुंडमें तैरने वाला मनुष्य अपने भुज बल सें महा कल्लोल लोल समुद्र में तिरणे के हेतु कूदपडेतो लोग हास्य करै तैसेही जिनगुणतो महा आगधि समुद्र और मैं अल्प मति क्या उनका वर्णन कर, सक्ता हूं इस लिए यहभी हास्यका कारणहै मैनें एकांति कर्म निरजराका कारण समझ कर गुणानुवाद किया है, सो कृपा कर अवस्य पढै और जो कोई जोड करणे में या लिखने में अथवा छपने में भूल रह गई होयतो क्षमा करे।

आपका हितेच्छु और गुणवानों का दास श्रावक
जोहरी गुलाबचंद लूणिया जयपुर

इति निवेदनम्।

॥ दोहा ॥

सकलसौख्यं दाता सदा विघन हरण गुणगेह ।
त्रिभुवन तारक ईश प्रभु प्रणमूं अरिहंत देव॥ १ ॥
कर्म चतुष्टय नाश करि पायो जिन निज धाम ।
द्वादश गुण संयुक्त जे अतिशय गुणअभिराम ॥ २ ॥
श्रीपरमातम परम पद पाये कर्म हटाय ।
ज्ञान स्वरूपी ज्योतिमय निज संपद सुखदाय ॥३॥
ज्ञानानन्त गुणाष्टयुत अतिशय जसु इकतीस ।
सर्वसिद्धिदायक सदा सिद्ध नमूं जगदीश ॥ ४ ॥
आचारज तीजे पदे गुण षट्तीस सुहाय ।
जिन आगम आचर्ण रत प्रणमूं तेहना पाय ॥ ५ ॥
उपाध्याय जिन श्रुत धरू शास्त्र अर्थ भंडार ।
गुण पच्चीसे शोभता प्रणमूं बारं बार ॥ ६ ॥
मोक्षमार्ग साधन करे पाले पँचा चार ।
सप्त बीस गुण धर सदा नमूं साधु सुखकार ॥ ७ ॥
श्रीजिनशासनदीपतो पञ्चम अरके मांहि ।
भिक्षु गुण निधि सागरू सुमर्‍याँ हित सुख थाय॥८॥
वर्तमान गणपति भलो मुनि पटड़ाल मुनीश ।
सेवकने सुर तरु समों करे ज्ञान वकसीस ॥ ९ ॥

एसहुनें प्रणामीं करी पुनि सरस्वती सुप साय ।
गुणावंता गुण गावतां प्रगटै बुद्धि अथाय ॥ १० ॥
हैं अनंत जिनराज गुण कहत न आवे पार ।
किंचित संग्रह करि कहूं निज बुद्धी अनुसार ॥ ११ ॥

प्रश्न ॥

जिन किसको कहते हैं

उत्तर ॥

जिन कहते हैं जीतनें वालोंको

प्रश्न ॥

जीतने वाले तो जोधा सूरमां कहातें हैं सो बैरीको बस करिके अपना जय करे उन्हीको कहते हो या और कोई बात है।

उत्तर ॥

परसेना को बिडार कर शत्रूको बस करै एतो संसारिक संग्राम है, ऐसा संग्रामतो अपना जीव आगे अनन्त बार किया जिससे कर्मबन्ध होकर उदय आने से दुःख प्राप्त भया तो मानो यह जय कहाँ हुई पराजय हुई।

प्रश्न ॥

तो फिर किस संग्रामके लिए कहते हो कहो ॥

उत्तर ॥

इसलोकमें जितने जीवहैं सो असंख्यात प्रदेसी हैं ज्ञान दर्शन चरित्रादि गुणों करके संयुक्त हैं और अनंत सक्तिवंतहैं वे दो प्रकारके सिद्ध और संसारी सिद्ध कर्मों रहित संसारी कर्मों सहित अनादिकालसे ज्ञानावर्णादि करिके ढके हुए हैं और कर्मोंसे लोलीभूत होरहे हैं ।

उस पर द्रष्टान्त ॥

तेल और तिल लोली भूत जैसे जीव और कर्म लोली भूत । १ ।

धातु माटी लोली भूत तैसे जीव कर्म लोली भूत २

घृत और दुग्ध लोली भूत वैसे जीव कर्म लोली भूत ३

इत्यादि दृष्टान्त करके अनंत सक्तिवंत जीव कर्मोंसे लिप्तहैं और मलीन होकर मलीन रत्नकी तरे अपनी बुनियाद को कभीभी नहीं पहुंचता जैसे बांझ स्त्रीके पुत्र नहीं वैसे अभव्य को मुक्ति नहीं

उनको अभव्य कहते हैं और जो शुद्धसामग्री पाके अनन्त चतुष्टय गुण प्रकट कर सके और करेंगे वो भव्य कहलाते हैं ।

प्रश्न ॥

कर्म क्या चीज है

उत्तर ॥

इसका जवाब से विस्तार तो जैनसिद्धांतों में है लेकिन इहां संक्षेप मात्र कहते हैं ।

सुनिए

कर्म जड है चउफरसी पुद्गल है रूपी हैं उनके नाम ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी २ वेदनी ३ मोहनी ४ नांम ५ गोत ६ अन्तराय ७ आयुष्य ८ इनमें च्यार तो अघातिक शुभाशुभ कर्म ह ।

१ वेदनी साता असाता
२ नाम शुभ अशुभ
३ गोत ऊँच नीच

४ आयुष्य शुभ अशुभ ।

ए च्यारो पुन्य पाप दोनो हैं इनके अनेक भेद हैं और च्यारों कर्मघातिक हैं जीवकाजैसा जैसा गुण दबाया है तैसाही इन कर्मोंके नाम हैं ।

१ ज्ञानावरणी कर्म ज्ञान आडा आभर्ण है ।
२ दर्शनावरणी दर्शनगुण आभर्ण है ।

३ मोहनी कर्म के उदय से जीव उन्मत्त होकर मदांध की तरं होजाता है।

४ अन्तराय कर्म जीवको लाभ नहींहोने देताहै ।

ए च्यारं अशुभ कर्म हैं इन कर्मोंको दूर कर राग द्वेष के जीतनेसे ज्ञान दर्शन चारितादि निज गुण प्रकट किया है उनको जिन कहते हैं उनकी अतिशय महिमादि गुणोंका पार नहीं हैं जिसका वर्णन शास्त्रों में कहाहै सो पढने सें या सुणने सें मालुम न हो सक्ता है, कर्म रूप बैरी को हटाके अपणी जय के करणे वाले, अरिहंत बिजई को जिन कहते हैं उनका मत याने बिचार को जिन मत कहते हैं ।

चतुर्विंशतिजिनस्तवनम्

श्रीऋषभजिनस्तवनम्

राग भैरवी ।

आदि समै श्रीआदि जिनदको स्मरण महा-
सुखदाई रे ॥ नाभिभूप मरुदेवीको नन्दन कीरति
त्रिभुवन छाईरे। धुरराजेश्वर धुर भिक्षाचर धुर परमेश
कहाई रे ॥ १ ॥ तीन ज्ञान संपन्न सदागम चर-
ण लेत जिनराई रे । मन पर्जव तव ज्ञान भयो है
कल्पातीत कहाई रे ॥ २ ॥ क्षपक श्रेणि चढ घ-
नघातिक अघ क्षय कीये जिनराई रे ॥ लहि केवल
भविजन प्रतिबोधत भूमण्डल छविछाई रे ॥ ३ ॥
लोकालोक प्रकट सब जाणै छांनी वस्तु न कांई
रे ॥ योग निरोधी शिव पद पाम्यां सिद्धि सदा सुख
दाई रे ॥ ४ ॥ उगणीसे चौपन मगशिर सित
रवि बारस दिन आई रे । गुलाबचन्द आनन्द भ-
योहै श्रीजिनस्तवना गाई रे ॥

अथ २ श्रीअजित जिनस्तवनम् ।

दरश देख जीनको दीदार भयो राजी । एचाल

अजित जिनंद फंद मेट सरणा गही तेरी ॥ आं० कर्मनको बंध काप मोटो जग मांहि पाप, जपूं जाप सोंप मोय तुम आंणा डोरि ॥ १ ॥ तुमहो त्रिभुवनके स्वांम वांछित सब पूरो कांम आठोंजाम नाम तेरो जपूं हाथ जोरि ॥ २ ॥ अनंत वली आप होय जीत सके नांहि कोय। अजित नाम तास स्वाम अरज सुनो मोरी ॥ ३ ॥ भविजन तुम धरत ध्यान दया दिल मांहि आन ॥ सेवक को दीन जान काटो भव फेरी ॥ ४ ॥ उगणीसे चोपन्न जांण पोषकृष्ण चौथ मान ॥ गुलाबचंद अरज आज करते करजोरी ॥ ५ ॥

अथ ३ संभव जिनस्तवनम्

राग आसावरी ।

संभव जिन नित वंदो वंदत होत अनंदो रे । भविका संभव जिन नित वंदो ॥ श्रावस्थी नगरी अति सुंदर जिनारथ तिहारा यो सेनादे राणी उर

उपनां संभव नाम कहायो रे ॥ संभव० ॥ १ ॥ लछन अश्व तणो हद सोहै च्यारसो धनुष शरीरो। साठ लाख पूरवनूं आयू पाम्यां भव जल तीरो रे । संभव० ॥ २ ॥ इक सय दोय थया मुनि गण धर दोय लाख अणगारो। तीनलाख पुनि साठ सहस गिण समणी तणों परिवारो रे। संभव० ॥ ३ ॥ संभव जिनको नांम जप्यांथी पामें शिव पुर राजो। तीन लोकके साहिव स्वामी तारन तिरन जहाजोरे संभव० ॥ ४ ॥ उगणी मे चोपन मगशिर सित चोदस मंगल वारो । गुलाबचंद कहै संभव जिनको स्मरण महासुखकारो रे । का भविका० ॥ ५ ॥

अथ ४ अभिनंदन जिन स्तवनम्

राग काफी

क्योंरे तोय लाज न आवे भटकत गणा थकि वार। प्चाल

बदरिया जिन वचनोंकी बरस रही सुख दाय ॥ (आंकडी) केवल ज्ञान घटा प्रकटी तव लोकालोक स्वभाव जानत प्रभुजी जीव चराचर छा नीं वस्तु न काय ॥ बदरिया० ॥ १ ॥ वचनामृत बरषत धुनि गरजत भविजन सुन हरखाय स्याद

वादं दोय विजुरी चमकत देखत कुमति डराय ॥ वदरि० ॥ २ ॥ शत इक षोडश गण धर प्रभुके पूरव धर मुनिराय । गूंथि गूंथि भव जनको पावत अंग उपंग वणाय ॥ वदरि० ॥ ३ ॥ केइ नर उत्तम चरन गहै तव केइ श्रावक पर्याय । व्रत धारक समदृष्टि सुधारक केइ दरस देख हुलसाय ॥ वदरि० ॥ ४ ॥ उगणीसे चौपन हितकारी माघ मास सुखदाय ॥ अभिनंदन जिनराज तणा ये गुलावचंद गुण गाय ॥ वदरिया० ॥ ५ ॥

अथ ५ सुमतिनाथ जिनस्तवनम्

राग

(नाथ कैसे गजको फंदछुडायो ए चाल)

सुमति जिन तुम साहिव सुखकारी मैतो- बार बार बलिहारी ॥ (आंकडी) सुमति सुधारन कुमति विडारन आप भये अवतारी । भविक उधारन भव जल तारण कारण अशुभ विडारी ॥ १ ॥ जिन आणां विन धर्म प्ररूपै या कुमति वडी छै धुतारी ॥ अनुकंपहिकूं अनुकूल कहै प्रतिकूल कहै

नहिं दारी ॥ २ ॥ तुम पसाय सुमति मुझ प्रगटी प्रगट भयो उजियारी । सावद निरवद भेद कह्या जब अंतर आंख उघारी ॥ ३ ॥ तेरा पंथे संत तंत है म्हंत वडा उपगारी । तसु पदपंकज मुझ मन भमरो सरण गह्यो गुणधारी ॥ ४ ॥ उगणीसे चौपन माघ अष्टमी श्रीजयनगर मझारी ॥ गुलावचंद जिनराज तणां गुण गावत धर हुसियारी ॥ ५ ॥

अथ ६ पद्मप्रभ जिन स्तवनम्
राग चालखडकाकी

पद्म जिनराज महाराज अलवेसरू नाम शिव धाम आराम नीको, भविक प्रतिबोध शुध सोध अविरोध तर पावियो आंवियो सुजसटीको ॥ १ ॥ चतुर्विधसंघनो नाथदुखभंजनो रंजनो भ्रमरभावि मन लुभायो ॥ अरज अव धारिये पार उतारिये स्वांम मैं तांहेरै सरण आयो ॥ २ ॥ लाख त्रण तीसहज्जार साहू भला ब्रह्ममुखलाख पुनि सहस वीशै समणि सुखदायिका आप शासन विषे काया अढाई सत धनुष दीसै ॥ ३ ॥ ध्यांन वर ध्याय शिवपाय अविचल थया गुण ग्रह्या अष्ट तुम सुख-

के दाता। यकेतीसे खरी अतिशये परिवरी नांम भ-जिया भवीं यामें शाता ॥ ४ ॥ संमत् उगणीसे वर वरस पचपन्नमें माघमासे वदी तीज आयो। क-हत गुलाव गुनगावतां ध्यावतां हरष आनंद मन-मां पायो ॥ ५ ॥

अथ ७ सुपार्श्वजिनस्तवनम्

(वामासुतवासजीप्रभुपूजो एचाल)

सुपारस स्वांमजी मुजै प्यारो एतो जिन व-रमोहनगारो। अं०) शोभै काशी नगर सुनीको नंद-न प्रतिष्ट नृपतिको। सुवरण वरण तहतिको ॥ १ ॥ छत्रतीन सिंहासन सौहै चामर युग विहुपासे मोहि। द्रुम अशोक जिनपें होवै ॥ २ ॥ इंद्र नरिंद्रादिक सव आवै तृण डाली शोभा रचावै। चौमुख जिनजी दरसावे ॥ ३ ॥ सुरतीर्यञ्च बहू नरनारी समव स रन होवै अतिभारी। तिणरो आगममें अधिकारी ॥ ४ ॥ उगणीसे चोपन्नै वरसे फागण सित एक-म दिवसें। कांई गुलाव शशी मन हुलसे ॥ ५ ॥

अथ ८ चंद्रप्रभजिनस्तवनम्

राग पीलू

होजी हो जिनद हां मोयतो भरोसो राजरा चरनांरो मोयतो आ० ॥ महासेनराजा तात त्रिसलादे राणी मात तेहनू तू अंगजात स्वेत वरणोरो ॥ १ ॥ तुमहो त्रिभुवन नाथ कीजे साथ दीजे हाथ धरम परम संसार तिरणोरो ॥ २ ॥ अरज करत एक प्रभुमेरी राखो टेक तुम दरसन सुद्ध आतम करणोरो ॥ ३ ॥ तेरेहूं आधीन लीन जलमें मगन मीन चंदस्वाम नाम धाम दुःखके टरनरो ॥ ४ ॥ करम भरम काप शिव सुख मोय साप गुलाबचंद आनंद शरणोरो । मो० ॥ ५ ॥

अथ ९ सुविधि जिन स्तवनम्

राग मल्हार सोरठ

पपैयापापी पियाजीरी वाणी न बोल एचाल

तारो हो जिनजी एसंसार असार । आ० सुग्रीव नंदन कुबुधि विहंडन सुबुधि सदा सुख कार । धनरामारे राणी जननी जायो सुत सुख कार ॥ १ ॥

बहुत भम्योंमें भवसागरविच अष्टकरमकी लार नर सुर तिय नरक निगोदै कहत नआवे पार ॥ २ ॥ कुबुधि केलवी बहु दुख पायो अबतो नजर नि- हार दीनदयाल कृपाल कृपा कर अपनूं विरद संभार ॥ ३ ॥ सुविधि करी सम कित रस पीनूं कीनूं सुगुरु अंगीकार । तेमोय दीनूं अजब न गीनूं ते विसरूं नाहि इणवार ॥ तारो० ॥ ४ ॥ उगणीसे पचपन वैशाष कृष्ण बीज सुक्र कुंवार ॥ गु- लावचंद आनंद हद पायो श्रीजयनगरमझार ॥ ५ ॥

अथ १० शीतल जिन स्तवनम्

सांतिय गुलाव फवे जये गनेमें एचाल

प्रभु तुम गुन सुन अति हरखायो । मुझ मन घन हुलसायो रे॥आ० शीतलस्वामी अंतरजामी गुण नां- मी शिव पांमी जी अविचल धामी नहि कोइ खामी आप भय आरामी जी ॥ १ ॥ सर्वलोक शीतल होने सें शीतल नाम कहायो रे । जिन जनम्या जिन अव- सर जगमें निपज्यो धान सवायो जी ॥ २ ॥ च्या- र कषाय अगनसुं अविकी तैं शुभ ध्याने आयोजी

शीतल ध्यांनै: शीतल होयनैं निरमल केवल पायो रे प्रभु० ॥ ३ ॥ जगवत्सल जगनायक जगमें पुरुषोत्तम सुखदायो । सुमरण सांचो मुझ मन राच्यो आछो ये भव पायो । प्रभु० ॥ ४ ॥ उगणीसे पचपन आषाढे कृष्ण चोथ मल आयो । रामराय हुलस्यो अंकूरो गुलाबचंद गुण गायो । प्रभु० ॥ ५ ॥

अथ ११ श्रेयांस जिनस्तवनम् ।

राग सोरठ ।

कुंवरीने जादूडारा मोह्या स्वामि हमारारे एचाल ।

श्रेयांस स्वांम मेरा में शरण गह्या अब तेरारे श्रेयांस० (आंकडी) गुरु गुण ग्यांनें जिन वर जांणों मनमान्या मुजकेरा । जिन वचजोवो परसनहोवी धान्या सुगुरु भलेरारे श्रे० ॥ १ ॥ नाथ निरंजन आप जगतमें भंजन दुखका डेरा । निरलोभी निकलंक भयेहो पाखंड है भव तेरारे श्रे० ॥ २ ॥ वनिता संग ढंग है केई आडंवर जन घेरा । केई लोभी सोभी मानी भस्म लगाय भुलेरारे । श्रेयांस० ॥ ३ ॥ ऐसे जगमें

कुगुरु कुदेवा मिलिया वेर घणेरा । सुगुरु सुदेव सुसेव धर्मकी विसरूं नहिं इणवेरा रे ॥ श्रेयांस० ॥ ४ ॥ उगणीसे पचपन आषाढ़े पंचमी दिवस सुनेरा । गुलावचंदकी येही अरज है टारो भव भव फेरारे ॥ श्रेयांस० ॥ ५ ॥

अथ १२ वासुपूज्यजिनस्तवनम् ।

राग कहरवा ।

ब्रे पौना में तुक्कल थारी काटोरे ज्वान ब्रे । एचाल ।

मेरे मन वासुपूज्य जिन भावै मेरे० (आंकडी) रूप अनूपम शोभित है तन लाल वरण दरसावै । मे० ॥ १ ॥ सुमति धार जपलै जग तारक काहे को कुमति वढावै । मेरे० ॥ २ ॥ जिन आणां विन धर्म न होवै श्रीसिद्धांत वतावै । मे० ॥ ३ ॥ देव सुगुरु शुध धर्म अहिंसा समकितवंत कहावै । मे० ॥ ४ ॥ निश्चय जिनको ध्यान धरंता फेर गरभ नहिं पावै । मे० ॥ ५ ॥ क्षपक श्रेणि चढ योग निरोधी शिव पुर वेग सिधावै । मे० ॥ ६ ॥ गुलावचंद आनंद भयोहै हुलस हुलस गुण गावै । मे० ॥ ७ ॥

अथ १३ विमलजिनस्तवनम् ।

राग खमाच ।

बतादे सखि कौन गली गए श्याम । एचाल

बतादे प्रभु सिद्ध मिलनको दाव । बतादे प्रभु० (आंकडी) विमलनाथ प्रभु आप निरंजन भंजन दुखको घाव । व० ॥ १ ॥ विमल ध्यानथी शिव पद पाया विमल भये उमराव । व० ॥ २ ॥ नाम स्थापनां द्रव्य निक्षेपो तुर्य सूर्य जिम भाव । व० ॥ ३ ॥ भाव निक्षेपै भविजन ध्यावो भाव वंदन-को चाव । व० ॥ ४ ॥ गुलाबचंदकी एही अरज-है पातक दूर पलाव । व० ॥ ५ ॥

अथ १४ अनंतनाथस्तवनम् ।

होजी म्हारै भिक्षूनै भारी मालतणी बरजोरी जी धरमनां धोरीजी एचाल—

चविप्राणत देव लोकसुंजी कांई सुजशा उदरे आय । सिंहसेन नृप सुत भलोजी नांमें अनंत कहाय । भजो जिनरायाजी परम सुखदाया जी हे जि एतो पूरण परमानंद तणी बलिहारीजी ती रथ करतारी जी । हो० ॥ १ ॥ आयो नक्षत्र रेवती

कांई जन्म थयो तिणवार। छप्पन दिश कुमारियां जी कांई करे निज कृत्य विचार। भजो जिनराया जी० ॥ २ ॥ सुरपति आसन कंपियो कांई चिंतै चित्त मझार। निरखी चैन चराचरी कांई देवै अवधि तिहिवार। भ० ॥ ३ ॥ जांणयूं मानुष खेत्रमें कांई जनम लियो जगतार। सप्त अष्ट पग सामों जई कांई करे स्तवनां हितकार। भ० ॥ ४ ॥ आवी निज आवासमां कांई घंट सुघोष पुराय। करण महोत्सव उमह्यो कांई जांणी निज पर्याय भ० ॥ ५ ॥ भो सुर चालो वेगसुं कांई लाहि निज निज परिवार। इम कहि सोहम पति तदा कांई आयो नृप आगार। भ० ॥ ६ ॥ हे जगजननी जनमियो तूं भव जल तारन हार। ले जावां महोच्छव भणीं कांई मंदिर गिरइण वार। भ० ॥ ७ ॥ पंच रूप वैक्रिय करी कांई शक्रघणूं उछरंग। इक लेई जिनराज नै कांई चमर उभय अति चंग। भ० ॥ ८ ॥ छत्र धरै इक पूठ ले कांई वज्र ग्रही इक सार। आगै चालै हेजसुं कांई नाटक विविध प्रकार। भ० ॥ ९ ॥ मंदिर गिर ऊपर जई कांई पांडुक वन कै माहि। सिंहासण सासय वसे कां-

ई देख्या नयन ठराय । भ० ॥ १० ॥ चौसठ इंद्र आविया । कांई जय जय शब्द उचार । सौधर्म्मेश निज गोदमें कांई लेवै थई हुसियार । भ० ॥ ११ ॥ अच्युत पतिनां हुकमथी कांई तीरथ जल सवि-ठाठ । कलसा विशेष करावतां कांई चौसठ पुनि स-हंस आठ भ० । १२ । करि उच्छव घर आविया कांई माताप्रति कहे एह । तुम सुत छै हम शिरधणी कांई राखिज्यो जतन करेह । भ० ॥ १३ ॥ अमृत अंगुष्ठे करी कांई निज निज कल्प विचाल । आवै इम विस्तार छै कांई जिन आगममें न्हाल । भ० ॥ १४ ॥ तज त्रिषया सज संयमी कांई योग छांडि जिन राय एक समय शिव पामियां कांई गुलाब कहै गुण गाय । भ० ॥ १५ ॥

अथ १५ धर्मनाथजिनस्तवनम् ।

भाजरी में होरी खेलन कैसे जाऊँ मैया ना बोले मोंसे एकबार ।

आपरीमैं या विध पूजा रचाऊँ तादिन शिव सुखपाऊँ गाऊँ मैंतो या विधपूजा रचाऊँ (आं०) दीपक नांण जांण नव तत्वैं सम कित जोत ज-गाऊँ ता० ॥ १ ॥ करुणा नीर धीर सुध निरमल

उपसम कलस ढुलाऊँ। ता० ॥ २ ॥ ज्यावच्च सुगुरु लूहन तन तपस्या अगर धूप महकाऊँ। ता० ॥ ३ ॥ चंदन खमन दमन इन्द्रिनको केशर कुंकुम मिलाऊँ। ता० ॥ ४ ॥ जिन गुन चुन माला कुशुमांकी पावन गल पहराऊँ। ता० ॥ ५ ॥ अक्षत वरत धरत जिन आगल ब्रह्म पकवान चढाऊँ। ता० ॥ ६ ॥ तवन ढाल सिझाय सुगारस बहु वादित्र बजाऊँ ता० ॥ ७ ॥ करि उपदेश जिनेश बचन नूं घंट सुघोष पुराऊँ। ता० ॥ ८ ॥ योग निरोध विरोध करमको एक समय सिध थाऊँ। ता० ॥ ९ ॥ आतम संपति कंपत नाही शिव सुख फल पुनिपाऊँ ता० ॥ १० ॥ इस विध पूजा करतां मेरा भव भवपाप पुलाऊँ। ता० ॥ ११ ॥ धर्मधुरंधर धरम जिनेश्वर धर्म ध्यान चित ल्याऊँ। ता० ॥ १२ ॥ प्रभुसें अरज गुलाव करत है में जिन शरणो आऊँ। ता० ॥ १३ ॥

अथ १६ श्रीशांतिनाथ स्तवनम्।

राग सोहनी।

कलमे तू बेकल हुआ क्या तेरे अजार है ए चाल।

शान्ति नाथ शान्तिकरो शांति तेरो नामहै (आं०) विश्वनंद कर आनंद काट फंद कर्म कंद तिमिर नाश कर उजास जय दीनंद स्वाम है शांति० ॥ १ ॥ करन सौख्य हरन दुःख धरम मुख्य जन निकुख्य आय राय चक्रिपाय शरन्न तग्न ठाम है । शांति० ॥ २ ॥ मिटत ताप जपत जाप हो मिलाप सजन आप । ऐसे नाथ साथ आथ पाय मुक्ति धाम है । शां० ॥ ३ ॥

पुनः शांति स्तवनम् ।

मलयकोई मति राखज्यो एदेशी ।

शांति करण प्रभु शांतिजी विस्वसेन जीरा नंदोजी । अचिरा उदरे ऊपनां मृगलांछन सुखकंदोजी । शांति ॥ १ ॥ जन्म समय सुर वहुमिल्या आया चौसठ इन्द्रोजी । दुख उद्वेग सहु नासिया थायो अधिक आंनंदोजी । शांति० ॥ २ ॥ तुम नामें संपद मिलै तुम नामै सुख थावै जी । रोग शोक सहु उपसमें दालिद्र दूर पलावै जी । शां० ॥ ३ ॥ तुम नामें सहुदुख टलै इंद्रादिक पद पावै जी । निश्चय सुमरण आपरो कीधां अविचल थाजीवै

शांति ॥ ४ ॥ भो भविजन ये जिन तणूं ध्यान धरो इक चित्तो जी । नांम जप्यां संकट टलै पामें भल भल वित्तोजी । शांति० ॥ ५ ॥

अथ १७ कूंथुनाथस्तवनम् ।

ए विनती अवधारी पार उतार ज्यो हो स्वांम (एआंकडी) कुंथुनाथ करुणा गर स्वांमी जी पूरण आशा खाशा धामीजी थांपर वारी हो जिनजी नांमी शिव पद पामी आरामी थया हो राज० ॥ १ ॥ भुवन अनुत्तरनां सुर ध्यावैजी । मोहन मुद्रा निरख सुख पावै जी । थांपै वारी म्हारा जिनजी तुमनी सेवा चावै उमावै सुर सहूहो राज थांपै वारी म्हारा जिनजी । ए विनती अव० ॥ २ ॥ करत प्रश्ण तिहांथी अमराजी जिम पंकज कूं चाहै भमराजी थांपै वारी म्हारा जिनजी भक्त तणी भक्तीनी शक्त नां जांणछोजी राज । थांपै० ॥ ३ ॥ जिन उत्तर प्रश्ण नूं देवै जी निर्जर अनुत्तर में जाण लेवै जी थांपै वारी हो ॥ सुखमें अति सुख पामें दरस तुम देखिनै हो राज थांपै वा० ॥ ४ ॥ उगणीसे पचपन माघ मासेजी अष्टमी दिवस भलै गुरु-

समकित धर कर करणी नींकी फीकी कुमति भगाइ। द्वादश व्रतधारी सुखकारी बारूं सुमति जगाई। जिनन्दजीसू लगन लगाई। या विध होरी मचाई ॥ १ ॥ ज्ञान गुलाल ताल जिन आगम भर पिचकारी चलाई। कर चरचा किरचा अघ कारण पाखंड ताज उडाई। करम दल दूर हटाई। या विध० ॥ २ ॥ करुणानीर धीर जिन वचनां सुचनां निज जिय मांई। आतम गुन ओलख गोलख कूं ज्ञान दर्शन सें बधाई। अमोलक ए रिद्धँ पाई॥ या विध०॥ ३॥ राय सुदर्शन देवाराणी सुत अरि जिन सुख दाई। तीरथनाथ साथ सहँससाहू तीस धनुष तनु पाई। सुद्ध मग मोक्ष सिधाई॥ यावि०॥ ४॥ उगणीसे पचपन माघमासे खास वसंत ऋतु आई। गुलावचंद आनंद भयो है श्रीजिनस्तवनां गाई। फलो मुझ आस सवाई ॥ या० ॥ ५ ॥

अथ १९ मल्लि जिनस्तवनम्

म्हारारे स्वामी बोलोनी वाला एदेसी ॥

राग गुजराती

सजर मिधर्मप्रभू केलाला एदे शी।

मल्लि जिन साहिबरे सांचा मेरे प्रभु अमृत सम वाचा लागे छै सब पाखंड मुज काचा ॥ मेरे ॥ १ ॥ सोहै पचवीस धनुष देही धरे सुर हरख निरख केई । तेरे जिन चरण शरण लेई । मल्लि० ॥२॥ पूर व खट मंत्री मन भाया । तसु तुम ज्ञानैं समुझाया । स्वल्प कालेकेवल पाया । म० ॥ ३ ॥ भली तुम अमृत सम वांनी । मुनि जन शिव सुखकी खांनी । अछेरो पाय थया ज्ञानी । म० ॥ ४ ॥ करत जिनस्तवनां सहु सावै वसन्त रितु पचपनमें आवै । खुसी थइ गुलाव शशी भावै । म० ॥ ५ ॥

अथ २० मुनि सुव्रतजिनस्तवनम्

राग मांढ

थांने आईजि अनादी नींद जरा टुक जोवोतो सही·एचाल

श्रीमुनि सुव्रत जिनराज तणां गुणगावो तो सही (आंकडी) निज सरूप सुखदाइ सदा तुम ध्यावो तो सही । अध्यातम रूप अनूप भूप शिवपावोतो सही । श्री० ॥ १ ॥ ए पुदगल नूं रूप कूप मनजाणोतो सही । तुम छांडी विषय विकार सार दिल

ल्यावोतो सही। श्री० ॥२॥ कुमति कदाग्रह छोड़ स्रोड मध आवो तो सही। ये नर भव दुर्लभ पाय कुपथ भुलावो तो सही। श्री० ॥३॥ लहि सामग्री सार टार क्रम आवो तो सही। चरन ग्रही भवि बच्चन जच्चन फुरमावो तो सही। श्री० ॥ ४ ॥ उगणीसे पच्चपन मन सुध ठावो तोसही। कहै गुलाबचंद आ-नन्द अचल सुख पावोतो सही। श्री० ॥ ५ ॥

अथ २१ नमि जिनस्तवनम्

(धीठामें धीठा क्या विगाड्या तरा पड़ेशी) १

चेतन सुखदाई नमिए नमि जिनराया निज गुण लिय ल्याई नामिएं सुगुण सुहाया (आंकडी) कवण अछै तू किन, संग मोह्या रे जिया एम विचारो जी ध्यान धेय ओलखकर करणी अ-पनूं काज सुधारो। चेतन ० ॥ १ ॥ द्रव्य थकी ए सास्वत जानो तीनकालरे मांयों। केवल दर्शन ज्ञांन अछेपिण करमा वरणाछिपायो। चे० ॥ २ ॥ भाव थकी तो कह्यो असास्वत पंचम अंग मझा-री। चेतन गुण नहिं घटे वधे तिल पलटै परजाय थां री। चे० ॥ ३ ॥ कुमति विडारी सुमति सुधा-

री जपोजाप जिनजीको । जीछै कारण करले सुध करणी पतिथा शिवरमणी को । चेतन ॥ ४ ॥ निज ध्येय ध्यांतां जिन गुण गातां सुख संपद हद पावैजी । नमिय नमो दुख गमो सर्वथा गुलावचंद गुनगावै । चे० ॥ ५ ॥

अथ २२ नेमि जिनस्तवनम्

चाल ग़ज़ल

इम कहती राजुलनारी सखी मेरो नेमनाथ सुखकारी छवि लागत है अतिप्यारी भला सुभ रथतणी असवारी ए रथ तणीं असवा री ॥ संग आएहै गिरधारी लख कोतल घोडा भारी लख को तल मिले सब जादव बंस उदारी । इम० ॥ १ ॥ लख पसुवन कर इकठरि भेर मिजमानी राय विचारी घमसांण करण कूं त्यारी खिले वन वाग बगीचे सारी नेमी सर तोरण आए । जब पसु मिल शब्द सुनाये सुनि जिन वर करुणां ल्याये सुन। तजी रथ फेर चले गिरनारी ।इम० ॥ २ ॥ तव कृष्ण कहे सुन भाई । तेरे ये स्यों आई दिलभाई भाखे नेमीश्वर राई मरै पशु जीव हमारे तांई नाहि परणी एह वी नारी वधू शिव वरस्यूं

सुख अपारी गिर सम धीरजता कीनी लहि केवल-शिव वर लीनी कहे गुलाव शशी सुख भीनी कहै । जाउं तसु चरण कमल वलि हारी । इम० ॥ ३ ॥

अथ २३ पार्श्वजिनस्तवनम्
राग लावणी

करै क्षणमाहि लोहको कंचन ते पारस जग-में काचो इक भवमें सुखियो थाय जिणिसुं तिणमें मति राचो तुम प्रभु पारस सांचे पारस वचन सु-धारस हितकारी तसु ओलख सरणू चरण गह्या सें करदे आप समों भारी । अपने मनकूं वश कर चेतन नमिये पारस सुखकारी । निज परगुन जानी हित आनी करले नाथ तणी यारी ॥ १ ॥ कल्प-तरू जिम आशा पूरन चूरनकरम भरम अघकूं । तम मेटन जैसें करै उद्योत रवी जगकूं । सुण साहिव स्वाम सुधाम पाम आराम थयो है अति तुम कूं । अव सादृश रूप भूप होनें दी चाहलगी हमकूं अपने० ॥ २ ॥ थई संजमी तपस्या करतां खायक श्रेणि चढी आवे । त्रणादशमें स्थांने नांण भलो के वल पावे अघांतिक कर्म च्यार क्षय कीधः येक

समय में शिव जावै। इम कहै गुलाब सिताब उनीकूं सुख थावै। अपने० ॥ ३ ॥

अथ २४ महावीरजिनस्तवनम्

आज सुर इंद्र इंद्र वीर गुन गावता ॥ प्राणान्ति लोक भवन तिहांथी सुदेव च्यवन आय देवानन्दा उदर चतुर्दश दिखावता। आज०॥ १ ॥ राय सिधारथ तात त्रिसलादेराणी मात अमर गरभ हरण करी तास उदरै ल्यावता। आ० ॥ २ ॥ फाल्गुनी उत्तरा जांण जनम्यो सुदिन जगति मांन। रासि कंन्या हेम वरणों सकल दुःख गमावता। आ० ॥ ३ ॥ अथिर धार मन विचार आत्मसार संयमभार वारे वरस तेरा पक्ष तपथी अघ धूलावता। आ० ॥ ४ ॥ साल द्रुम हेठै आय भावनां सू सुद्धभाय केवल पाय जिनंदराय भविक कूं समझावता। आ० ॥५॥ हजार चोदे साहु वंस आरज्या छतीस सहंस सुबुधि वहुनांण जांण पूर्वधर उमावता। आ० ॥ ६ ॥ नृपति पावां पुर अरदास अरज है करो चौमास विन तडी चित मांन तीरथपति ठावता आ० ॥ ७ ॥ कातिक वदी दीपमाल करम च्यार दू-

र ढालदेववि देव रयण अर्थ मोक्षमें सिधावता आ० ॥ ८ ॥ उगनीसें पचपन जांन भलो दिवस खुसी मांन गुलावचंद हरख धरी तवन कूं सुनावता । आ० ॥ ९ ॥

अथ २४ चतुर्विंशति जिनस्तवनम्
राग कालिंगडा

प्रभुजी का शोभा वरणी न जाय मेरे प्र० एआंकडी

ऋसभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्म सुपारसराय । प्र० ॥ १ ॥ शशि प्रभ जिन पुनि सुविधिनाथजी शीतल श्रेयांस सदा सुखदाय । प्र० ॥ २ ॥ वासुपूज्य श्री विमलनाथजी अनंत धर्म जगतारक साय । प्र० ॥ ३ ॥ शांतिकरण प्रभु शांतिनाथजी कुंथु अरि मल्लीदेव कहाय । प्र० ॥ ४ ॥ मुनि सुव्रत नमि नेमि पारस प्रभु श्रीवर्धमान चरम जिनराय प्र० ॥ ५ ॥ ए चोवीश जगत जयवंता एहतणां चरणां चितल्याय प्र० ॥ ६ ॥ श्रीभिक्षु गुरुमाल गणांधिप राय शशी जयमघव कहाय प्र० ॥ ७ ॥ माणकलालतणे पट सोहे डाल गणी जिन जिम महाराय प्र० ॥ ८ ॥ चतु र्वि-

शिंति तीरथ पति केरी करी स्तवनांये तासु सुप-
साय प्र० ॥ ६ ॥ उगणीसै पचपन संवत भल
ऋत वसंत भवि पिक हुलसाय। प्र० ॥ १० ॥ शु-
भ दिन सुभघडि शुभ पलजानों तादिन जिनका
त व न व ना य।प्र०॥ ११ ॥ निज बुधि माफक मैं
गुनगाया प्रभु गुन केरा पारन पाया प्र० ॥ १२ ॥
कहत श्रावक धर्म प्रभावक गुलावचंद आनंद अ-
धिकाय प्र० । ॥ १३ ॥

अथ पंचपद स्मरणम्।

दोहा

श्री उसभा दि जिनेश्वरा चउवीसे सुखदाय।
वंदू वेकर जोड कै नित प्रति सीस नमाय ॥ १ ॥
चंद्रानन धुर चर्म फुन वारिषेण जिनराय।
ऐरव क्षेत्र विषे थया नमूं नमूं हितलाय ॥ २ ॥
भरत पंच पुनि ऐरवय तेय विषे अवधार।
चउवीसी थइजे सदा प्रणमूं अनंत अपार ॥३॥
विदेह पंचमें जे विजय इक सय साठे विचार।
थया जिनेश्वर तेह नमूं करण जोग सुध धार॥४॥

वर्त्तमान तीरथ पती विचरै अतिशय धार ॥
निर्मलगुण ज्ञानादि जे प्रणमूं वारं वार ॥ ५ ॥

ढाल ।

चेतन चेतोरे यह संसार असार (एदेशी)

जिनरायारे शरणातिहारे स्वांम ए विनती अवधारिये जिनरायारे जि० तुम गुण अधिक अमाम दुरगतिके दुख टारिये ॥ जि० ॥ १ ॥ भमतां भव भवमांहि मनुष जनम यह पाविया ॥ जि० पायो आरज देश उत्तम कुल वलि आविया ॥ जि० ॥ २ ॥ सुणी आपरी वांणी मीठा अमृत पय समा ॥ जि० धन धन है तुम्हनांण वाह वाह तुम्ह नै घणी खमा ॥ जि० ॥ ३ ॥ जिन॥ तुम्ह आणामै धर्म अधरम आणां वाहिरै ॥ जि० वांणी गुण पैतीस अतिशय चउतीस तांहरै ॥ जि० ॥ ४॥ द्वादशगुण श्रीकार छत्र चामर ओपै भला आजि ॥ अशोक वृक्ष उदार मुख जिम पूरण शशिकला जि० ॥ ५ ॥ द्वादश पर षद मांहि वैसी देशनां देवता ॥ जि० लोका लोक स्वभाव सांभल सुर नर सेवता ॥ जि० ॥ ६ ॥ नहीं तुम्ह मुझमें फेर

अंतर ज्ञानें जांणियो ॥ जि० हुं करमांनै केडू हिव संवेग चित आंणियो ॥ जि० ॥ ७ ॥ जपतो थारो जाप तुम कहि जिम करणी करूं जि० भव भवनां दुख कांप ध्यान तुमारो नित धरूं ॥ जि० ॥ ८ ॥ कारण कारज सिद्ध विन कारण कारज नहीं ॥ जि० ते मांटै निज रिद्ध प्रकट करण सुमरण सही ॥ जि० ॥ ९ ॥ निमित्त कारण हो आप उपादान निज आतमां ॥ जि० करता पणै सुथाप मोक्ष कार्य होय स्यात मां जि० ॥ १० ॥ आज भलो सुविहाणं आज कृतारथ हूं थयो ॥ जि० उदय भयो भल भांण सुमरण सेती सुख लह्यो ॥ जि० ॥ ११ ॥

ढाल

केवला वरणी खय थयो प्रगट्यो केवल नांणो रे काल गये वर्त्तमान नूं आगमिया नूं जाणूं रे ॥ ज्ञान दरसण प्रणमूं सदा वारी चारीत तप सुख कंदो रे आतम गुण शिव पंथ ए वारी आदरतां आनंदो रे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥

दोहा

आदि अंत वेहू नही सकल स्वभाव अवर्ण ॥
सिद्ध नमू नित हित भणी कारज सिद्धी कर्ण ॥१॥
साहि अछेपिण अंत नहीं पाम्या पद-निर्वाण ॥
करमा वरणी क्षय करी प्रगट वसू गुण जाण ॥ २ ॥
परमातम पद पावियो निरावर्ण निज रूप ॥
लोक अग्र शिव सुख लही आतम संपति भूप ॥३॥
त्रिक रण सुभ योगे करी प्रणमूं वारं वार
इण भव पर भव ने विषे सरणांरो आधार ॥ ४ ॥

ढाल

म्हांरा प्रभुजी ओलंभडे मती खीजो (ए देशी ।

अंत समें तुम योग निरोधी कर शैले शीकर्ण चोदश गुण स्थानक फरसी ने थयो चेतन निरावर्ण हो प्रभुजी आप तणों मोय शरणो भव भव पातक हरणो हो प्रभुजी ॥ आप० ॥ १ ॥ अ इ उ ऋ ऌ पंचाक्षर गुणतां जिती वार इतनी स्थिति में कर्मविनाशी एक समय गतिधार हो ॥ प्र० ॥ आ० ॥ २ ॥ ऊर्धलोक लोकांते जइ नें जोतमें जोत प्रकाशी अजर अमर अक्षय निरुपाधी जन्म मरण दुख नाशी हो ॥ प्र० आ० ॥ ३ ॥ चरम शरीर तणी

अवगाहन तेहनां त्रण भाग जाणूं। आत्म प्रदेश विमल संकोची दोय भाग परिमाणूं हो ॥ प्र० आ० ॥ ४ ॥ अतिशय ऐक तीस अति ओपे परम समाधी पामी ॥ कहां लग वरणासकूं गुण तारा अहो अहो अंतरजामी हो प्र० आ० ॥ ५ ॥ तीन कालनां सुर सुख कहिये अनंत वरांगना देइये ॥ तेहथी अनंत गुणो अधिकेरा तुम सुख पाम्या कहिये हो ॥ आ० ॥ ६ ॥ तिलमां तेल है व्यास अनादि करमां संग जिम जीवो ॥ घाणियादिक चारित्र उपावे पामी मुक्ति अतीवहो प्र० आ० ॥ ७ ॥ धातू माटी अलग करणाकूं कारण वन्हीं धारो ॥ करणी करी सर्व संवरथी करमसुं कियो छुटकारो हो प्र आ० ॥ ८ ॥ पयमें घृत प्रत्यक्ष न दीसें फूलमें अतर छिपायो ॥ ज्यूं चेतन इण कर्म सघाते रह्यो ममत दुख पायोहो। प्र० आ० ॥ ९ ॥ आपतो कारज सिद्ध करीने अमरापुर अवतरिया। कामक्रोधवस जीव अज्ञानी चिहुगति माहे रडियाहो प्र० आ० ॥ १० ॥ जिन वांणी सुण रयण अमोलकहूं इण भवमे पायो। आदरव तंत्र ने तुमसुमरण आनद हर्ष सवायो हो प्र० आ० ॥ ११ ॥

ढाल

वेदनी क्षय थइ तेह सेंवारी आतमीक सुख पायाजी नांम क्षायकथी गुण बध्यो वारी भाव अमूर्तिक थायाजी ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ गोत आऊ खोनासिया वारि अगुरु लघू सुखदायाजी अघं घटियां गुण परगट्यां वारि अटल अवगाहनरा-याजी ॥ ज्ञान दर्शन प्रणमूं सदा ॥ २ ॥

दोहा

पद तृतीय आचार्य गणी गुण षट तीस सुहाय ।
तासु चरण प्रणमूं सदा मन वच तन लय ल्याय ॥१॥
निरावरण रूपी रवि आंथमियां अंधियार ।
दीपक जिम गणि जोतिथी भवि जीवां उजियार ॥२॥
अष्ट संपदा जेहनी पट दश ओपम सार ।
च्यार प्रकारे संघनै मुनिपतिनूं आधार ॥ ३ ॥

ढाल

थां पर वारि हो जिनजी. आमेरियादेवलमें चंदसुहावणा होलाल एदेशी—

थांपर वारिहो सुगुरुजी गण वत्सल गण नायक स्वांम सुहावणां हो लाल ॥ (आंकड़ी)

श्रीजिन आंगा सहित सुध पालोजी अन्य समग समणींकूं भालोजी ॥ थांपै वारीं दोष वैयालीस-टालो सभालो महांवयनीकाजी ॥ थां० ॥ १ ॥ तज परभाव स्वभाव में रमताजी सिख सिखणी सें छांडी ममताजी थांपै आतमीक सुख गमता चावनां एकांत तिणरीजी ॥ थांपैं० ॥ २ ॥ अंग उपांगादिक सिज्झायाजी क्रोधादिक तज निज ध्येयें ध्यायाजी थांपै । शुकल भला ध्यव साय मदा तुम ध्यावतांजी ॥ थांपै० ॥ ३ ॥ पट धारी गछ थंभ सुहायो जी सासन प्रभुनो जबर जमायो जी थांपै मिथ्या तिमिर हटायो बधायो गण सुखदायो जी थांपैं० ॥ ४ ॥ नीत विमलथी पालो पलावो जी अज्ञा डोरो झाली झलावोजी । थांपैं० । सुलभ भवी समझावो वतावो मारग आछो जी ॥ थांपैं० ॥ ५ ॥ धन तुझ नांण दरसण चरितो जी पर ग्रंथि टारी ए तुझ वित्तोजी ॥ थांपैं० सहु जंतू पै हित्तो पीहर षटकायनांहो स्वांम ॥ थापैं० ॥ ६ ॥ मुख पूरण शसि जिम हदनांकोजी पायो महीमें जसनूं टीकोजी ॥ थांपैं० नैं तुम मुक्ति नजीको तहतीको गणपतिनीकोजी ॥ थापैं० ॥ ७ ॥ चेतन सब

लो निज गुण दरियांजी निर्मल नीर गुणांकर भरियोजी ॥ थांपैं० करम पटल सें टरियो उधरियां निज गुण भालीजी ॥ थांपैं० ॥ ८ ॥ तपसी लघु सिख वृद्धनी सारोजी करतां असनादिकनी संभारो जी ॥ थांपैं० । मुनिजन नै आधारो जिहाज सम इण भवें हो स्वांम थांपैं० ॥ ९ ॥ षट दरसन जानी महमांनी जी गंगा जल जिम अमृत वाणीजी थांपैं० ध्यांनी आतम ज्ञानी पोतानी ऋद्धि वखांणीजी ॥ थांपैं० ॥ १० ॥ प्रणमू वे कर जोडि गणींदाजी सरण तुमारो है सुखकंदोजी ॥ थांपैं० मेटण अघ दल फंदा करूं तुझ उपासनां हो स्वांम ॥ थांपैं० ॥ ११ ॥

ढाल ।

मति श्रुति नांण तणां धणी वारी निर्मल बुध अधिकायोरे ॥ चउदे पूरव धारिका वारी जिनजिम सोभ सयवायोरे ॥ ज्ञान दरसण प्रणमूं सदावारी चारित तप सुख कंदोरे ॥ आतम गुण शिव पंथ ए वारी आदरतां आनंदो रे ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥

दोहा

पद चतुर्थ सुमरूं सदा उवभाया अणगार ॥
पांचवीश गुण सहित जे ज्ञानै गुण भंडार ॥ १ ॥
वमी भोग संसारका जाणों जहर समांन ॥
आचारज पद योग है नमो नमो गुणखांन ॥ २ ॥
तत्वधार निर्णय करी भणै भणावै जेह ॥
सासनमांहि महामुनी टारै कर्म निरेह ॥ ३ ॥

राग आसाउरी में

मुनीश्वर स्मरण तुम्हारो साचो। मैं तो पायो इण भव आछो(एआकडी)सात नयें विसतार सहित जे चउ निक्षेप वखाणें। सास्वता सास्वत वस्तु बहु विद हैं तद्दृष्टांत ओखांणे हो॥ मु० ॥२॥ स्याद वाद मारग प्रभू केरो तास प्रकाशक स्वामी भांगा सप्त थकी ओलखावें कुमति कदाग्रह वांमी हो॥ मु०॥ ३ ॥ पांच ज्ञांननूं भेद सिखावै मति श्रुति अवधि विचारै। मन पर्जव केवल ए पांचूं तेहना दोय भेद धारो हो॥ मु० ॥४॥ प्रत्यक्ष और परोक्षादिकनों सर्व भेद समझावे हित आणी। उवभाय नमीजे सुंदर भावनां भावै मु०

मुक्के निसाणी हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ पाहण सम अ-
वनीत समणकूं करदे रतन सरीसो ॥ वाह वाह स-
क्ती एह तुम्हारी चरण नमाउं सीसो हो ॥ मु०
॥ ६ ॥ यह संसार सुपननी माया विजली ज्यों
चमकारो ॥ डाभ अणी जलसो आऊषो भाषै स-
भा मझारो हो ॥मु० ॥ ७ ॥ चउगति भ्रमण करंता
जिवडो मान वरो भव पायो ॥ रत्न चिंतामणी खोय
अज्ञानी पड्यो नरकगति मांयो हो ॥मु० ॥ ८ ॥
वेदनां दस परकार क्षेत्रनी दे परमधामी मारो ॥ मुद्गग
रथी चूरण तनुकरो दुर्गंध महा अधि यारो हो ॥ मु
।९। अधरम करियेह वा दुख पावै धर्मथी शिव पुरजावै
इण विध दे उपदेस भविककूं फल शुभ अशुभ
वतावै हो॥मु० ॥ १० ॥ कारमां सुख सुरनां मुनि
जांणे पातिक अलघाटाले ते उवझाय नमीजे बलि
बलि जिनसासन उजवालै हो ॥ मु० ॥ ११ ॥

ढाल ।

मोह करम पतलो करे वारी सरधा सांची
भासैरे । गणी आगें मंत्री सम वारी भिन्न भिन्न भेद
प्रकासे रे ज्ञान दरसण प्रणमू सदा वारी चारित्र-
तप सुखकंदोरे आनमा गुण शिव पंथ ए वारी आ-

हरतां आनंदोरे ॥ ज्ञान दर्शन प्रणमूं सदा ॥ १ ॥

दोहा

सकल साध अढि द्वीपमैं उत्कृष्ट नव सैंसकोड़ि।
विचरैं मानू क्षेत्र में वंदू वे कर जोड़ ॥ १ ॥
भवसागर में डूबतां पर तिष झाझ समान ।
लेस्या सुध आलंबनै ध्यावै निरमल ध्यांन ॥ २ ॥

ढाल

इण सरवरि यारीपाल, ऊभा दोय राजवी म्हारा ला-
ल ऊभा दोय राजवी । एचाल ।

संजम धरि मुनिराय सुधारे आतमां हो लाल
सु (आंकड़ी) तन पूतलकूं जाणै छ सात धात-
मां हो । लाल सु०॥ १ ॥ महाव्रत पंचप्रकार करण
तीन जोग मां हो लाल ॥ सु० इर्यासुमति मझा-
र चलै उपयोग मां हो लाल ॥ चलै० ॥ २ ॥ तृण
जिम सुख षट खंड तणां छिनमें तजै हो लाल
तणां छिनमें ॥ जांणी विषनू भांड़ एक संजम स-
झैहो लाल ॥ एक संज० ॥ ३ ॥ सहस अठार शी-
लांग तणा धोरी भला हो लाल तणां धो ॥ नव-

शिव ब्रम्ह ब्रत मांहि सदा चढती कला हो लाल ॥ स० ॥ ४ ॥ तपस्या द्वादश भेद करंता हित भणी हो लाल ॥ क० देव कर्म ऊछेद नहीं चूकै अणी हो लाल ॥ न० ॥ ५ ॥ गुरुनू विनय भरपूर व्यावचमें रक्त है हो लाल ॥ व्या० आमो सही पमुहा बहु ल-व्धीनी सक्ति है हो लाल ॥ ल० ॥ ६ ॥ एक इकज्ञांन वैराग तणी करै वारताहो लाल ॥ त० एक इक ध्यांन में मग्न रहै अघ टालता हो लाल ॥ रहै० ॥ ७ ॥ लोपै नहीं गुरुकार सुगुण हिरदै धरै हो लाल ॥ सु० अप्रतिबंध विहारै नव कल्पी करै हो लाल ॥ ते-न० ॥ ८ ॥ गोपै मन वच काय भ्रमर वत गोच-री हो लाल ॥ भ्र० खमें परी सह बावीस परवाह नहीं लोचरी हो लाल ॥ पर० ॥ ९ ॥ पंचमां आरामांय भिक्षु गणि फाविया हो लाल ॥ भि० श्रद्धायथार्थ वताय भविक समझाविया हो लाल ॥ १० ॥ भ० च्यार जाति नां देव महामुनि सेवतां हो लाल ॥ ११ ॥ म० अधिष्ठायक इण सासनैं बहु देवता हो लाल ॥ अनुरागी जिनधर्मी श्रावक श्राविकाहो लाल॥ श्रा० समदृष्टी हलुकर्मी भवि शुभ भाविका हो लाल ॥१२॥ तसु बिपतासब

दूरकरै सुरसायुता हो लाल ॥ क० पावै अनूप भरपूर ए समरण गायता हो लाल ॥ एस० ॥ १३ ॥ भि च्छू पटधारी माल भद्रक गुण पाविया हो लाल ॥भ० समकित बोध पमाय अमरपुर जाविया हो लाल ॥ अ० ॥ १७ ॥ राय शशी सुखदाई तखत तीजै भलाहो लाल ॥ त० तूर्य पाट जयाचार्य थया नित. निरमला हो लाल ॥ थ० ॥ १५ ॥ मघवा सम मघराज तणौ पट सोहतां हो लाल त० माणिक भवोदधि पाज भविक मन मोहताहो लाल भ०॥१६॥ तसु पट जेम जिनेश अछै वर्तमानमें हो लाल येनामे डाल दिनेश अमी जसुवांणमें हो लाल ॥ अ० ॥ १७ ॥ रटता लाखों जीव एक तसु नांम नै हो लाल एक० काटता कर्म अतीव श्रद्धा सुध पामनै हो लाल अ० ॥१८॥संबत उगणीसे सार सतावन आवियो हो लाल ॥ जयपुर नगर मझार स्मरण ए ध्यावियोहो लाल ॥ १९ ॥ डाल गणी सूपसाद श्रावक मन भावियो हो लाल ॥ गुलावशशी सुखदाय आनद हद पावियो हो लाल ॥२०॥ निज बुध माफक एह करी स्तवना भली हो सुख संपति हद लेहथइ अति रंग रली हो लाल ॥२१॥ पाप उद-

यजे विपाक दालिद्रादिकदुखमिटै ॥ उपसम रोगने सोगजप्या संकटकटै ॥ २२ ॥ सावण धर सुचिमास भलो दिन आवियो हो ॥ भलो पंच पदारो जाप पंचमी दिन गावियोहो लाल ॥ २३ ॥ इति

अथ वीरसासनस्तुती ।

म्हानै घणोरे सुहावै थारो घाघरियो । एदेशी ।

म्हानै घणोरे सुहावै सासन वीरनो (आंकडी) कहि ए चतुरमारग ए मोक्षनां तसू ओलखियां भव पाररे भलो सासण पावै ते नरा जाणो धन धन तस अव-ताररे॥म्हाने०॥१॥ ज्ञान दरसण चरण सूं जांनिए करै निर्जरा कर्म वेधांणरे। प्रगटै आतम सत्ता एक-त्वता जांणे स्वपर वस्तु निज ठाणरे ॥ म्हानै ॥२॥ तोड्याकर्म च्यार घन घातियां गुण द्वादश धुर पा-दमायरे॥थया सकल कारज सिध तेहना वीजे पद अठगुण अधिकायरे॥ म्हानै ॥३॥ करै सारण वार-ण चोयणा समपद वलि गुण षट् तीसरे ॥ आथै सूरज केवलि सारिसो सोभै दीपक जेम जगीस-रे म्हानै० ॥ ४ ॥ भणै द्वादस अंगादि सूत्रको देवै

वाचना दान सुरंगरे ॥ चउथै उवझाया पद वंदिये त्यांरो निरमल नाण सुरंगरे ॥ म्हानै० ॥ ५ ॥ त्या- वै भवर तणी पर गोचरी पालै महव्वय पंच प्रका- रेरे जंतू करुणावंत मुनीसरा तपसी लब्धि तणा भंडाररे ॥६॥ प्रगट्या पंचम अरके महागुणी श्रीभि चू भवोदधि पाज रे ॥त्यांरै पाटै भारी माल जाणिये तीजेराय शशी गणिराजरे॥ म्हानै ॥७॥ एतो ज- यगणी तुर्यपट जय करो तसु पट मघवा सुखदायरे॥व लीपाट छठैमाणकभला संपति दिन दिन अधिक अ- थाहरे॥म्हानै॥८॥ओपै पटधारी मुनि पटगणी हिव- डा सदृश जेम जीणःरे ॥ गणपतिडाल शशी गुण सागरूं ज्यारो मुख पूनमको सो चंदरे ॥ म्हानै ॥९॥ करतां समरण पंचपरमेष्टिनो भागै संकट सर्व ततका- लरे॥जपतां अशुभ कर्म दूरै टलै थावै आनंद मंगल मालरे म्हानै॥ १० ॥ एहो महामंत्रसुधजे जपै त्या- री सायकरै सुरसायरे ॥कहै गुलाबचंद सुख पामि- ये वले विपतानै आवै कोयरे ॥ म्हानै ॥ ११ ॥

अथ स्तवनम् ।

राग कालंगडामें ।

मेरा प्रभू चरणां चित लग रहारी मेरा० (आं-कड़ी) मोह मिथ्या तकी नींद उछट गई ज्ञांन-उजेरा जग रह्यारी ॥ मेरा० ॥ १ ॥ स्वपर विचार धार सुध सरधा प्रवचन रंगे रंग रह्यारी ॥ मेरा० ॥ २ ॥ कुमति कदाग्रह छोड़ मोड़ मद रतनत्रय के संग रह्यारी ॥ मेरा० ॥ ३ ॥ आतम रूप भूप घट अंतर शुद्ध स्वरूपैं रमरह्यारी ॥ मेरा० ॥ ४ ॥ गुलाबचंद आनंद भयो अब सब दुख दूरे भग गयारी ॥ मेरा ॥ ५ ॥

राग भैरवी ।

चाल गज़ल की ।

मोतिया वेला चमेली दा वनाया सेरा । एचाल

आयो सरनैं राजेर मोये आधार तेरा (आ०) आगे तुम हमारे संग भव भवमें अनेक रंग अब तुम नाथ भय मैंहूं दास तेरा ॥ आयो० ॥ १ ॥ आपहो करमां रहित हमहैं करमों सहित कांटे गे

कर्म तभी होवेंगे जैसें तेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ मुझमें अनंत नांग करमां वरणसें छिपांन विन कारण कारज नहीं ताते ध्यांन तेरा ॥ आ० ॥ ३ ॥ सांचहै तिहारी वांण अहिंसा मैं धर्म मांन कुगुरु कुपंथ छांड़ लिया पंथ तेरा ॥ आ० ॥ ४ ॥ मिटतहै दुखों केदंध कटतहैं कर्म फंद कहै गुलाब अति आनंद नाम लेत तेरा ॥ आ० ॥ ५ ॥

ढाल

सहेल्यो मिल पूजन चालोनै गनगोर (एचाल)

प्रभूजी थांसुं प्रीति लगींजी महाराज (आंकड़ी) भ्रमण कीयो बहुकाल लगे अब सवही सुधरसी काज ॥ प्र० ॥ १ ॥ संजमधारी उग्रविहारी मिलिया छ भत्रो दधिपाजजी ॥ प्र० ॥ २ ॥ करम भरम वश बहु मद छाकियो नाहिं कीयो धरमनूं साज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ अब तुमसेती प्रीति लगाई आप गरीवनिवाज ॥ प्र० ॥ ४ ॥ ज्ञान दरसण निज है पर पुद्गल जाणलियो में आज ॥ प्र० ॥ ५ ॥ परपरणाति उचदे खेद तज भज निज भाव समाज ॥ प्र० ॥ ६ ॥ गुलाबचंद आनंद शरण में तुम त्रिभु-

भुवन शिरताज ॥ प्र० ॥ ७ ॥

पुनःस्तवनम्

डोलेरे जुवन मदमाती गुजरिया डोलेरे (ए चाल)

सुनोरे सुग्यानी जिया श्रीजिन वानी सुनेरे ए(आंकड़ी)थारीरे प्यारी अनादिकालकी ये कुमती दूनी अभिमानी ॥ सु० ॥ १ ॥ जो सुख चाहै अविचल अक्षय तो तू अब तज खोटी वानी ॥ सु० ॥ २ ॥ समझ कहा अब मांन सुगुरुका सुमति धार कर आतम ध्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तू है कौन मोह्या तू किन संग क्यूं खोया अफला भव प्राणी ॥ सु० ॥ ४ ॥ इम जाणी प्रभु सुमरण करतां कहै गुलाव पावै शिवरानी ॥ सु० ॥ ५ ॥

सुन सुनरी सखी हमारी मोय नेमपियानै विसारी (ए चाल)

तुम त्रिभुवन पति भगवाना अब किरपा मोपै त्याना । जल वचनामृत वरसाना ॥ तुम० ॥ १ ॥ इन करमूं संग लुभाया पुद्गल ले रूप वनाया मोह मद छकिया अनजाना ॥ तुम ० ॥ २ ॥ कुमती संग काल गमाया अब शरण तिहारै आया में वालक हूं नादाना ॥ तुम ० ॥ ३ ॥ नव तत्व

भेद सु जान्यूं जिन मेरे मन तू मान्यूं॥ कह गुलाव शशी हुलसाना ॥ तुम ० ॥ ४ ॥

सुविधि जिन स्तवनम् ।

मूंगा तोय ले भूंगी सजना (ए देशी)

मुक्ति सेहली का साहिब (ए आंकड़ी) तुम स्वेत वरण तनु सोहै सुर नर मोहै रे साहिब॥ सु० जल पय जैसें जानूं पुष्प चमेलीके साहिब ॥ मुक्ति ० ॥ १ ॥ सुबुधि भई तुम नामें शिवगति पामें रे साहिब अजर अमर सुख ज्यांमें अविचल ठामें रे साहिब ॥ मु० ॥ २॥ करता गरजी अरजी कीजे मरजी रे साहिब गुलाव शशी हरखायो गुन तुम गायोरे साहिब ॥ मुक्ति० ॥ ३ ॥

महाराजा पूछोंन जोगनका हाल (ए चाल)

महाराजा अरज सुनो सुखकार उतारो सही संसार सें पार ॥ १ ॥ श्रीजिनराज जगत हित-कार गुणी गुणधारी गुणोपमसार॥महा ०॥ २ ॥ भम्यो भवोदधि विच करमांके लार मिल्यो अब ये मानव अवतार ॥ महा० ॥ ३ ॥ दयालू दयानि-धि तुछो सिरकार कृपानाथ अपनूं विरुद सभाल॥

महा० ॥ ४ ॥ तेरो सरन है तेरो ही आधार कियो व्रतधारी सुगुरु अंगीकार ॥ महा० ॥ ५ ॥ जीव अजीवादि तत्व विचार समकित बोध तणां दातार ॥ महा० ॥ ६ ॥ मन वच तन शुभ योग उदार करत गुलाबशशी नमस्कार ॥ महा० ॥ ७ ॥

वकतूजीरे नीमड़ली लाड़ी नां पगला धोतीरे सैणांरी वाटां जोतीरे वकतूजी वाला सैण (एचाल)

जिनवरजी रे थांरारे चरणांरो मैछूं दासोरे तुम वचनामृतको प्यासोरे घणी खमां तुम वचनामृतको प्यासोरे जिनवरजी मोरा स्वांम ॥ १ ॥ जिनवरजीरे थांरी रे सेवासूं शिवगति पामेरे घणी खमां ए अजर अमर सुख ज्यांमें रे जिनवरजी मोरा ॥ स्वांम ॥ २ ॥ जिनवरजी रे ये भवसागर सेती पार उतारोरे तुम अपनूं बिड़द संभारोरे घणीखमां ए वीनतड़ी अवधारोरे जिनवरजी मोरा स्वांम० ॥३॥ जिनवरजीरे थांराहो दरसण पे जाउं वारी रे घणीखमां तुम सूरतनी बलिहारी रे तुम मुद्रा मोहनगारी रे जिनवरजी मोरा स्वांम० ॥ ४ ॥ जिनवरजी रे चूंप धरीनें सुगुरु तुम गुण गावेरे घणी खमां तेरस-

नां सहस वणावैरे ते तोही पारन पावैरे जिनवर-जी मोरा स्वांम० ॥ ५ ॥ जिनवरजीरे थारा रे गु-ण गावतां मन हरखायोरे घणी खमां निज गुण से-ती लय ल्यायोरे कहै गुलावशशी हुलसायो रे जि-नवरजी मोरा स्वांम० ॥ ६ ॥

राग ठुमरी

तुमसे ज्यो प्रीतलगी सो खरी जिन नांहि करी उनै नांहि करीरे (एआंकडी) सब दुख भं-जन जन मन रंजन मंजन चेतन ध्यान धरीरे तुम ॥ १ ॥ सुखके दाता त्रिभुवन त्राता शाता जग जस सिद्धि वरीरे ॥ तुम० ॥ २ ॥ तन मन वच-न जचेन भज आतम म्हातम प्रभु संसार तरीरे ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तुम नांमै शिव संपति पामें ज्या-में कोई नहिं वात टरीरे॥तुम०॥४॥गुलावचंद आन-द हद पायो धन्य दिवश धन एह घडीरे॥ तुम०॥ ५॥

पुनः महावीरस्तवनम् ।

कडीवेलकी कडी तूंमडी सब तीरथकर आईरे (एचाल)

आज आनंद बधाई थाई आज आनंद ब-धाई रे (ए आंकडी) श्रीवर्धमान जगतके स्वामी त्रिशलानंद सुहायो रे। ओलख स्वपरगुन नव तत्व सासन तेरो पायोरे ॥ आज आनंद० ॥ १ ॥ सुनी तुम बांणी में सत जाणी मनमांहि हुलसायोरे ॥ तुम्ह आणा में धरम तिहारो आदि अन्तमें वायोरे ॥ आज० ॥ २ ॥ सुध करणी करणी अघ हरणी तरणी भव जल मांह्योरे ॥ द्वादश व्रत रंज्यो दुख भंज्यो सुगुरु तणों सुपसायोरे ॥ आज० ॥ ३ ॥ पद अंगुष्ठ थकी इक क्षणमें सुरगिर तैं कंपायोरे ॥ वीर नहीं महावीर जगतमें एहो नाम कहायोरे ॥ आज० ॥ ४ ॥ छांड अनेरो धाऱ्यो तेरो मारग महा सुखदायोरे ॥ गुलाबचंद कहै हरख घणोरो सरणै तेरे आयोरे ॥ आज० ॥ ५ ॥

जिन सुनिये अरज हमारी आयो शरण तुमारी रे जिन सुनिये (एआंकडी) करम विडारी टारी तम अघसारी वारी प्रगट कियो उजियारी निरमल वांनी गुनखानी बरसानी पानी जैसें उमग घटा करिरे ॥ जिन सुनिये० ॥ १ ॥ चपल स्वभावी तावी चमकत बिजुरी स्याद वाद सुखकारी ॥ दरस निहारी

केइ चरन सुधारी जेइ थावै उग्रविहारी रे ॥ जिन०॥२॥ अधिक बधाई थाई सासनसूं तेरी पाई कुमति कुदेव बिसारी भादो धुर एकादसी कहत गुलाब शशि पायो हर्ष अपारी रे ॥ जिन सु० ॥ ३ ॥

रागआसावरी ।

भविका जिन आणां धर्म धारो येतो मानों कह्यो हमारो रे ॥ भविका जिन० (एआंकड़ी) श्रीतीरथ पति धर्मधुरंधर जगवत्सल सुखकारो । अनंत ज्ञान दरशन गुण चारित्र तसूं कीजे नमस्कारो रे ॥ भविका जिन० ॥ १ ॥ सरध्या ज्ञानानंत चारित तप मोक्ष मार्ग ए च्यारो ॥ श्रीजिन आणां में चिहुं मिलिया उत्तराधेन अधिकारो रे ॥ भवि० ॥ २ ॥ संबर नें वलि निरजरारे धर्म ए दोय प्रकारो ॥ एभल रीत आराध्यां चेतन पामें भवनों पारोरे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ पंचमहाब्रत साधू केरा श्रावक ना ब्रतवारो ॥ जिन आणामें ए बिहुं आया अवरित रहगइ न्यारोरे ॥ भवि० ॥ ४ ॥ सर्व ब्रतधारी संजाति कहिये अबिरत असंजय धारो ॥ बरता बरती समणो पा संगते

व्रत जिन आंण मझारोरे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ मुंज आणां में म्हांरो धर्मछै आचारंग अधिकारो ॥ चर्म प्रमेश्वर बीर जिनेश्वर भाषगया तंत सारो रे ॥ भवि० ॥ ६ ॥ तेह धर्मनां दोय भेदछै दसवें कालिक मंझारो ॥ अहिन्सा है जिण किरतब मैं तहां संजम तपसारोरे ॥ भवि० ॥७॥ सुगरा सीस पण थेहिज दीनी आगम रैस बिचारो ॥ आलस मति करज्यो आज्ञा मैं उद्यम आज्ञा वारोरे ॥ भवि० ॥ ८ ॥ करन करावन वालि अनुमोदन तीन भेद ये सारो ॥ श्रीजिन आज्ञा सिरधारी जे तब होवे निस्तारो रे ॥ भवि० ॥ ९ ॥ निरवद कारज मांही आज्ञा जिनजी दे इकधारो ॥ सावद मांही आज्ञा न जाणूं नहिं संदेह लगारोरे ॥भविका० ॥ १० केइ आज्ञामें पाप बतावै धरम जिनआज्ञा वारो ॥ दोन्युं वातां अशुद्ध प्ररूपे ते किम पामें भवपारो रे ॥भविका०॥११॥ श्रीजिन मतका साधू बाजै भाषै बिना बिचारो ॥ आज्ञा मांही पाप बतावै त्यां रे महा अंधियारोरे॥भविका०॥ १२ ॥पूरी समझ पड़े नहीं तो शुद्ध जपो नवकारो ॥ गुणवन्तों का गुण गायांसूं अशुभ कर्मसब टारोरे ॥भविका०

॥ १३ ॥ गुणगावो पांचों पद केरा इणथी कर्म-
बिड़ारो ॥ आज्ञा बाहर धर्म कहीने पर भव मतना
बिगारो रे ॥ भविका० ॥ १४ ॥ उगणीसे चउपन
साखे सुक्लाष्टमी भौमवारो ॥ गुलाबचंद आनंद अति
पायो श्रीजयनगर मझारो रे ॥ भविका० ॥ १५ ॥

राग विहाग में ।

तजो तुम कुमती जनका संग (एआंकडी) कुम-
जनको संगतजीने सुमती संग प्रसंग । जिन वच-
रचना सुध धारी पालो आंण अभंग ॥ त० ॥१॥
किंत रतन्न ज़तन से राखो जैसे मजीठ नूं रंग ॥
साधूजन कों नित वंदो करत करमसे जंग ॥
॥ २ ॥ यह संसार सुपनकी माया जैसे रंग
ग ॥ विखरजात बादर ज्यूं छिन में ऐसो है यह
ा ॥ ते० ॥ ३ ॥ भूंटी काया क्यूँ मुरझाया आय
ाया ढंग ॥ चेतो चेतन सुकृत करल्यो वक्त रह्या
ह तंग ॥ त० ॥ ४ ॥ श्रीजिनराज जगत के स्वामी
ान निर्मल जिम गंग ॥ गुलाबचंद भल जाण तणों
चित आनंद हरख उमंग ॥ तजो० ॥ ५ ॥

राग उझाझ में ।

ए सुध मग सांचो भूल मतजाय (एआंकडी)
दान सील तप भाव ये च्यारां शिवपुर केरोराह ॥
झूटो पंथ छांड अब प्राणी ज्यों आतम सुखचाह ॥
सुध० ॥ १ ॥ दांन सुपातर दोहिले रे भाख्योश्री-
जिनराय ॥ चित वित पात्र तीन सुध मिलिया
मन वांछित फलपाय ॥ सुध० ॥ २ ॥ चित सुध दा-
ता नूं भलोरे वित सुध वस्तु कहाय ॥ पात्र सुसाधू
जानियेरे जे नहणौं षट्काय ॥ सुध० ॥ ३ ॥ देतां
दाता दांन सुपातर संचित कर्म हटाय ॥ उत्कृष्ठो रस
आवियांरे तीर्थंकर पदपाय ॥ सुध० ॥ ४ ॥ चउथै
ठाणे ओखियो रे पंचम उदे से मांय ॥कुपात्रते कुक्षेत्र
छेरे वोयां निरफल थाय ॥ सुध० ॥ ५ ॥ असंजती
अब्रतीनेरे सूत्र भगवती मांहि ॥ सचित अचित फासू
अफासू दीधां पाप वँधाय ॥ सुध० ॥ ६ ॥ आनँद
श्रावक लियो अविग्रह उपासक दशा कहाय ॥ अन्य
तिथी नें आजथीरे देवूँ दिवावूं नांहि ॥ सुध० ॥ ७ ॥
मृगा लोढाने देखीनेंरे गौतम जिनपै आय ॥ पूछै
स्यूँ दीधो ये पूर्वं तेहना ये फलपाय ॥ सुध० ॥ ८ ॥

प्रसंसे सावद दांनने रे घातीक ते षट्काय ॥ सुगडांगे ग्यारम अध्ययने वीसमी गाथा मांहि ॥ सुध० ॥ ६ ॥ पुनः पंचम अध्यनमेंरे वतीसमी जेगाह । देतां लेतां सावज दानूं मुनिन कहै हांनाह । सुध० ॥ १० ॥ भ्रमण हेतु संसारनूंरे गृहस्थ भणी जेदान ॥ देवोत्याग्यो मुनिवरूरे सुयगड़ा अंगैजाण ॥ सुध० ॥ ११ ॥ वलि प्राछित चउमास नूं रे अनुमोद्यां सु आय। निसीथप नरमें उद्देसै श्री जिन भाष्यो ताहि ॥ सुध० ॥ १२ ॥ श्रावक नूँ जे खाणू पीणूँ अव्रतमे छै एह ॥ सूत्र सुगडांगे दूजे श्रुतस्कंधे द्वितीय अध्ययन विषेह ॥ सुध० ॥ १३ ॥ भाव सस्त्र अव्रत कह्योरे ठाणांग दशमें ठांण ॥ तेह सस्त्र तीखो करियांथी धर्म पुन्य मतजाण ॥ सुध० ॥ १४ ॥ खाणां पीणां पहरणारे त्यागा थी हुय धर्म ॥ भोग्यां भोगायां वलि अनुमोद्यां बँधे अशुभ अघकर्म ॥ सुध० ॥ १५ ॥ साता दीयां साताहुवै रे ये अन्य तिरथी कहंत । सुयगडांग श्रीजिनभाख्यो ते सुणज्यो विरतंत ॥ सुध० ॥ १६ ॥ न्यारो आरज मार्गथीरे अलगो समाधिथी जाण ॥ धर्मतणी निंदानूँ करता जेह बंधे इमबांण ॥ सुध० ॥ १७ ॥ अल्पसुखारे वास्तेरे बहुतरो हारणहार । अमोखरो कार-

णा अंछेरे भाख्यो श्रीजगतार॥ सुध० ॥ १८ ॥ लोह वाणिक जिम झूरसीरे तेह परू पणाहार ॥ तिणसूं जिन मग उलखोरे ज्यूँहोवै निस्तार ॥ सुध० ॥ १६ ॥ पात्र कुपात्रें आंतरोरे सरिखो फल नहिं थाय ॥ आम भरोसे वायां धतूरो आम किहांथी खाय ॥ सुध० ॥२०॥ दांन सुपात्रें दीजियेरे देकरमतप उमाय । गुलाव कहै धन तेनरारे सिध गतिमां ते जाय । सुध० । २१ ।

आज नंदन वन जोगी आयो जोगीको रूपसवायो हे माय आज नं० ॥ एदेशी ॥

श्रै संजम जीतव मत कोई वंछो वरज्यो श्री-जिनरायोरे लो (एआंकडी)जीवणूं मरणूंनांहि वं-छणूं ठाणांग दशम मांहिरे लो ॥ पुनःसुगडांगदस अध्ययनें गाथा चौवीसमी ताह्योरे लो ॥ श्रै० ॥ १ ॥ अण आदर देतां मुनि विचरै श्रीसुगडांगे मांयोरे लो असँजम जीतवना अरथीते बाल अज्ञानी कहायोरे लो ॥ श्रै० ॥ २ ॥ सँजम जीतव कह्यो दोहिलो असँजम जीतव नांयोरे लो ॥ वार अ-नंत पायो भव भव में गरज सरी नहिं कायोरेलो ॥ श्रै० ॥ ३ ॥ संसारिक जीवानूं जीवणूं वंछ्या धर्म-

न थायोरे लो ॥ रागी देख्यां राग ऊपजै द्वेसीसें द्वेष सवायोरे लो श्रै० ॥ ४ ॥ वंछै मरणूं जीवणूंरे राग द्वेस कहवायोरे लो ॥ राग ते दशमूं द्वेश ग्यारमूं भगवंत पाप वतायोरे ॥ श्रै० ॥ ५ ॥ मिथिला नगरी अगन सूं बलती देखि नमी ऋषरायोरे लो ॥ सामू न जोयो करुणां न आंणी उत्तराध्ययनै मायों रे लो ॥ श्रै० ॥ ६ ॥ सूत्र निसीथ द्वादश उद्देसे पाठ विखें ये वायोरे लो ॥ त्रस जीव देखी अनुकंपा कर वांधै वंधावै सरायोरे लो ॥ श्रै० ॥ ७ ॥ अथवा वंधिया देख जीवां प्रतें करुणां मन मुनिल्यायो रे लो ॥ छोडै छुडावै बलि अनुमोदै तो चोमासी चरित जायो रेलो ॥ श्रै० ॥ ८ ॥ चुलनी प्रिया श्रावक मोटो पोसामें सुखदायोरे लो ॥ पुत्र तीन मुख आगल मरता देखी नाहि छुडायोरे लो ॥ श्रै० ॥ ९ ॥ माता मरती देख पोसामें उठ्यो छुडावण कामोरे लो ॥ भांगो पोसो वरत नियम सब उपासक दशामें आमूंरे लो ॥ श्रै० ॥ १० ॥ चंपा नगर तणां व्योपारी जहाज भर समुद्रमां जावेरे लो ॥ एक देव तब करण परीक्षा ते अवसर तिहा आवैरेलो ॥ श्रै० ॥ ११ ॥ अरणक

श्रावक बैठो तिणमें देव कही समझायोरे लो ॥ लोक सहित ये नाव डुबोऊं मान हमारी वायोरे लो॥ श्रै० ॥ १२ ॥ डिगायो डिगियो नाहीं अरणक करुणां मोहन ल्यायोरे लो ॥ उपसर्ग दूर कियो तब निर्जर सुरेंद्र तास सरायोरे लो ॥ श्रै० ॥ ॥ १३ ॥ इत्यादिक बहु सूत्रै आख्यो स्नेह राग दुखदायोरे लो ॥ तिणसें राग द्वेष तज चेतन ज्यों शिव सुखनी चायोरे लो ॥ श्रै० ए संसार अगाध थकी तिर वंछित तिरणू परायोरे लो ॥ गुलाब कहै धन ते नर जाणों रागरु द्वेप खपायोरे लो ॥ १५ ॥

आवत मेरी गलियनमें गिरिधारी (ए चाल)

करो तुम दया धरम सुखकारी यातैं जलदि होय-निस्तारी ॥(एआंकडी)पृथिवी अप तेज वायु बनस्पति त्रसजीव अनंत अपारी॥ये षटकाय हणूंमत कोई जिन आगम अधिकारी ॥ करो० ॥ १॥ कहि पर पास हणावो मतिने हणतां हुयां अतिसारी। भलो मतजांण पिछाण मरमये त्रहु योगै सुविचारी। करो- ॥ २ ॥ पंचकाय में जीव असंख्या भाख्या श्रीजग तारी॥ संख्य असंख्य अनंत वनस्पाति संका में आणु लगारी ॥ क० ॥ ३ ॥ गौतम पूछ्यो पंचम अंगे

पृथवी हाथ मभ्कारी । लेतां वेदन कितनी होवै जिन कह दृष्टांत उदारी । क० ॥ ४॥ एक पुरुष कोई जन्मनूं आंधो पगहीण त्तीण कायासारी ॥ जन्मनूं बहिरो जन्मनूं गूंगो तनमें रोग अपारी ॥ क० ॥ ५ ॥ तरुण पुरुष तसु खडग भाले कर छेदै भेदै क्रोधधारी ॥ वेदन होवै अंध पुरुषने छेद्यां भेद्यां तिण वारी ॥ क० ॥ ६ ॥ तिणसूं अधिक कष्ट पृथवीने लेतां हस्त मभ्कारी ॥ इम थावर पांचाकू वेदन जोवो आंख उघारी ॥क० ॥ ७ ॥ निगोद जमींकंद बनस्पती का सुनिये येह अधिकारी ॥ अग्र सुई पे आवे जिण मैं श्रेण असंख्य कह्यारी ॥ क० ॥ ८ ॥ येक इक श्रेणमें प्रतर असंख्या प्रतर येक मभ्कारी ॥ गोला असंख हैं येक इक गोलें शरीर असंख्य रह्यारी ॥ क० ॥ ९ ॥ येक शरीर में जीव अनंता कहित न आवे पारी ॥ इम जाणी हिन्सा नहि करिए जिन धर्म मर्म विचारी ॥ क० ॥ १० ॥ धुर आश्रव धुर पापनों स्थानक दुरगति दुःख दातारी ॥ आरंभ छांडि दया दिल धरिए जिम पामो भव पारी ॥ क०॥ ११ ॥ हिन्सा किया मैं धर्म न किमपी आगम मांहि सुनारी ॥ पंचेद्री पोख्यां पुन्य नो नांहि

संचारी ॥ १२ ॥ देवल पड़िमा करे करावे प्रथवी काय बिडारी॥ कह्यो अर्हत अबोध नों कारण धुर अगे जगतारी ॥ क० ॥ १३ ॥ जंतू हणों धर्म हेत मंदमति दोषन गिणे लिगारी ॥ येह अनारज बचन कह्यो जिन आचारंग संभारी ॥ क० ॥ १४ ॥ इम जाणी पर्म धर्म ए करिये अहिन्सा सुखकारी ॥ गु-लाबचंद कहै धन्य सुध साधू चरन कमल बलिहारी ॥ क ॥ १५ ॥

अथ द्वादस व्रतालोयन ॥

दोहा ।

श्री अरिहंतादिक सहु पाचूं पद सुखकार ॥
मन वचनें काया करी करुं तसू नमस्कार ॥ १ ॥

अरिहंत सिद्ध साहू बले केवली भाषित धर्म ॥
ए चारूं शरणां थकी पामें शिव सुख पर्म ॥ २ ॥

श्रावकव्रतधारक भला हितकारक बले जेह ॥
केवली भाषित धर्ममें राखे नहिं संदेह ॥ ३ ॥

लिया बरत पाले बले श्रीजिनमतिसूं प्यार ॥
उपसग थी चल चित नहीं लोपेनहीं गुरुकार ॥ ४ ॥

कर्म योग थी किणा समे लागे दोख तिवार ॥
गुरु मुख प्राश्चित लेइ कर डंडकरे अंगीकार ॥ ५ ॥

आलवणां सूवे मने करे हमेसां सार ॥
पक्खी चोमासी दीने चूके नहीं लिगार ॥ ६ ॥

पर्व संवत्सर मोटको ते दिन तो अवस्यमेव ॥
चोभियारी उपवास करि धर्म ध्यान से नेह ॥ ७ ॥

चोरासी लख योनि सें बारं बार खमाय ॥
बिसेस काम पडियो हुवे तसू नाम लेवणो ताय ॥८॥

आराधक पद पाविया रुले नहीं बहुकाल ॥
मोटो लाभ इण सम नहीं जिन आगम में निहाल॥९॥

ते बारे बरतां तणी करूं आलंवणा सार ॥
चित्त लगाइ सांभल्या पामें भवनो पार ॥ १० ॥

ढाल ।

बेदक जग बीरला (एदशी)

श्री जिन धर्म मांहीं जेरसियां त्यारे देव गुरू दिल

वसियारे श्रावक गुण-रसिया ॥ हाड़ बले जेह हाड़-
नी मींजी धर्मथकी रहे भीजीरे ॥ श्रा० ॥ १ ॥ कुगुरु
कुदेव नी वांछै न सेवा धीर वीर गुन गेहवारे ॥ श्रा०
धर्म में दृढ रहे नित मेवा अडिग है सुर गिर जे-
हवारे ॥ श्रा० ॥ २ ॥ व्रत पच खाण सुधा जे पा-
ले निज आतम उजवाले रे ॥ श्रा० अतिक्रम
व्यातिक्रम नाहिं संभाले अतिचार अणाचार टा-
लेरे ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ कर्म जोग दोष लागे किंवा
रे डंड करे अंगीकाररे ॥ श्रा० ॥ बेहु टक आलंबणा
लेवै पक्खी दिन तो अवस्य मेवरे ॥ श्रा० ॥ ४ ॥
चोमासी नहिं चूके लिगार सुध परिणाम सुवि-
चाररे ॥ पर्व संवत्सर आवे जिवांरे पोषद अष्ट प-
हुर धाररे ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ ध्यान करी शुभ भावना
भावे लख चोरासी योनि खमावे परमाद छांडी नि-
ज धे ध्यावे आराधक पद पावै रे ॥ श्रा० ॥ ६ ॥
प्रति संसारी फुन हलुकरमी जगवलभ प्रिय धरमी
व्रतालोयण किम करत उदार आखूते अधिकारे रे ॥
॥ श्रा० ॥ ७ ॥ सम कित रतन जतन थी राखै न
हुवे दुख शिव सुख चाखैरे ॥ जिम कर्दम थी पंक
ज न्यारो वसे तिम संसार मझारोरे ॥ श्रा० ॥ ८ ॥

त्तूखे परिणाम वसे घरवासा राखे छांड़णारी आ-सारे ॥ इण भव पर भवमें सुख पावे ढाल प्रथम ए गावेंर ॥ ६ ॥

दोहा ।

रतन त्रय में राषिया जिन आगम ना जान ॥
धार अर्थ भंडार भरि अडिग है मेरु समान ॥ १ ॥
संका कंखा दूर करि भय सब दूर निवार ॥
राखैजिन वच आसता प्रतत्त प्रमाण विचार॥ २ ॥

अरिहंत मोटकाए (एदेशी)

समकित सुध मन आदरुए अरिहंतछे मुज देवके गाउं गुन जेहनां ए सांचे मन करु सेव समकित आदरुंए ॥ १ ॥ (एआंकड़ी) ते कर्म रूप अरिजन हन्यांए रोकयाछे पापनां द्वारके ॥ राग द्वेष खप करिए निज गुन प्रगटउदारके ॥ गा० ॥ २ ॥ लोकालोकनी वस्तु नाए जांण रह्या सर्व भाव के ॥ जिन नाम करम थी ए अतिशय अधिक अ-थायके । गा० ॥ ३ ॥ नर सुर इन्द्रादि क सहूए नरपातिसा रे सेवके कहू गुन किहांलगैए मोटा प्रभू देवापति देवके

सुध साधू गुरु म्हांयरे ए पंच सुमति में हुसि यार के ॥ महा बय पंच पालता ए तीन गुपति मन धारके एहवा गुरु म्हायरे ए ॥ ५ ॥ च्यार कषाय निवार नें ए पाले छे ते रे बोल के ॥ परि सह सहिण में ए सुर गिर जेम अडोल के ॥ गा०॥ ॥ ६ ॥ धर्म जिनेश्वर भाखियो ए अहिंसा सुख- कारके ॥ वलिजिन आंणमें ए न होवे पाप लिगार के धर्म सुध आदरूं ए ॥ ७ ॥ बरत में धर्म जाणूं खरो ए अबिरत अनरथ मूल के ॥ दया अनुकंपा भली ए धर्म थी छे अनुकूल के ॥ ८ ॥ करुणा मोह स्नेहनी ए कीया पाप सुजान के ॥ अबिरत सेवाइयां ए अधर्म क़ह्यो जग भान के ॥ ध० ॥ ६ ॥ कुगुरू कुदेव कुधर्म न ए वो सराउ इण बारके ॥ यथा सक्ति आदरूं ए ब्रत पचखाण उदार के ॥ ध० ॥ १० ॥ गुण गाऊं गुणवंतना ए सुध जपूं नवकारके ॥ दूजी ढाल भाखता ए सुख साता थई छे अपारके ॥ ध० ॥ ११ ॥

दोहा ।

समकित सांची एहवी पाई इण भव माहिं ॥
ते भव २ नहिं वीसरुं सुगण गुणे हित ल्याय ॥ १ ॥

कर्म योग कुसंग थी दोष लग्यो हुवे ताहि ॥
मन वच काया थी करूं आलंवणा सुखदाय ॥ २ ॥

ढाल ।

चोपाईनी देशी ।

श्री जिनवर वचन उदार ॥ सांचा सरध्यान हुवे किणा बार ॥ तसु राखी नहीं परतीत ॥ रुचि या नहीं हुवे सुवदीत ॥ १ ॥ अक्षर दीर्घ लघु बोलतां ॥ आलस करि अर्थ खोलतां ॥ पद हीण कह्यां हुवे कोय ॥ लेउं मिच्छामी दोकडं सोय ॥ २ ॥ ज्ञाननों बिनय नहिं कीनो ॥ मिथ्या वचन सांचो मान लीनो ॥ कीधी ज्ञान आसातना कोय ॥ थावो मिथ्या मींदोकडं मोय ॥ ३ ॥ भाजन बिन ज्ञान भणायो ॥ सांचो अरथ झूंठो दरसायो ॥ सुत्र विरुध परूपणां कीधी ॥ लेऊं आलंवणा तसू सीधी ॥ ४ ॥ पाखंडिया रा वचन सुहाया ॥ सुत्रामें गपोड़ा बताया ॥ संका पाड़ी हुवे हजार ॥ लेऊं मीच्छा मीदोकडं सार ॥ ५ ॥ व्याख्यानादि कम्हांय ॥ सुणतां रे दीनी अंतराय ॥ क्रोध वस थी विविध प्रकारे ॥ भाषा बोली बिना विचारे ॥ ६ ॥

कुगुरु कुदेवां री तांगा ॥ परसंसा करी हुवे जांगा ॥
वले सासता परि चा में रक्त॥ करी हुवे तिहारी
भक्तः ॥ ७ ॥ जीवा जीव अजीव नें जीव ॥ धर्म
अधर्मा धर्म अतीव ॥ साहु असाहु साहुनें साध ॥
मारग कुमार्ग इम हिज लाध ॥ ८ ॥ मोक्ष वाला-
नें अमोक्ष गयो ॥ हांसी स्वपर वसथी कहियो ॥
ए सर्व बोलांरो सोय ॥ थावो मिछामी दोकडं मोय
॥ ६ ॥ पंच प्रमोष्टिनां गुन गाउं ॥ सांची सरधूं
दूजाने सरधाउं ॥ म्हारे शिव सुखनीं हद चाय ॥ तिहां
जावरा रो करूं छू उपाय ॥ १० ॥ मोह कर्म पतलो
नित करस्यूं ॥ भव सागर पार उतरस्यूं ॥ तीजीढाल
कहि अति चंग ॥ थयो आनंद हरख उमंग ॥ ११ ॥

दोहा ।

पंच मगा व्रत अति भला गुगा व्रत त्रगा अवधार ॥
छउ सिख्या ए द्वादसूं व्रत म्हारे सुख कार ॥ १ ॥
लेउं तस आलोयगा आराधक पद हेत ॥
लख चौरासी नहीं रूलूं सूत्रतगों संकेत ॥ २ ॥

ढाल ।

किरपगा दीन अनाथंग (मुदेशी) ।

पहिलो अणुव्रत एमए स्थूल जीव मारणारा नेमए ॥ बे इंद्रियादिक न जाणए बिन अपराधीरा पचखाणए ॥ १ ॥ मरियाद उपरांते तेहए चोखा पाल्यां न हुवे जेहए ॥ अतिक्रम व्यतिक्रम धार ए अतीचार अने अणाचारए ॥ २ ॥ त्रस जीवारे बाध्या बंधए कस्यिा हुवे दुखना फंदए ॥ अतिभार घाल्या हुवे ताहिए चामडी छेदन किया जाहिए ॥ ३ ॥ भात पाणी नाव छेवा भाणीए दीधा हुवे दिवसे कीणीए देवरु धर्म अर्थ जाणए हणिया होवे तस पाणए ॥ ४ ॥ प्रथवी अपति उवाउ कायए बनसपति एथावर कायए ॥ देव गुरु धर्म अर्थ मारए धर्म सरध्यो हुवे किणा बाररे ॥ ५ ॥ निज बस परबस जोयए परना उपदेस थी होयए छउ कायारा घमसाणए कीधा होवे जांणा जांणए ॥ ६ ॥ ए सब बोलांरो मोयए त्रबदे २ अब लोयए ॥ थावो मिछामी दोकडं तासए आलोउं निन्दु जासए ॥ ७ ॥ स्त्री पुरष नो ब्यावए तिण बेल्यां कह्यो अन्याय ए ॥ भैंस गाय बाल्यादिकनो दूधए थोडो घणों कह्यो असूधए ॥ ८ ॥ उघाडी भी भोम पाणए हाट हवेली बाग दुकान ए ॥ लेतां बेचतां भाखी कुंडए कह्यो लोभ तणे बस बूभए ॥ ९ ॥ तिणसूं मिथ्या दुक्कत लेयए

पाप ठांणा दुर करेह ए ॥ इच्छा रुंधणा सारए देउं अशुभ कर्म सब टारए ॥ १० ॥ चौथी ढाल रसा-लए सुंणाता थावे मंगल मालए ॥ धर्म कियां दुख दूरए होवे सुखमैं सुख भरपूरए ॥ ११ ॥

दोहा

श्रीजिन धर्म प्रसादथी कुसल हूवे दुख जाय ॥
रिधि सम्पति पावे घणीं वांछित कारजथाय ॥ १ ॥

अडिग रहुं ते धर्ममैं पालूं बरत रसाल ॥
कर्म जोग किण अवसरे भंग यई हुवे पाल ॥ २ ॥

लेउं आलवणा सही रही धर्म मैं लीन ॥
गुरु सिक्षा हिरदय धरी थाउँ अती प्रवीन ॥ ३ ॥

ढाल

सल्यकोई मति राखज्यो (एदेसी)

बरता लोयण मैं करूं सुध परिणामें होई रे भोला बालक नीपरे म्हां री आतमां लेउं धो ई रे ॥ ब० (ए आंकडी) ॥१॥ आल कूंटा किण जीवरे दियां हुवे किण वारोरे ॥ छानी बात परकासनें कीयो होवे

किणरो विगारोरे ॥ लेउं मिच्छामीदोकड़ंतेहनो ॥ २ ॥ लेख झूठा लिखाया हुवे परदाह दीधी हुवे ताह्यो रे ॥ राज पंचा मुख आगले झूटी गवाई कहवायो रे ॥ ले० ॥ ३ ॥ थांपण मूंसा जो किया मिरषा बोली हुवे बायेरे ॥ हांस किलोलादिक करी पुनः लोभ तणेवस आयेरे ॥ ले० ॥ ४ ॥ चोर तणीं पर चोरियां तालो तोड बदीतोरे ॥ पड़ कूंचियादि कारणे चोरसू करी हुवे प्रीतोरे ॥ ले० ॥ ५ ॥ साजदीयो हुवे तेहने बले राज बिरुध ब्योपारोरे ॥ अदल बदल कोई बस्तु न करी हुवे किणबारोरे ॥ ले० ॥ ६ ॥ चोर्या वस्तु दिखायने बस्तु निकमी आपीरे ॥ लोभ तणें बस आयने झूठा नापणां नापीरे ॥ ले० ॥ ७ ॥ देव मनुष तिरयंच थी देवगणां संग होईरे ॥ मनुषणी अने तिरयंचणी खोटी निजरांजोई रे ॥ ले० ॥ ८ ॥ मरियाद उपरान्ति तेहसूं कुसील सेयो रक्त होईरे ॥ हस्त करमांदिक जोगसूं पाप लागो हुवे कोईरे ॥ ले० ॥ ९ ॥ बिन परणी अस्त्री थकी कुसीलादिक अभिलाखीरे ॥ तीब्र परिणामें सेविया माठी निजरां झांकीरे ॥ ले० ॥ १० ॥ खेतू बथू हिरण

सुवर्णनैं धन धानादिक म्हांयोरे ॥ कुम्मी धात द्व चोपद घणां मरियाद उपरांति वधायो रे ॥ ले० ॥ ११ ॥ पंचमी ढाल कही भली पंचाणू व्रत अधिकारो रे ॥ आलवणां करतां थकी पायो सुख अपारो रे ॥ ले० ॥ १२ ॥

दोहा

गुण वर्त छै त्रण म्हांयरे यथासक्ति परिमाण ॥
दोषलाग्यो हुवे तेहमैं आलंवण तसू जाण ॥ १ ॥

तम्बोली नां पान जिम बारंबार संभाल ॥
करतां आतम ऊजली प्रगट थाय गुणमाल ॥ २ ॥

चौसिक्षा सिक्षा समा आदरिया गुरु पास ॥
दोषण लाग्यो किणसमें आलवणां करूं तास ॥ ३ ॥

ढाल

भोला भर्म मै क्यों भम्यो (ए देसी)

दिसि मरियाद थकी कदा आगे जइ पाप कीनारे । उंची नीची तिरछी दिसि मझे कम वेसी गिण लीनारे ॥ लेउं मिछामी दोकडं तेहनो ॥ १ ॥

सचित अचित दरब जीमियां गहिणां बसत्र स-
वायो रे ॥ एक अनेक बेल्यां कोई अधिको भोग
में आयोरे ॥ ले० ॥ २ ॥ पंदरा करमां धान से-
विया बले अनेरा पासे रे ॥ मन बचने काया करी
अनुमोद्यां हुवे जासेरे ॥ ले० ॥ ३ ॥ कथा क-
ही कंद्रूपणी भंड कुचेष्टा कीधीरे ॥ बिन अरथे पा-
पारंभ किया मांस भख्यां मद पीधीरे ॥ ले० ॥ ४ ॥
सामायक में किरा समें हांस कुतुल अथायो रे॥ बिन
जायां बिन पूंजियां तन चंचलता सवायोरे ॥ ले०
॥ ५ ॥ आयां बिगर पारी हुवे भासा सावज बोली
रे ॥ संसारिक कारज मझे मनन्नी लगाई ओलीरे॥
॥ ले० ॥ ६ ॥ सामायक मरियाद थी ओछी करी
होवे ताह्यो रे ॥ देव गुरु धर्म तीनन्नो अविनामें
चित्त ल्यायो रे ॥ ले० ॥ ७ ॥ देसा वगासी जे
बरतकै ते नहीं सेयो सेवायोरे ॥ बस्तु आमी सामी
बारली आपो पुदगल सब्दं जणायो रे ॥ ले० ॥ ८ ॥
पोषद करतां किरा समें सेया सावज कामां रे ॥ बिन
जोया बिन पूंजियां फिरिया आमां न सामां रे ॥ ले०
॥ ९ ॥ आचार पास अने भोमका उपग्रण से ज्यां-
स थारो रे ॥पडिलेहणा न कीधी हुवे निन्दा बिकथाथी

प्यारो रे ॥ ले ॥ १० ॥ सुध साधू निग्रंथनें अप्रिय बचन ज भाख्यो रे ॥ हेला निन्दा कीनी तेहनी आल अछतो दाख्योरे ॥ ले० ॥ ११ ॥ चौदे प्रकार नो दानजो असुजतादिक दीधोरे ॥ स्व परबस किण अवसरे साधूरे काज कीधोरे ॥ ले० ॥ १२ ॥ मेल फासू वस्तु सचितपर वले सचित थी ढांकेरे ॥ अण गमतो आहार साधूनें मांडाणी करि नाख्योरे ॥ले० ॥ १३ ॥ भांणे बैस पुनि राजनी भावना नहीं भाई रे ॥ दान आलस थी नाहिं दियो सुध मिलियां जोग वाई रे ॥ ले० ॥ १४ ॥ एद्धादस बरतां तणीं आलंबणा करि सीधी रे ॥ जिन सिध साधू साखथी आतम निरमल कीधी रे ॥ ए छटी ढाल कही भली ॥ ले० ॥ १५ ॥

दोहा

अबिरत थी ग्रहस्थाश्रमे अनेक पाप उत्पन्न ॥
आरंभ परिग्रह छांडिस्यूं ते दिन थासे धन्य ॥ १ ॥

भव अनंतामें किया इण संसार मझार ॥
स्वपर अरथ कुकर्म अति तसु मिथ्या दुकड सार ॥२॥
जीव असंजाति तेहनो जीवतबंछ्ये होय ॥

मरणो पण बांध्यों हुवे मिथ्या दुकृत मोय ॥ ३ ॥

एह लोक पर लोकनी करि आसा वंछा जेह ॥
पुनि निज मरणोंजीवणो तसू मिछा दोकडं लेह ॥४॥

अभिलाखा काम भोगनी कीधी अधिक अपार ॥
तस ठाणस आलोयणा आज लगे सुविचार ॥५॥

ढाल

श्रीनेम कहे सांभल मुनी (एदेसी)

श्रीजिनवर जग हित करु तसुमीठी हो बांणी अमिय समान ॥ अतिसय पण तीस जेहनी सुणतां गुणतां हो त्रपति जीभ कान॥ धन २ ज्ञान जिनंदनो (आंकडी) ॥१॥ ते भिन्न २ जीव अजीव नांभाव भाख्या हो श्री सिधान्ति मझार॥ जाण पणों जग दोहिलो समकित पायां हो उतरे भवपार ॥ ध० ॥ २ ॥ आंणा मैं धर्म कह्यो भलो आणां बारे हो अधर्म दुख दाय सावज योग बरतावियां पाप लगे हो पुन्य नाहि बंधाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ निरवद योग थी पुन्य बंधे ते तो जाणों हो श्रीजिन आणा म्हाय ॥ कर्म झडे जब जीवरे पुन्य पुद्गल हो

सहजैं लागे आय ॥ ध० ॥ ४ ॥ ते पुन्य थ-
की सुर पद लहे मनुष्य गति मैं हो थावै साता
सोय ॥ ते बार अनंती पाविया इण सुखमें हो सार
में जाणों कोय ॥ ध० ॥ ५ ॥ जीव तणां निज
गुण भला ज्ञान दर्शणादि हो अक्षय अविनास ॥
निरमल स्फाटिक रतन जिसा कर्म संगथी हो मइ-
ला हुया जास ॥ ध० ॥ ६ ॥ राग द्वेस बस थाय
नें आतमानें हो लगावे खोड़॥ निज घरनींजे साहिवी
ते भूली हो परघरनीहोड़ ॥ ध० ॥ ७ ॥ जिम को-
ई मदिरा पान थी गहिलो थाय हो गालियांदिक मैं जाय॰
अशुच जगां माहि लोटतो स्व घरनी हो तेहनें
खबर न काय ॥ ध० ॥ ८ ॥ कोइ स्याणा पुरुष
कहे तेहनें तो तिणन हो देवे गालियां अथाय ॥ ति-
म चेतन मोहकर्म थी पुदगल मैं हो सुख मानें अ-
थाय ॥ ध० ॥ ९ ॥ नींव तणां जेह पानड़ा वि-
ष पर गमिया हो मींठा अमिय समान ॥ बहुल कर-
मी जीवां भणीं प्यारा लागेहो काम भोगादि जान ॥
ध० ॥ १० ॥ काम भोग सल्य सारखा भवि छांड़ो
हो ए जिन जीरी वांणा धर्म कियां दुख उप समैं
सातमी ढालहो सुणए चतुर सुजान ॥ ध० ॥ ११ ॥

दोहा.

तीन मनोरथ चिंतवे श्रावक गुन भंडार ॥
कर्म निरजरा अति करे पामे शिव सुख सार ॥१॥

आरंभादिक बहु करे स्वपर अर्थ अवधार ॥
पण तेहने छांडण तणों दिल राखे सुविचार ॥२॥

भावे रूडी भावना ध्यावे निरमल ध्यान ॥
गावे गुण गुणवंतना सुध राखे सरध्यान ॥ ३ ॥

ढाल

नीदड़ली हो नाह निवार (ए देशी)

श्री तीरथ पति इम उपदिसे मति हणज्यो हो छऊं कायनां जीव के॥ अनेरा पासमें हणावज्यो अनुमोद्यां हो लागे पाप अतीव के भव जीवां राखो सुध सर्धनां (ए आंकड़ी) ॥ १॥ भोजन विविध प्रकारना आरंभ कियां हो निपजे छै तायके ॥ छऊं कायारी हिन्सा हुवे ते भोगवियां हो किंचित धर्म न थायके ॥ भ० ॥ २ ॥ ज्यो खाणां पीणां मैं धर्म हुवे तौ ते

त्यागां हो हुवे पाप पंडूर के ॥ बले दूजाने त्याग करावियां अनुमोद्यां हो लागे अघ भरपूर ॥ भ० ॥ ३ ॥ सर्वब्रती साधू भला तेह टाली हो बाकी संसारी जीवके ॥ खाणों पीणों त्यांरो पहिरणो सब अविरत मैं हो जाणों दुरगति नीवके ॥ भ० ॥ ४ ॥ सावज खोटा जांण ने मुनि त्याग्या हो काम भोगादि सोयके ॥ ते सावज ग्रस्थे कियां तिण मांहिहो धर्म पुन्य किम होय ॥ भ० ॥ ५ ॥ इम हिज मूसा बोलिया बोलाव्यांहो अनुमोदियां एक के ॥ अदत मइथुन सेवियां सेवायांहो हुवे वरत मैं छेकके ॥ भ० ॥ ६ ॥ बले पंचमो आश्रव परिगरो ते राख्यां हो पाप लागे छै सोय के ॥ ते दूजाने दियां दिवरावियां भलो जाणयां हो नत जाणो धर्म कोय ॥ भ० ॥ ७ ॥ ये श्री जिननी परुपणां बिरला जाणे हो इण बातरो मर्म के ॥ व्रत अविरत जे ओलख्यो तिणने बल्लभहो श्रीजिनजीरो धर्म ॥ भ० ॥ ८ ॥ ज्यो त्याग किया मैं धर्म छे तो भोगावियां हो अशुभ कर्म बंधाय के ॥ दूजाने भोगायां अनुमोद्यां त्रहु कर्यां हो एक सरीखा थाय के ॥ भ०

॥ ९ ॥ कहै साता दीयां साता हुवे ते नहीं जाणीहो जिणधर्मरी बातके ॥ धर्म अधर्म न ओलख्यो त्यांरे घटमैं हो बासियो घोर मिथ्यात ॥ भ० ॥१०॥ श्री सुयगडायंग सूत्रमें तिणने मूरख हो भाख्यो श्रीजगभाण के ॥ आरज मारग सूं अलगो कह्यो इम इत्यादिक हो षट बोल पिछाण के ॥ भ० ॥ ११ ॥ दुखरो दाता परिगरो पोते राख्यो हो जाणों अनरथ खाणके॥ अनेरा नेदेय रखाविया अनुमोद्यां हो तिहु सरीखा जानके ॥भ० ॥१२॥ एह आरंभ नें परिगरो छांड़ियाहो लहे शिव सुखसारके ॥ दुख पामें नाहिं सर्वथा मति राखो हो तिणमैं संदेह लिगारके ॥ भ० ॥ १३ ॥ ढाल कही ए आठमी तुम सुणज्यो हो भविक नरनारके ॥ धर्म कियां सुख पामिए तिण कारण हो म करो ढील लिगार के ॥ भ० ॥ १४ ॥

दोहा

तन धन जोबन कारमो बादर जेम बिलाय ॥
देखो दिन कर तेहनी तीन अवस्था थाय ॥ १ ॥
ड़ाब अणी जल बिंदनों जीतव जाणो तेम ॥

तिण सूं उत्तम नर नारियां राखो धर्म सूं प्रेम ॥२॥

ढाल

श्रेयांस जिनेश्वर प्रणमूं नित बेकर जोड़रे (ए चाल)

तज विभाव निज भावमां रमिए नर चतुर सुजाण रे ॥ निज आतम में गुण घणां मत परगुणमें सुख जाणरे॥मति॥श्र० ॥श्रावक गुण ग्राहिका करो धर्म सदा सुखकार रे ॥ १ ॥ अनंत ज्ञान दर्शण भला बले चारित वीर्य अपाररे ॥ ए निज गुण है थांहिरा जरा अंतर ज्ञान विचाररे ॥ २ ॥ असुभ कर्म थी आतमा मयली होयरही अति जासरे ॥ सुध परिणाम सु ल्यायने परगट करियै गुण खास रे ॥प ॥ श्रा० ॥३॥ मनुष जनम दुर्लभ लह्यो आरज खेतर पुन्य प्रमाण रे ॥ उत्तम कुल आय ऊपनो पायो आयु शुभ दीर्घ जांणरे ॥प॥श्रा० ॥४॥ बल प्राक्रम इंद्रियां तणो मीलियो सतगुरुनो योगरे ॥ तो पण धर्म करे नहीं एहवो मूरख मूढ़ अयोग रे॥ए॥ श्रा० ॥५॥ इम जाणी सुध निरमलो पालो संयम सतेर प्रकार रे ॥ च्यार कषाय निवारने उतरो भवसागर पाररे ॥

श्रा० ॥ ६ ॥ जो साध पणो नहिं ग्रह सको तो श्रावकना व्रत बाररे ॥ निर अतिचार पालिया जिम नैड़ा शिव सुखसाररे ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ त्याग बैराग बधाविए करिए उत्तम साधूनीं सेवरे ॥ निन्द्रा बिकथा परिहरो छांड़ो क्षुद्र भाव अहमेव रे ॥ श्रा० ॥ ८ ॥ माति करो धनना गारवो पायो वार अनत अपार रे ॥ सुख दुख बहुला पाविया राखो चित में समता साररे ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ धर्म अपूर्व पावियो मीली जोग वाई सुध आयरे ॥ तो ढील करो कांई कारणे रात दिवस ये योंही जायरे ॥ श्रा० १० ॥ रोग जरा जह लग नहीं पाणी पहिलां थी बांधो पाजरे ॥ मित्र स्नेही जो आपणां देवो त्याने धर्म नों साजरे ॥ श्रा० ॥११॥ धर्म करंता जीव ने माति पड़ो तिणरे अंतरायरे ॥ फल कडुवा तेहना घणा पावे भव २ दुःख अथाय रे ॥ श्रा० ॥१२॥ इम जाणी गुण वंतना गावो-गुण छैज तेह मांयरे ॥ नवमी ढाल कही भली धर्म करसी ते नहीं पिछतायरे ॥ श्रा० ॥ १३ ॥

दोहा

सामायक पोसह करे धरे धर्म नो ध्यान ॥

समता रस में झूलता धन २ ते गुणवान ॥ १ ॥

कुविसन तज भगवंत भज राग द्वेष सब टार ॥
स्व आतम में गुणघणां करिए उज्वल सार ॥२॥

ढाल

पनामारु निरखण दे गणगोर (ए देशी)

सुभ परिणाम बले शुभ लेस्यां प्रसस्थ भला अदव साय ॥ अहनिश धर्म ध्यान दिल धरतां कर्म पटल खय थाय ॥ कर्म पटल खय थाय सुगण जन॥क॥ जीथांरो आतम गुण प्रगटाय ॥सु॥ जपिये श्रीनवकार ॥ सु० ॥ १ ॥ निज पर भाव बिलोक यथारथ सरध दर्व षटकाय ॥ आरंभ छोड़ तोड़ अघघाती शिव गति नैड़ी थाय ॥ सु० ॥ २ ॥ मत्सर भाव तजी नित तूंतो गुण वंतना गुणगाय ॥ गिनाता सूत्र बिखे जिन भाख्यो गोत तीर्थं कर बंधाय ॥ सु० ॥३॥ श्री जिनसासण पंचमें अर्के भित्तु गणी सुखदाय ॥ बिविद मर्याद बादिगण वत्सल मिथ्या तिमर हटाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ द्वितिय पाट गुरु माल गणाधिप त्रतीय

पाट रिषिराय ॥ तुर्य जया चार्य महा प्रभाविक लाखा ग्रंथ बणाय ॥ सु० ॥ ५॥ मघवा सम मघ राज पंचमें तस पट माणिक कहाय ॥ धीर वीर गंभीर गुणोंसे दियो मार्ग दीपाय ॥ सु० ॥ ६ ॥ तेह्ने पाटे बर्तमानमें शोभत जिम जिनराय ॥ मुनि पट मुनि पति डाल गणी स्वर प्रणम्यां पातक जाय सु० ॥ ७ ॥ ए जिन सासण सुखनो बासण ए गणने गणिराय ॥ अहर्निश सेवा करले भविक जन मत कर अवरनी चाय ॥ सु० ॥ ८ ॥ इण सासण में रक्त रहे त्यारी करत सदा सुर साय॥ रिधि ब्रधि थाय दुख मिट जावे बिघन न होवे कांय ॥ सु० ॥ ९॥ च्यार तीरथ सुख धाम स्वाम मुज श्रीश्री डाल गणिराय ॥ तसू पर सादे गुलाब कहे मुज आनंद हर्के सवाय ॥ सु० ॥ १० ॥ संम्वत उगणीसे इकसट में दुतिए जेष्ठ कहिवाय ॥ ए आलवणां कही जय नगरे सप्तमी दिन सुखदाय ॥ सु० ॥ ११ ॥

अथ सुगुरु गुणांका कक्का ।

दोहा ।

तरण तारण जिन जग गुरू प्रणमूं श्रीनाभेय ।
सुखकारी निस्नेह पणें जगभ्राता जगदेव ॥ १ ॥
अस्वसेन नन्दन नमूं तेवींसमां प्रभू पास ।
त्रसलादे राणी तणा सुत वर्धमान प्रकास ॥ २ ॥
श्रीभिक्षु गणिराज कूं सुमरूं सुध चितल्याय ।
सद्गुरु गुण संग्रह करी कक्को कहूँ बनाय ॥ ३ ॥

येक माली ने बाग बणाया गैंद हजारा फूलोंदा (एचाल)

कहै कक्का करले तू सेवा सद्गुरु की अति सुखकारी । करम काट शिव पदकूं बरले अजर अमर पद हितकारी ॥ कर सेवा निर्ग्रंथ गुरूकी मान कह्या सुख पावेगा । लोभी गुरु कूं छांड़ि चिदानंद आवागमन मिट जावेगा (ए आंकड़ी) ॥ १ ॥ ख ख्खा कहै कह्या मान हमारा नहिं ऐसा जगमें जारी श्रीभिक्षु गण पाके यारो मति करो और तणीं यारी ॥ कर० ॥ २ ॥ ग ग्गा कहे गुरुकी संगति कों करत सदा ज्यो चित ल्याई । बोल दसों प्रगटे शिव पामें

श्रीजिन मुखसे फुरमाई ॥ करि० ॥ ३ ॥ घग्घा कहै घन जिम गुरु बरषित बांणी अमरत जल धारा। तत्वबोध अंकूरा हुलसे सुख दिल मोर भवि प्यारा ॥ करि० ॥ ४ ॥ नन्ना कहै नमतां मुनिजन को अशुभ कर्म सबही टाले। पुन बंधे अरू कर्म खपावे शिव पामें संजम पाले ॥ करि० ॥ ५ ॥ चच्चा कहै चरनों में मस्तक धरले येक बार भाई। शुभ भावों से मुनिजन सेव्यां कमी रहत हैं कछू नाहीं ॥ करि० ॥ ६ ॥ छछा कहै छिन छिन हिरदय में सुगुरु ध्यान तू राख सदा। रयन दिवस भजले गण इस्वर व्याधि सोग न आवे कदा ॥ करि० ॥ ७ ॥ जज्जा कहै जपले जगतारक ताते तेरा होत भला। क्रम क्रम गणीं गुण गाय सुधारस जिम सशि थावे चड़ती कला ॥ करि० ॥ ८ ॥ झझ्झा कहै झट दे माति तड़के क्षमा राखरे भवि प्राणी। जिन बचनों दी राखो आस्था मती करो खेचा तांणीं ॥ करि० ॥ ६ ॥ ञञ्ञा कहै अब येही सरध ले जिन आणां में धर्म गणों। आणां बारे काम संसारी कारण छै ते पाप तणों ॥ करि० ॥ १० ॥ टट्टा कहै टलतो रहे अघ से राग द्वेष कूं पतला करो। जीव अनन्ता मरे जगति

में जिसके फंद में नाहिं परो ॥ करि० ॥ ११ ॥ ठठा कहै ठसका ज्यो राखे जयणा मात्र जीवों की करो। छवों कायको मतिना मारो श्रीजिनमारग राह खरो ॥ करि०॥ १२ ॥ ड़ड़ा कहै ड़रज्यो रे साजन इन करमों की गति भारी। बड़े बड़े जोधार जीनी कों इनने नहीं दीनी वारी ॥ करि ॥ १३ ॥ ढढा कहै ढबजेरे साजन जोस जोबन वयके मांही । क्रोधमान मायादिक तजिये अनरथ करी जे मति भाई॥ करि० ॥१४॥ णाणा कहै णाणा भणाणा भणाणा ताल मृदंग राग गावे। अहिन्सा मुख से केह तो तब हिन्सा थी शिव कहां पावे॥ करि०॥१५॥ तत्ता कहे तत्ता थेइ ताथेइ नाच कूद क्यों कूटे मही। ध्यान परमेस्वर शुध मन करले जग वल्लभ जिन एम कही ॥करि०॥ १६ ॥ थथ्था कहे थके क्यों फोकट उछल उछल बिन भाव तभी। भावे जिन भजलेरे भइया बांछित कारज थाय सभी ॥करि०॥ १७ ॥ दद्दा कहे दया हिरदय में अहो निशि राखिजे वाही। छवों कायकों अभय दान दे यह करुणा आज्ञा मां- ही॥ करि०॥ १८ ॥ धध्धा कहे धन धन मुनिवर को नव क्रोटी पच्च खाण किया। अनुकंपा अरथे इण भव

में खटकाया कों अभय दिया ॥ करि० ॥ १६ ॥ नन्ना कहे नर भव तूं पाके दान सुपातर जोग जुड़े। तब स्व हाथ थकी प्रति लाभो परधन देखी मती कुढ़े ॥ करि० ॥ २० ॥ पप्पा कहे पग पग के अंतर जयणां कीजे जीव तणी। सुध पालीजे संजम लेइये क धारा गणी आंणा भणी ॥ करि० ॥ २१ ॥ फफ्फा कहे फर: मावे गणीते तहत बचन सर धर लीजे। टालो कर निन्दक अग्यानी तेह थकी बचतो रहीजे ॥ करि० ॥ २२ ॥ बबा कहे बलिहारी उनकी कुटम्ब छांड़ि के चरन गहे। स्नेह राग परचा परि हर के श्री गण-पति के संग रहे ॥ करि० ॥ २३ भभ्भा कहे भल रवि ते प्रकटे ता दिन गणी के दरिश मिले। धन धन जे नर चरन गही ने श्री जिन सासन मांहि मिले ॥ करि० ॥ २४ ॥ मम्मा कहे मत करो इसी तुम टालो करके मांहि रले। रतन पाय के नांहि बिसारो ऊंचा चढ़ि मति पड़ो तले ॥ करि० ॥ २५ ॥ यय्या कहे यह जिन फुरमाई आणा बारे जेह टले। तिणमें संजम नांहि सरधजे घर घर फिरतो कोरे कले ॥ करि० ॥ २६ ॥ ररा कहे रणमें जिम छत्री कबहुन पाछा पैर धरे। तिम सूरो रहे कर्म काटवा जब परिसह नों काम

परे ॥ क० ॥ २७ ॥ लल्ला कहे लह लीन रहीजे गर्णी गुण एक चित्त धारी गुण वंतो के गुण गायां से तिरथंकर पद लहे भारी ॥ क० ॥ २८ ॥ वव्वा कहे वहीं शिव पद पामें नव तत्वका पिछाण करे जाण यथार्थ करले सुध करणी रोग सोग दुख दूर टरे ॥ क० ॥ २९ ॥ सस्सा कहै समकित बिन प्राणी बार अनंन्ती किरया करी तातें सुध सरधी संबर थी कर्म मुक्ति पद पाय खरी ॥ क० ॥ ३० ॥ षष्षा कहे षट मतिको जानी षटता छांड़ि के धर्म करो गुण गावो पांचू पद केरा निन्दा बिकथा दूर हरो क० ॥ ३१ ॥ शश्शा कहे शब्द दार्थ जांणी आगम रैस मैं लीन रहो गहिन अर्थ में समजो नहीं तो केवलियाने भोलादिवो ॥ क० ॥ ३२ ॥ हहा कहे हणीऐ नहीं चेतन अपना जीव जीसो जानो अपणो तनमें कष्ट पड़े तो कायम रहो खया मानों ॥ क० ॥ ३३ ॥ इम निसुणी सुगुरजन केरी सेवा कर ल्यो अहो निसा और कांम में धन लागत हैं इन में नहिं लागे पईसा क० ॥ ३४ ॥ उगणी से त्रेपन वरषों मैं चैत्र कृष्ण दुतिया आयों रात्री वेलां आनंद मांही गुलाब चंद कक्को गायो ॥ क० ॥ ३५ ॥

जिनदर्शनमहिमास्तवन

लगे दोय नैन चीरे वालेसे ॥ (एचाल)

लगी मोय चाह जिन वर दर्शन की ॥ (एआंकड़ी) श्री जिन दर्शन मन बस्यो हो सु-गण जन जागी अंतरंग प्रीत ॥ वीतराग थीं प्रीतड़ी हो ॥ सु ॥ आतम अनुभव रीत ॥ ल० ॥ १ ॥ सुध दर्शन दरिसे तदा हो सु ॥ हुवे कु-दर्शन छेद ॥ ल० ॥ जिन दरिशन निज दर्शनो हो ॥ सु ॥ कारण निमित अखेद ॥ ल० ॥ २ ॥ लखे यथार्थ स्वपर भणीं हो ॥ सु ॥ तव छांडे पर भाव ॥ पद अकरता परिणमे हो ॥सु॥ फावे चेतन दाव ल० ॥ ३ ॥ पंच हूस्व सुर बोलतां हो ।सु। वेल्या जतिथाय ॥ ल ॥ प्रगटे सत्ता आत्म नीं हो ।सु। अजर अमर सुख पाय ॥ ल० ॥ ४ ॥ है अ-पार गुण दरिशमां हो ॥ सु ॥ रिद्धि सिद्धि प्रगटाय ल० ॥ गुलाब कहे जिन दरिशनें हो सु वस रह्यो मुज मन मांय ॥ ल० ॥ ५ ॥

अथ मघवा गणीं गुण स्तवनम् ।

राग ठुमरी ।

चलो सखी छबि देखन कूरथ छाड़ि जदु नंदन आवत हैं (ए चाल)

म्हांरा परम पूज्य मघराज आज मोय याद आवत हैं बार बार (ए आंकड़ी) अस्टा दस सित्ता णावें बरषे जनम महोच्छव धार धार ॥ म्हा० ॥१॥ उगणींसे आठे मगसिर वदि चर्ण रयण लीयो सार सार ॥ म्हा० ॥ २ ॥ लघू वयमें पण अति बुध वंता बिनय वंत सुख कार कार ॥ म्हा० ॥३॥ बीसे युव पद जय गणी स्थापी जाण लियोजग तार तार ॥ म्हा० ॥४॥ अड़तीसे वर पाट महोछव श्रमण दीक्षातेह वार वार ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ समग्र न्याय हद सोध गणाधिप जिन सासण सिण गार गार ॥ म्हा० ॥६॥ बहु जन बोध पमाय गुण चासे स्वर्ग सिधारे त्यारत्यार ॥ म्हा० ॥७ ॥ तस पाटो धर माणिक गणिवर मिथ्या तिमर निवार वार ॥ म्हा० ॥८॥ सशि भानू वत अतिही छाजता सखर गुणां नहीं पार पार ॥ म्हा० ॥ ९ ॥

उंगणीसे बावन भादव सित दूज दिवस गुरु बार वार ॥ म्हा० ॥ १० ॥ गुलाबचंद आनंद अति पायो देखत गणि दीदार दार ॥ म्हा० ॥ ११ ॥

अथ माणिक गणी के गुणो की ढाल ।

कुकड़ नां मुख साहमों हो नित जोवे लच्छि पेमला (एदेशी)

प्रात समें अघ तजिए हो नित भजिए मांणिक महागुणी (एआंकड़ी) श्री जिनवर पय प्रणमूं हो गुंण बर्णं मूंहिव मुज स्वामनां कांइ श्रवणों भवि हित कार सुख करणो तेह सरणों हो दुखः टरणो जाप जपो सही कांइ उगंते दिन कार ॥ प्रात ० ॥ १ ॥ श्री जय नगर सवाइ हो तिण मांही जेवरी दीपतो कांई ओस बंश श्रीमाल हुकमचंद छोटांदे हो सुत जनम्यों अधिक मनो हरु कांइ मांणिक रतन निहाल ॥ प्रात ० ॥ २ ॥ लघू बयमें बैरागी हो अनुरागी श्रीजिन धर्ममें कांइ करण आतम नों उधार उंगणीसें अठ बीसे हो फागण में श्री जय गणींक नें कांई चरण लियो सुख कार ॥ प्रात ० ॥ ३ ॥ सोम प्रकृति हद थांरी हो हित कारी प्यारी देखने कांई चादर दी बक-

साय युव पद स्थापी सांपी हो । भोलामगा संत सन्स्यां तणी कांई गुगा चासे चैत म्हाय ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कृष्णा चैत गुणा चासे हो । शुभ दिवसे पाट बिराजिया कांई प्रगटिया जेम जिनंद मिथ्या तिमिर हरण कूं हो । तपतंतो सहस किरण समों कांइ अतिसय वंत गणिन्द ॥ प्रा ० ॥ ५ ॥ गुण खट तीस जगीमे हो । गण ईशे स्वाम सिरोमणी कांई अष्ट संम्पदा पेख तुम गुण पार न पावे हो । गावे ज्यो सुर गुरु चूंप सूं कांइ मुलकत मुद्रा देख ॥ प्रा० ॥ ६॥ श्री मघ पाट सुहायो हो जस छायों जाभो जगति में कांई पायो पद गणीं राज भवियणरे मन भायो हो । कहायो वीर जिनंद ज्यो कांई तारण तरण जहाज ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ सहर सिरदार बखाणयों हो तिहा ठाणयों प्रथम चौमास ही कांई दूजो चूरू गाम ताहय निज नगरी बले कीनों हो । रंगभीनो साल बावन में कांई चौथो बीदासर म्हांय ॥ प्रा० ॥ ८॥ गड़ सुजाण सुहायो हो तहां ठायो चौमासो पांचमू कांई धर्म उद्योत करन्द व्याख्यानादिक म्हांई हो बरखाई बांणी अमि समी कांई भविजन को पावंद ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ आस्विन

सुक्का धुर दिन हो कांई ताव दस्त कारण भयो। पुन हिचकी बिच २ चालंत तो पण कछु नहीं पारिवा हो। शिव पद बरवा ऊठिया समचित वेदना सहंत ॥ प्रा० ॥ १० ॥ कातिक कृष्णा तीज दिन हो पर भाते दस्त इक आवियो कांई सक्त घटी तिण बार मुनि जन शरण दिरावे हो। उचरावे अण सण स्वामने कांई उदास भाव अणगार ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रात समें तिण बेलां हो अढाई बजियां आंसेर तीज निसा बुध वार स्वामी स्वर्ग सिधार्‍यां हो। जिम मध्य काले आथमें कांई तपवंतो दिन॰ कार ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ आतम निधि रस ध्याने हो कार्तिक सुक्क नवमी दिने कांई सुगरु तणों सुप॰ साय। रामलाल रिषिराया हो चौमासे जयपुर स- हिरमें कांई गुलाबचंद गुण गाय ॥ प्रा० ॥ १३ ॥

अथ डाल गणिन्द स्तवना।

राग श्यामकल्याण।

स्वामी दरशन मोय लागे प्यारो (आंकड़ी) श्री भिक्षु के सप्तमे पाटे डालगणीं मिण धारो ॥ गणि० ॥ १ ॥ ओस बंश उज्जैण मालवे जनम

भीम सुख कारो ॥ ग०॥ २॥ लघू बय माही च- रन आदऱ्यो छांड़ी विषय बिकारो ॥ ग०॥३॥ पंच आगम फुन काव्य कोष ग्रंथ कंठ किया श्री कारो॥ ग० ॥ ४ ॥ रवि प्रगट्यो जोधाण नगर मैं मित्थ्या तिमिर बिडारो ॥ग०॥ ५॥ गुण खट तीस अरु अष्ट सम्पदा षोडस ओपम सारो ॥ ग० ॥ ६ ॥ गुलाबचंद की येही अरज है करि किरपा मोय त्यारो ॥ ग० ॥ ७ ॥

राग भैरवीमें ।

अमरित झड़ बरषावे छै देखोरी ए ढ़ाल गणिंदजी अमरित झड़ (ए आंकड़ी) श्री भि- क्षु के सप्तमे पाटे जिन वर सो दरसावे छै। वाक्य सुधा रस घन जिम बरषित भविक मोर हुलसावे छै ॥ देखोरी० ॥ १ ॥ पाखंड पेलण अघ दल ठे- लण तीरथ नाथ कहावे छै। मिथ्या तम मेटण रवि जेहवो ज्ञान जास बधावे छै ॥ देखोरी० ॥ २ ॥ गद्य पद्य छंद काव्य कवितादिक आगम रैस धरावै छै । श्री जिन मार्ग पुष्ट करने कूं कथा अ- पूरव ल्यावे छै ॥ देखोरी०॥ ३॥ वाणी निज गुण

खानी सुन कर सकल सभा हरखावै छै। देसरना आवे जातरी दरशन करि सुख पावे छै ॥ देखोरी० ॥ ॥ ४ ॥ जय नगरी का श्रावक तुम कूं एहवी अर्ज सुनावेछै ॥ कृपा करी जयनगर पधारो गुलाबचन्द गुन गावे छै ॥ देखोरी० ॥ ५ ॥

राग सोहिनी ।

तूही तूही याद आवेरे दरिदमें एचाल ।

श्री श्री डाल गणपति प्यारो ।श्रीश्री० (आंकडी) श्रीभिक्षुके सप्तमे पाटसाहस जिन जिम गण सिणगारो ।श्री० ॥ १ ॥ षट दरशन जानी हे मानी गुणखानी बानी हितकारो । श्री० ॥ २ ॥ सकल संगने सारण वारण टारण अघ रिपु भान दीदारो । श्री० ॥ ३ ॥ बांचना दान देवे मुनि जन ने तात समो इण भर्त मंझारो । श्री० ॥ ४ ॥ आचारज एहवा गुन गेहवा गुलाब कहे सेयां सुखकारो । श्री० ॥ ५ ॥

ढाल ।

माताजी सज सोले सिणगार के दरशन दीजिए होराज एचाल ।

हांजी गणी श्रीभिक्षुके मुनि पट मुनि पति

दिन करूं हो स्वाम। हांजी गणीं आसा पूरण सादृस सांचा सुर तरू हो स्वाम ॥ १ ॥ हांजी गणीं तुम गुण सिन्धु रमण स्वयंभू जेहवा हो स्वाम ॥ हांजी गणीं किम तरिए लघु बुध्य थकी घन गेहवा हो स्वाम ॥ २ ॥ हांजी गणीं मम अवगुण नी बातुं श्रवण तमे सुणी हो स्वाम। हांजी गणीं पेखी ते रगजातुं सित्ता भली थूणी हो स्वाम ॥ ३ ॥ हांजी गणीं जलधर बूंद भवि तरु त्रपति सुवासना हो स्वाम ॥ हांजी गणीं सठ हठ ताणीं सुरछित रूंख जुवासनां हो स्वाम ॥ ४ ॥ हाजी गणी थारा बाचा सांचा मनथी सरधिया हो स्वाम ॥ हांजी गणीं अति हरषित थयो चित्तके दुःख दूर गया हो स्वाम ॥ ॥ ५ ॥ हांजी गणीं अपनों सेवग जान के भल किरपा करी हो स्वाम ॥ हांजी पोतानी रिद्धि राखे ते स्यों बातरी हो स्वाम ॥ ६ ॥ हांजी गणीं गुलाब कहै एह अर्ज हिवे अवधारिए हो स्वाम ॥ हांजी गणीं करके पूरण मरज़ी के जयपुर पधारिए हो स्वाम ॥ ७ ॥

गरणाइ हो वादीला थारी भांगड़ली ए चाल ।

गरणाई हो महाराजा थारी कीरतड़ी ॥ग०॥ (ए आंकड़ी) कीरतड़ी गरिणांई थारी पूवी परछाइ कांई भवि मन भाइ अधिकाइ महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ १ ॥ श्रीश्री डालगणिंद की अति सय जेम जिनंद कहाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ २ ॥ अधिक उजागर स्वाम सिरोमणि सासण कलस छड़ाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ३ ॥ वर खट तीस गुणांलंकृत पुन अतिसय तेज सवाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रकास प्रगट तुज बानी मिथ्या तिमिर हटाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ५ ॥ पाखंड पेलण अघ दल ठेलण वचन सुधा सरसाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ६ ॥ चतुर संघ कूं सारण वारण टारण भवो दिखाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ७ ॥ बसुधा नामी शिव नो गामी सासण जबर जमाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ८ ॥ तू मुज स्वामी अंतरजामी तेरो ही सरण सुहाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ९ ॥ तू मुज तात समों गण ईस्वर तुजसें प्रीत लगाई महाराज

कीरतड़ी ॥ ग० १० ॥ अपनो जान कृपा नित हमपै बणी रहे अधिकाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ११ ॥ उगणीसे गुण खट चौमासे शुभ दिन शुभ घड़ी आई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ १२ ॥ गुलाब कहै जोधांण नगर में कीरत तेरी गाई महाराज ॥ कीरतड़ी ॥ ग० ॥ १३ ॥

ढाल ।

छैला थेतो वागां जलदी चालो मैं तो वागां फिरूं अकेली ए चाल।

श्री भिक्षु मुनि पट सोहवे कांई पेखत सुर नर म्होवे ॥ गणी राज प्यारोरे ॥ १ ॥ हांजी गणी मुख पूरण शशि जेहवो कांई बचनामृत गुन गेहवो ॥ ग० ॥ २ ॥ स्वामी तुज क्षान्ति मही सम भारी कांई जिन जिम अतिशय धारी ॥ ग० ॥ ३ ॥ हांजी तन क्रान्ति रवि वत जानो कांई निर्मल मति श्रुति नाणो ॥ ग० ॥ ४ ॥ हांजी तुम दरशन री हद चाह्यो कांई हौंस घणी मन म्हायो ॥ ग० ॥ ५ ॥ हांजी सब श्रावग की यह अरजी कांई कीजे पूरण मरजी ॥ ग० ॥ ६ ॥ हांजी बहु सं-

त सती लेइ लारो कांई जयपुर नगर पधारो ॥ ग० ॥ ७ ॥ हांजी गणीं अपनो जान संभारो कांई यह बिनती अवधारो ॥ ग० ॥ ८ ॥ हांजी आज आनंद हर्ष सवायो कांई गुलाबचंद सुख-पायो ॥ ग० ॥ ६ ॥

ढाल

सुंदर नेम पियारो माई ए चाल ।

ए महोच्छव मन भायो देखो माई (एआं-कड़ी) समण साति पुन श्रावक श्राविका च्यार तीरथ हुलसायो । जात्रा करी श्रीडालगणिन्दकी पातक दूर पुलायो ॥ एमहोच्छब० ॥१॥ सुनि गण-पति एह अर्ज हमारी शान्ति सुधासम बायो । रहो कायम ए गादी जिन की तुम गणपति सुखदा-यो ॥ एमहोच्छब० ॥ २ ॥ चिरंजीव बहु काल लगे तुम रवि वत् तपो सवायो । गण भूषण गण व त्सल साहिब जिन जिम शोभ सवायो ॥ एमहोच्छब० ॥ ३ ॥ में श्रावक तुम नगर जोधाणे दरशन करवा आयो । किरपा सिन्धू तेरी किरपा मोपै रह अधिकायो ॥ एमहोच्छब ॥ ४ ॥ सुख साता चाहूँ

गणपतिके तन मनसे लव ल्यायो । कर जोड़ि कहै गुलाबचंद मुज आनंद हर्ष अथायो ॥ ए महोत्सव० ॥ ५ ॥

अथ श्रावक सुजाणमल कृत

लावणी उड़ाणकी ।

जिनंद सम भिक्षु अवतारी भारी माल द्वितीय पाट भारी तृतीय पट नृप इन्दु धारी युग पट जय बर जस धारी मघवा सम मघवा गणीं चउं तीरथके इन्द तस पाटो धर दीपतास कांई माणिकचंद मुनिन्द इन्द सम संप्रादि सोहंदा ॥ माणिक मुख मुज मन मोहंदा अलि जिम पेख अरि बूंदा॥ मा० ॥ १ ॥ सिंह सम स्वाम सब्द गूंजे बचन सुण पाखंडी धूजे भविजन सुन सुन प्रति बूजे हर्ष थई न्याय मार्ग भूजे ॥ मिथ्या तमकूं खंदता करता जगमें उद्योत भवियण रे घट घालतास कांई पूज्य ज्ञानकी जोत सोहत छवि साहस दिन इन्दा ॥ मा० ॥ २ ॥ शशि सम साम्य बदन दरिशे बचन झड अमृत सो बरखे भविजन चक्षु पेख हुलसे कलेजो कुंज कवि विकसे ॥ कर्म

कटक कूं काटवा वासुदेव सम सूर । भर्त खेत्रमें च- जतास कांई माणिक नांज सतूर पूर महि कीरत छावंदा ॥ मा० ॥ ३ ॥ करूं कर जोड़ नाथ अरजी चाऊँमें तुम पूरण मरजी कलपतो चौमासो चाऊँ हुकम श्रीमुखसेमें पाऊँ ॥ अरजी पे मरजी करि दीजे हुकम चढ़ाय । नर नारी हर्षित हुवे स- बके आवे दाय ॥ चाय मुज मनकी पूरन्दा ॥ मा० ॥ ४ ॥ पुज्य पारस ज्यों महि ख्याता बोद्ध बीज समकितके दाता । भवि जन डूबतकूं त्राता मार्ग शिव स्वर्ग तणो दाता ॥ उगणीसे बावन सेमें सुद आसोज पिछाण । चौदस दिन गुण गा- वियासे कांई जयपुर मांहि सुजाण ॥ आंण सिर गण पति धारंदा ॥ मा० ॥ ५ ॥

ग़ज़ल

छाई घटा गगनमें काली राजुलकों बिहर दुखभारी (एचाल)

भिक्षु भारी माल राय चंदा युग पट थये जीत जोगिन्दा । पंचम पट पुनम नंदा मघवा सम मघव मुनिन्दा । तस पाट माणिक गण इन्दा छवि छाजत जम जिन्दा । तरररररतरि ज्यों तारे सर

ररर सिन्धु पारे वररररर बहु दुख वारे गणारीं जनम जरा दुख मेट मेलत शिव ठेट तारत जन ब्रन्दा पूज्य बदन बिलोकि चंदा भयी नयन कुंज हुल-संदा ॥ पुज्य० ॥ १ ॥ उदयाचल गिरि ओपंदा ता सम सासण सोहंदा । तापे माणिक मुनिन्दा प्रगटे हैं जेम दिनन्दा ॥ भवि निर्खे नयन अरि-कंदा कवि चकवा चित्त हुलसंदा ॥ कररररर काप्यो कूरं पररररर कियो पूरं चरररर तम दल चूरं । भवि उर करत उदयोत बोद्ध बसु जोत रिपू अघ करत निकंदा ॥ पुज्य० ॥ २ ॥ सिंह सम मही बिच गुंजन्दा । मृग पाखंड़ अति धूजन्दा । तन सुरपति छवि छावन्दा बीर बाक्य बजू धारन्दा । गण सभा सुधर्मा उन्दा सामानिक संत सोहन्दा । सररररर सियल सेन साजी ज्ञान धररररर नो-बत बाजा गररररर गुंजे सत गाजी ॥ गाणि भर्म गढ़ देत बखेर कियो मोह जेर सुचि बिजय बरिन्दा ॥ पुज्य० ॥ ३ ॥ सुर गिर सम स्वाम स-धीरं चर्मो दधि जेम गंभीरं कीरत भई जगमें कीरं सम संख सुधा पुन खीरं सुर बीर स्याम सोंडीरं मानु मती निरमल जिम हीरं । चररररर चरना आयो

सररररर सीस नमायो हररररर हर्ष सवायो उं-
गणीसे बावन म्हाय काती सुद गाय सुजाण
आनन्दा ॥ पुज्य० ॥ ४ ॥

राग काफी होली

गणपतिकी छबि प्यारी मुद्रा मोहन गारी
(ए आंकड़ी) आदिनाथ जिन वर जिम प्रघटे
श्रीभिक्षू मणधारी । तस मुनि पट गणींडाल रिषी-
श्वर दिनंद समो अवतारी । मिथ्या तम करत बि-
डारी ॥ ग० ॥ १ ॥ मालव देश उजीण नगर में
जनम्यां गणि यसधारी । कन्हीरामजीके नन्दा नी-
का जड़ाव सति कूंख उजियारी । वंश यो ओस श्री-
कारी ॥ ग० ॥ २ ॥ वालक बयमें अति बुधवंता
चरण लियो सुख कारी । आगम कोष अनेक सा-
सत्रों अभियास कियो अतिभारी हुये जगमांही
जारी ॥ ग० ॥ ३ ॥ शशिसम सोम बदन यो
सोहै मोहै मन नर नारी । वाक्य सुधासम बर्षित
हर्षित सुण भवि दिल मंझारी । प्रफुल्लित हूवे गण
क्यारी ॥ ग० ॥ ४ ॥ खट दश ओपम असूम्म
परागुण खट तीस उदारी । कामधेनु सम गण इन्द्रा

चिन्तामणी कल्प मंदारी। ज्ञान अरु बोध दातारी ॥ ग० ॥५॥ क्षमा सुरा अरिहन्त तणीं पर ए गुण तो अधिकारी। समरथ वान पणों अति खिम्मा वाह वाह तुज बलियाहारी। थारा दरशन पर वारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ गरजी अरजी करत चौमासो कीजे अति गुणकारीं। माघसुक्क रवि सप्तमी के दिन अरजी सुजान गुजारी। करो गणीं वेग तयारी ॥ ग० ॥ ७ ॥

ढाल देसीख्यालकी।

थांसे मुजरो पावां जावां गढ तखत आगरे कामनी (एचाल)

म्हारी अरज सुणीजे किरपा तो कीजे पुज्य दयालजी (ए आंकड़ी) करजोड़ी अरजी करू सकांई नीचो शीस नवाय ॥ म्हांरा स्वामीजी नींचो ॥ आय करे तुज दरशन केरी मेरी नगरी मांय। भवि आस करत है खास दरशनकी हो डाल गणिन्दजी ॥ म्हारी अरज सुनिंजे० ॥ १ ॥ वाक्य श्रवन सुनने को उमावो चायो करे भवि वृन्द ॥ म्हा० ॥ आनंद कंद। थई हुलसावे सुणी वाणा सुख कन्द हो जी काटे भवफंदा छोड़ी

सब धन्धा सेवा करे आपरी ॥ म्हारी० ॥ २ ॥ बहुत देसना मानवीस कांई आवे बारं बार ॥ म्हारा० ॥ बहु सुख पावे नयन सभीके देखत तुम दीदार । कीर अब जारी कीज म्हैर करदाज हो जयपुर सैर पे ॥ म्हारी० ॥ ३ ॥ कल्पतरू जिम आप स्वामीजी चिन्तामणि मणधार ॥ म्हारा ॥ कामधेनु सम छो सईस कांइ इणमें फरक न सार ॥ बार अब मतना कीजे किरपा कर दीजे हो गण रिछपालजी ॥ म्हारी० ॥ ४ ॥ गरजी अरजी सुजाण करत है देवो अब फुरमाय । नर नारी हरषित हुवेस कांइ सबके आवे दाय राय सबकी है येही श्रीजयनगर पधारो स्वामजी ॥ म्हारी० ॥ ५ ॥

राग ठुमरी में ।

गणी पदपंकज अलि मन म्होयारे जैसे चकोर चन्दकों जोयारे ॥ (ए आंकड़ी) श्रीभिक्षूके सप्तम पाट जिन सम डालगणिंद अवलोयारे ॥ ग० ॥ १ ॥ मेरू सो धीर संयमभू सो गंभीर निरमल जैसे गंगनी तोयारे ॥ ग० ॥ २ ॥ दानी ज्ञानी कल्प कुवेरसो बलि बलि करण विक्रम

गुणाल खोयारे ॥ ग० ॥ ३ ॥ जस पुष्प महिमा तेरी सूं मृगमद मोद कपूर छिपोयारे ॥ ग० ॥४॥ भूमंडल जाइ रिसाइ राखी रहेना कीरत कस- बोयारे ॥ ग० ॥ ॥ ५ ॥ पूरण महर न्हैर करि सींचो जयनगर विटप बडेरा बोयारे ॥ ग० ॥६॥ उगणींसय गुण पट भादू पूनम सुजान गुण गाई पातिक धोयारे ॥ ग० ॥ ७ ॥

इति सम्पूरणम् ॥

अथ गणि गुण महिमा स्तवनम् ।

ढाल ॥ मामी संग भाणुमां श्री रारे (एचाल)

गणिन्द गुण सागरू गणी रे अधिक उजागरू गणींरे ॥ (एआंकडी) सुणिए गणपति बीनती स्वामीरे हारे स्वामी अरज करत कर जोड ॥ ग० ॥ १ ॥ शरण गहोमें आपरो गणीरे ॥ हां ॥ गणी मेट अब गुणारी खोड़ ॥ २ ॥ रतन चिन्तामणि सम तूंही गणींरे ॥ हांरे ॥ गुणवंता सिरमोड़ ॥ ग० ॥ ॥ ३ ॥ गणवत्सल गण बालहो गणीरे ॥ हांरे ॥ कवण करे तुज होड़ ॥ ग० ॥ ४ ॥ सुरगुरु स्वमुख गुण करे गणींरे ॥ हांरे ॥ रसना करि कोडां कोड़

॥ ग० ॥ ५ ॥ गणि गुण पार पावे नहीं गणींरे ॥ हांरे ॥ अतिसयनो नहि ओड़॥ ग०॥ ६॥ तख्त भिक्षु कायम रहो स्वामीरे हारे गुलाब कहे कर जोर

ढाल जिलाकी देसीमें

जिलाजी ह्मेनो राजरा डेरा निरखण आईजी (एचाल)

ह्माराजा तुम दरशन करि आनन्द हर्ष अथायोजी ह्मारा गण शिरताज ॥ पूरब पुन्योदयथी ए सद्गुरु पायोजी ह्माराज ॥१॥ म्हा॥ निरमल वानी गरजत अमि बरसायोजी ॥ ह्मारा ॥ सुन-गुन गावत हृदय कमल विकसायोजी ह्माराज० ॥ २ ॥ ह्माराजा कठिन जुवाससम पाखंड झुंड़मुरझायोजी ॥ ह्मारा ॥ बाजे सुजस सुडंक तीरथ चहु छायोजी ह्माराज ॥ ३ ॥ ह्माराजा आप जिनंद सम सासण जबर जमायोजी ॥ह्मारा॥ हूंतुज दास खास चरन चित्त ल्यायोजी ह्माराज ॥ ४ ॥ ह्माराजा ॥ सुनि जर धर करि किरपा सरणे आयोजी ॥ह्मारा॥ गुलाब कहे तुम रवि वत् तपो सवायोजी ह्माराज० ॥ ५ ॥

हम दम देके सोतन घर जाना (एचाल)

श्रीगणिराज लागत मोय प्यारो ॥ (आंकड़ी) शशि सम सूरत निरख तिहारी गत मिथ्या तँम भयो उजियारो ॥ श्री० ॥ १ ॥ लख निज आतम पद परमातम चाह लगी बरवा सुखसारो ॥ श्री० २ ॥ भवोदधि तरनो पार उतरनो लीनोमें साहिब शरण तिहारो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ कल्पतरू जिम आसा पूरण भविकूं सद्गति मति दातारो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पद पंकजमें लीन भ्रमर चित्त गुलाब कहै थयो हर्ष अपारो ॥ श्री० ॥ ५ ॥

आलीजा थानें कैयां समजाउंहो जला (एदेसी)

गणिन्दा ह्याने घणाई सुहावोजी गणिंद ॥ (आंकड़ी) श्रीभित्तुपट सोहवनाहो गणिंद गणीन्दजी रिषिपतिं सखर सोहंद ॥ ग० १ ॥ मुख पूरण शशिवत सहीहो ॥ ग० ॥ चरण कमल सुखकंद ॥ ग ॥ २ ॥ गुंण भंडार कुबेर समहो ॥ ग ॥ ग ॥ आतिसय जेम जिनंद ॥ ग ॥ ३ ॥ तू मुज मन मांही बस्योहो ॥ ग ॥ ग ॥ जिम भमरे अरबिन्द ॥ ग ॥ ४ ॥ तीरथ च्यार विचे फ-

च्योहो ॥ग ॥ग॥ सुर सभा जेम सुरिन्द ॥ ग ॥ ५ ॥ वज्रायुध छै तेह तणो हो ॥ ग ॥ ग ॥ मेटणा अरिनो धंघ ॥ ग ॥ ६ ॥ तिम तुम जिन बचने थकीहो ॥ ग ॥ ग ॥ पेल्यो पाखंड फंद ॥ ग ॥ ७ ॥ गणा रिछपाल अछो तुमेहो ॥ ग ॥ ग ॥ महिमें जिम नर इन्द ॥ ग ॥ ८ ॥ गुलाब कहे तुज सरणाथी हो ॥ ग ॥ ग ॥पायो अधिक आन्दन ॥ ग० ॥ ६ ॥

चाल गीतकी ।

माली थारा बागमेंरे म्हांने नीबूरो पेड़ बतायरे (एदेसी)

गणिवर थारा गण मझेरे भल संत सती सुखकाररे । त्यारी सुरतनी बलिहाररे ॥ गणी म्हारे मन बसी थारी सेवना रे स्वामी करत सदा सुखकाररे ॥ १ ॥ तुज सिख सिखणी गुण निलारे त्यारे समबेग बसियो गेहरे । तुम आंण न खडे कदेहरे ॥ गणी म्हारे ॥ २ ॥ पंच महाव्रय पालतां रे बले पाले पंच आचाररे । एहना गुणानों न आवे पाररे ॥ गणी म्हारे ॥ ३ ॥ ॥ निज अथवा तुज गण मझेहो सुध संजम जाणो तेहरे । बलि सुरतरु सम मुनिजेहरे ॥ गणीं म्हारे ॥ ४ ॥ श्रावक ब्रत धारक

भलारे नव तत्व तणां तेह जाणरे। धर्म अधर्म लियो पिछाणरे ॥ गणी म्हारे ॥ ५ ॥ प्यारी लागे थारी वांचानोरे म्हाने मीठी अम्रत धाररे । सुणिया मिट अंध अंधियाररे ॥ गणी म्हारे ॥ ६ ॥ हिव मुज आसा पूरीयरे स्यामी म्हारे सहर फदाररे। करिए उपगार अपाररे ॥ गणी म्हारे ॥ ७ ॥ अपनो जान किरपा करोरे स्यामी निज बाड़ी ल्यो संभाररे । प्रफुलित करिए गण क्याररे ॥ गणी म्हारे ॥ ८ ॥ नयन त्रपाति सुख अतिथयो रे ॥ स्वामी निरखत तुज दीदाररे । कहे गुलाबचंद सुखकाररे ॥ गणी म्हारे ॥ ६ ॥

होलीका गीतकी चाल ।

म्हारा बाला जोबनमें किण मारी पिचकारीरे (एदेशी)

वारी जाउंरे सांवरीया थारी मुद्रा मोय प्यारी रे॥ वारी जाउंरे गणिन्दा सुरतनी बलिहारीरे (ए आंकड़ी) श्रीभिक्षु पाट थाट कीयो अति जिन सासण सिणगारीरे ॥ वारीजाउंरे० ॥ १ ॥ अतिशय धर वर गुनके सिन्धू जग बन्धू जगतारीरे ॥ वारीजाउंरे० ॥ २ ॥ रविवत् तेज प्रताप

तिहारो मिथ्या तिमिर बिडारीरे ॥ वारीजाउंरे० ॥ ३ ॥ सोम बदन सशिवत सुख दाई दरशनरी बलिहारी रे ॥ वारीजाउंरे० ॥ ४ ॥ पाप ताप संताप हरणकूं चान्ति खड़ग कर धारी रे ॥ वारीजाउंरे० ॥ ५ ॥ पूरण म्हैर करो करुणानिधि म्हारे सहर पधारी रे ॥ वारीजाऊंरे ॥ ६ ॥ गुलाबचंद आनन्द हद पायो वारीजाउं बारहजारी रे ॥ वारीजाउंरे ॥ ७ ॥

रागकाफी होली ।

आज आनन्द बधाई सुगुरुकी सेवा पाई (ए आंकड़ी) आज भलो रवि जगमें प्रगट्यो आज आनन्द बधाई । गुण गिरवो गणनायक निरख्यो नयन चकोर हुलसाई । फली मुज आस सवाई ॥ आ० ॥ १ ॥ वाणीं अमरित श्रवणों सुण कर हृदय कमल विकसाई । प्रफुलत भविक थया अधिकेरा तन मनसें लव ल्याई । करे सेवा सुख दाई ॥ आ० ॥ २ ॥ एक अर्ज सुनिए अब मेरी जयपुर सहैर सवाई । अपनों जन पद जान क्रपानिधि पधारो मुनिराई । तो सब जन हर्षित

थाई ॥ आ० ॥ ३ ॥ स्वाम तिहारो बिड़द संभा॰
री संतसती सगल्याई। कीजे थाट बाट बहु जोवत
ज्ञान गुलाल महकाई कर्मदल दूर हटाई ॥ आ०
॥ ४ ॥ समकित रंग रंगिया घट भिन्तिर ब्रतधर
फाग खिलाई। गुलाबचंद आनन्द हद पायो कर
जोड़ी सीस नवाई बिनयसे अरज सुनाई ॥
आ० ॥ ५ ॥

ढाल ।

कसीया ने तंबूड़ा कांई सियलराय खड़ा कियाहो (एदेशी)

स्वामी अर्ज सुनीजे मानीजे हित कामी
सही हो म्हारा स्वाम (ए आंकड़ी) । श्रीभिक्षुके
पाट गहे घाट थाट कियो घणों हो म्हारा स्वाम । बत॰
लायो शिव बाट कातियों धातू काटे ते माटे तेह-
नी ओपमां हो म्हारा स्वाम ॥ कापण अघरिपु
चाट ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ आप थये उपगारी
अवतारी आरे पंचमें हो म्हारा स्वाम । जसधारी
गणिराय अहो तुज क्षान्ति दान्ति पुन कांन्ति
ओपे गात्रनीहो म्हारा स्वाम । शान्ति अधिक अ॰
थाय ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ त्रसला अंगज जेहवो

गुनगेहवो साद्रस जिन समोहो म्हारा स्वाम । एहवो अवरनकोय प्राक्रम मृगपति तेहवो गुंजेवो सब्द उचारिये हो म्हारा स्वाम । बर्षित घनवत सोय ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥ अमृत वाणी आणी बरसावो हिव मुज नगर मेहो स्वाम ॥ करता बहुजन आस चावत चंदचकोरा तिम दरशन तोरा मन बस्याहो म्हारा स्वाम ॥ श्रावगनी अरदास ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥ भवि जन उर तुम ध्यानं जिम धनां दिल अघ खयकरू हो स्वाम । गोप्यां मन गोबिन्द तिणसे वेग पधारो अब धारो म्हारी विनती हो म्हारा स्वाम ॥ कहै गुलाब चंदआनन्द ॥ स्वामी० ॥ ५ ॥

ढाल—बाजेतेरा बिछुवा० ।

सुगरु गणांधिपति मेरे मन बसिया (एआंकड़ी) मनमोहानि सुरति तुम निरखी हर्ष भयो जेसे जिनजी दरसिया ॥ सु० ॥ १ ॥ वांणि सुधा गर जल घन जेहवी श्रवण त्रपति मानू मोर हुलसिया ॥ सु० ॥ २ ॥ चरण कमल बन्दित आनन्दत भव भव केरा पातिक नासिया ॥ सु०

॥ ३ ॥ च्यार तीरथ सुख धाम स्वामी मुज जयो २ पर्म पूज्य सुगुणोंके रसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ गुलाबचंद आनन्द सरणमें हिरदयकमल भवीजन के विकासिया ॥ सु० ॥ ५ ॥

रागमांढमें ।

प्यारी म्हाने लागेहो गणिन्द होजी हो गणिंन्द थारी वांण प्यारी (ए आंकड़ी) लोकालोक प्रकाश जिनागम अगम अगोचर जान वचन आदेज हेजथी सुणतां मीठा अमिय समान ॥ प्या० ॥ १ ॥ गद्य पद्य छन्द संध बहु मेलत झेलत न्यायन तांण । स्याद वाद धर विषंवाद हर जिन आणां अग वाण ॥ प्या० ॥२॥ सावद निरवद ओलख गोलख भरत करत शुभ ध्यान । गुलाबचंद कहै धन धन ते नर नित तुज सुनत वखाण ॥ प्या० ॥ ३ ॥

ढाल–देसीजाड़ाकी ।

जाडो जुल्म पडेछेजी राज (ए देशी)

होजी म्हारा गण वत्सल गण इस्वरूजी

म्हारा पर्म पूज्य परमेस्वरजी म्हारे सहर फदारो-जी राज (ए आंकड़ी) श्रीभिक्षु तखत छाजता-जी कांई सादृस जेम जिनंद । मिथ्या तम मेटण भलाजी कांई फाबत तेम दिनन्द ॥ होजी० ॥ १ ॥ गुण षट तीस सु शोभताजी कांई ओपम षट दस सार ज्ञानादिक अति निरमलाजी कांई कहिता न आवे पार ॥ होजी० ॥ २ ॥ सुर गिर जिम तुम धीरताजी कांई बीरता जिम महाबीर बज्र धारि अघ कापवाजी कांई बांणी बिमल गंग नीर ॥ होजी० ॥ ३ ॥ सुनिजर धर करुणां करो कांई बीनती येक अवधार म्हारे नगर फ-दारिएजी कांई अपनो बिड़द संभार ॥ होजी० ॥ ४ ॥ दास आस बहु करत है जी कांई धरत स-दा तुम ध्यान अबतो निजर निहारिएजी कांई अरज सेवककी मान ॥ होजी० ॥ ५ ॥

मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले (एचाल)

सुनिए गंण वत्सल गण स्वामश्री जिन मतिके रखवाले ॥ आंकड़ी ॥ मेंहु तेरेही आधीन रहता सेवामें लयलीन हिब करीए मुजे

प्रवीण समकित रतन यतनसे भाले ॥ सु० ॥ १ ॥ पाई समकित तुज पर साद जीवाजीव भेद बहुलाध थायो चितमें पर्म समाधि छांड़ पाखंड़ कुगरु काले ॥ सु० ॥ २ ॥ जान्यां निज गुन पर गुन भेद । आतम सुखनीं करी उमेद । मिलिया तुम गुरु मिट गई खेद । त्यारो शिवपुर जाने वाले ॥ सु० ॥ ३ ॥ तुमहो सुर गिर जेम सधीर शोभत सादस जिम महावीर बांणी निरमल गंगनों नीर कीरत छाई लोक विचाले ॥ सु० ॥ ४ ॥ विराजत कीधा बहुला थाट इहांभी जोवत तेरी बाट अब कर्म भर्म सब काट । मेटा अवगुण केरे छाले ॥ सु० ॥ ५ ॥ है श्रावक बहु सुविनीत । लागी तुमसें अतही प्रीत । कीधा चौमासा गणि जीत मघवा मांणिक गणींभी संभाले ॥ सु० ॥ ६ ॥ सब भायोंके यह आस । अबकेही कीजे चौमास करता गुलाबचंद अरदास बकसो अनुग्रह रूप दुसाले ॥ सु० ॥ ७ ॥

नयना कसूंभी रंग होरहै (एदेसी)

सुनिए यह अरज हमारी रे ॥ अ ॥ पर्म पूज्य

जगतार ॥ सुनिए ॥ आकड़ी ॥ येक रैन जाग्रत सोतां रे ॥ जा ॥ होता तुम दीदार ॥ सु० ॥ १ ॥ मुज देश स्वाम पधारे रे ॥ स्वाम ॥ लारे समगा पर वार ॥ सु० ॥ २ ॥ त्रिहु तीरथ बिच सोहवे ॥ ती ॥ खोवे मिथ्या अंधियार ॥ सु० ॥ ३ ॥ देसनां गरज घन बरशे ॥ ग ॥ बांगी अमरित धार ॥ सु० ॥ ४ ॥ काव्य कोष कथा ना ब्रन्द ॥ क ॥ छंद भाषा अलंकार ॥ सु० ॥ ५ ॥ ए स्वपन सांचो कीजे ॥ सां ॥ रीजे बहु नरनार ॥ सु० ॥ ६ ॥ सहु श्रावगनी अरजी ॥ श्रा ॥ मरजी कीजे जग तार ॥ सु० ॥ ७ ॥ कहे गुलाब गुगा तुज गावे रे ॥ गुं ॥ पावे शिव सुखसार ॥ सु०

ढाल ॥ देसी चंद्रावलीकी

महाराज हमारी बीनतड़ी अव धारीए ॥ महा० ॥ आंकड़ी ॥ बीनतड़ी अवधारके रांज पधारिए जी कांई ॥ सुख साता सेती नर नारी त्यारी ए जी काई ॥ पा खंडीयारो मान महातम गारीए ॥ पगा हां सेवगनी अरदास ये मनमें धारिए माहाराज हमारी ॥ १ ॥ श्रीभिक्षुके तखतके

आप बीराजताजी कांई ॥ साद्रस जिन महाराज तणीं पर छाजताजी कांई ॥ गहरा धीर गंभीर जलधि जिम गाजता ॥ पणाहां मोहनमुद्रा निरखत अघ सब भाजता ॥ महाराज हमारी ॥ २ ॥ तिमिर हरण निशिअंत प्रगट रवि तेजसूंजी कांई जिम मिथ्या मति नांश बचन आदेजसूं जी कांई ॥ शशिवत निरमल ज्ञान उत्तर द्यो हेजसूं ॥ पणांहां बांणि तुमारी अधिकी मींठी पेजसूं ॥ महाराज हमारी० ॥ ३ ॥ जयपुर नगर सुधाम स्वामि किरपा करोजी कांई ॥ सब भायां रे सरणेछै गणीं आपरोजी कांई ॥ कीजे तुरत भीयार बचन मानो खरो ॥ पणाहां थासे बहु उपगार सार जलदी करो ॥ महाराज हमारी ॥ ४ ॥ सुर गरु स्त्रमुख रसना सहस्र बनावताजी कांइ गणीं गुंण अपरंपार कभी नांहिं पावताजी कांई ॥ निरजर इंद्र नरेंद्र मुनिंद्र गुन गावता ॥ पणाहां गुलाबचंद येक ध्यान तुमारो ध्यावता ॥ महाराज हमारी ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ राग सारंग होरी ॥

ये सुनिए नाथ अर्ज मोरी (एआंकड़ी)

विनय करी तोरे पाय पड़तहूँ ॥ हांरे लाला ॥ वीनती करत हूँ करजोरी ॥ एसुनिए ॥ १॥ शरन लियो भवसिन्धू तरनको ॥ हां रे लाला ॥ कुगुरु कुदेव कु पंथ छोरी एसुनिए ॥ २ ॥ सहस्र निसा-कर कोड़ दिवा कर ॥ हांरेलाला ॥ ता सम तन दुति हद तोरी ॥ एसुनिए ॥ ३ ॥ अति सय जिन सम निर मम खम दम ॥ हांरेलाला ॥ काट कर्मकी झकझोरी ॥ एसुनिए ॥ ४ ॥ आंगा अखंड़ प्रचंड बांणि तुज ॥ हांरे लाला ॥ जयों २ श्रीगछपति योरी ॥ एसुनिए ॥ ५ ॥ पूरगा महर नहरथी सींचो ॥ हांरेलाला ॥ अब संभार बाड़ी तोरी ॥ एसुनिए ॥ ६ ॥ बनीरहै सुनिजर नित हमपे ॥ हांरेलाला ॥ गुलाब कहे बिनती मोरी ॥ एसुनिए ॥ ७ ॥

ढाल

सालें सालेजी नणद बाई रो वीर काटो सालेजी ॥ एदेशी

चालो चालो जी गणिन्द महारे देस पूज्य फदारोजी (एआंकड़ी) ॥ भविजन मन आधार हो रे वाला जिम महीके अहि सेप ॥ पूज्य फदारो

जी ॥ चालो० ॥ १ ॥ आसा पूरण कीजिय-
रे बाबा अहो २ पूज्य परमेश ॥ पूज्य ॥ २ ॥
चिन्ता चूरण तूं खरो रे बाबा साद्रस मणीं रतनेस
॥ पूज्य ॥ ३ ॥ बहुत लाभ थांसे सही रे बाबा
सांभल तुज उपदेस ॥ पूज्य ॥ ४ ॥ अतिशय
धर गुणसागरूं रे बाबा ओपत जेम जिनेश
॥ पूज्य ॥ ५ ॥ करि करुणां हिव त्यारिएरे
बाबा चात्र मांस करेस ॥ पूज्य ॥ ६ ॥ गुलाबचंद
साविनय करी रे बाबा करतां अरजी पेस ॥ पूज्य । ७ ।

ढाल

करवैया न छूओ हमार विदरदी होंवालमां (एचाल),

सुन सुनए यह अरज हमारि क्रिपासिन्धु
हो साहिबा (एआंकड़ी) करूं दरश तभी हर्ष
अधिक होता है शशिबदन सदन नयन चकोर
मोहता है । मन झपट लपट रपट खोता है ग्रहि सखर
सुगुण चुन मुक्तिदाम पोता है । नहिं पावत तुम
गुण पार क्रिपासिन्धु हो साहिबा ॥ सुन० ॥ १ ॥
परूं पाय नमूं सीस में तुज चरणोंमें । सुणूं वाक्य
सुधा मुज करणोंमें । करो देस सुची नाथ लीयो

सरणोंमें । किरपा करि त्यार बांछू तरणोंमें तुम-
हो वांछित फल दातार ॥ क्रिपा० सु ॥ २ ॥
न करूं अर्जतो करूं किस आगे । जे होवे दाता
ताहिसे मांगे । देवे चिन्तत फल कल्पद्रुम जे
सागे देख दुर कंटित जुवाससे भगि अब सुनि-
जर मुजपे निहार ॥ क्रिपा ॥ सु ॥ ॥ ३ ॥
तुज रटत कटत कर्म भर्म नहिं रहता । समकित सु-
ध धार सार ग्रहिता । मोह कींच धोयसोय निज घ-
र रहता । पाखंड़ भंड खंड़ भंड़ डहता । पावेसेवार्थी
शिव सुखनार ॥ क्रिपा ॥ ४ ॥ ए अरज करज
द्रज कर जानीजे । करो अैर म्हैर सहर जयकानी-
जे ॥ कहे गुलाब जाब सताब आपीजे तुज रींज ची-
ज किरपा करि सांपीजे । थावे आनंद हर्ष अपार
॥ क्रिपा ॥ सु ॥ ५ ॥

ढाल

थांपे वारी म्हारा गणपति ये विनती अव-
धारिके राज पधारिये हो स्वाम (ए आंकडी)
श्रीभिक्षुगण तखत सोहंद । थांपे वारी म्हारा गण
पति मेट्या मिथ्या मंद । प्रत्यक्ष दिवा करूंहो

स्वाम ॥ थांपे वारी म्हारा गणपति ये विनती०
॥ १ ॥ अतिशय धारी जेम जिनंद ॥ थांपे वारि
म्हारा गणपति गणवत्सल गुणसिन्धुके
सांचा सुर तरू हो स्वाम ॥ थांपेवारी येविनती-
॥ २ ॥ करि पूरण किरपा ऐ जितेंद्र ॥ थांपेवारी
म्हारा गणपति ॥ साथ लेइं रिषि ब्रन्द्र हुकम करो
सहीहो स्वाम ॥ थांपे वारी । येविनती ॥ ३ ॥
मोर पपैया चाहत चंद ॥ थांपे वारी म्हारा गण-
पति । जिम अभिलाषा करिन्द । श्रावक सहु तुम
तणीं हो स्वाम ॥ थांपे वारी । ये विनती० ॥ ४ ॥
आसा बहु दिनसें गण धार ॥ थांपे वारी म्हारा
गणपति ॥ अबतो निजर निहारवो देस संभारी
एहो स्वाम ॥ थांपे वारी ये बिनती० ॥ ५ ॥
उपगारी करते उपगार ॥ थांपे वारी म्हारा गण-
पति ॥ तारन तरन कहावो तो हिव तारा ए हो
स्वाम ॥ थांपे वारी ये बिनती० ॥ ६ ॥ तुमसे
न करूतो करु किनसे पुकार ॥ थांपे वारी मैं
म्हारा गणपति ॥ इण भव में आधार मिल्यो तू
चिन्तामणीं हो स्वाम ॥ थांपे वारी । ये बिनती०
॥ ७ ॥ भक्ति कियां तारे जगतार ॥ थांपे वारी

म्हारा गणपति । बिन भक्ती जे तारे सही तस तार वो स्वाम ।। थांपे वारि बिनती० ।। ८ ।। गुलाब कहै सरणो सुखकार थांपे वारी म्हारा गणपति ।। एह संसार असारथी पार उतारी एहो स्वाम ।। थांपे वारि य बिनती० ।। ६ ।।

अथ दर्शनकर गावणोकी ।

गणी गुणधारी रे सुखकारी रे भेटयारे धन भाग्य हमारा (एआंकड़ी) इण गणपतिरी महिमा मोटी अतिशय गुणहित कारा मैं वारी जाउं ।। अ।। सुर गुरु स्वमुखथी नितगावे तोही न पावे पारारे ।। धन्य भाग्य हमारा ।। गणी ।। १ ।। दुख उपद्रव सब नासिया रे इत भयादि बिडारा ।। मैंवारीजाउं हुलसत अंकुर तन थकी रे देखत दरश तिहारा रे ।। ध ।। ग० ।। २ ।। आज कृतार्थ में थयो रे भल रवि गगन सिधारा ।। मैं।। कल्पतरु मुज आंगण फलियो गणी मुख नयन निहारारे ।। ध ।। ग० ।। ३ ।। सांभल मीठी देसनां रे श्रवण त्रपाति थया सारा ।। तुम पदपंकज मुज मन भ्रमरा सरणा ग्रहा सुखकारारे ।। ध ।। ग० ।। ४ ।। सुन सेवग-

नीं बीनती रे अनुग्रह करि जगतारा ॥ मैं ॥
बनीरहे सुनिजर नित हमपे आनंद हर्ष अपा
रारे ॥ ध ॥ ग ॥ ५ ॥

अथ सहर पधारियां गावणोंकी ।

एक दिवस विखे न्टपसुत साथ चौगानें धनोंआवे (एदेशी)

थयो हर्ष अपार श्रीगणराज आज मुज सहर पधारे ॥ सब मिल नर नार तारन तरन जहाजनों दरश निहारे ॥ (एआंकड़ी) गादी धर गिरवा गुणवंत । उपसम रस भरि बाक्य बदंत । सुन सुन भविजन मन हुलसंत ॥ थयो० ॥ १ ॥ साथ संत सत्यानों ब्रन्द । जिम तारा बिच सोहवे चंद । अतिशय तनु कान्ती ओपंद ॥ थयो० ॥ २ ॥ पूरण महिर करी आया सब जनके मन मांही । भाव्या करि सेवा सुकृत संचाया ॥ थयो० ॥ ३ ॥ जिनागम स्वमुख फुरमावे संसार अनित नित दरसावे अपूर्व कथा बिच बिच ल्यावे ॥ थयो० नित सुनिजर हमपे बनी रहे भायांवाई सब शरण गहे लेवा शिव रमणी गुलाब कहे ॥ थयो ॥ ५॥

मधरा हालरियाका गीतमें ।

मंदिर चालोजी श्रीसुमतिनाथजीरा दरशन करस्यांजी (ए देशी)

गावो बधावो हे गावो बधावो हे गणीनाथके चरणा सीस नवावोहे ॥ (ए आंकड़ी) कल्पतरू म्हारे आंगण प्रगट्यो आनन्द हर्ष उमावोहे आ ॥ मोतियन चोक पुरावो हे ॥ गावो० ॥ १ ॥ मंगलाचार थयो बहुतेरो सुध संबेग सजावो हे ॥ सु ॥ पातक दूर पुलायो हे ॥ गावो० ॥ २ ॥ हिल मिल सजनी दिवसरु रजनी पूज्य परमपद ध्यावो हे ॥ पू ॥ सेवा कर लीजे लाहो हे ॥ गावो० ॥ ३ ॥ सुस्वर कंठ जयणा युतथी श्रीगणपतिना गुण गावो हे ॥ ग ॥ संचित कर्म हटावो हे ॥ गावो० ॥ ४ ॥ विघन बिनाशक प्रियवच भाषक सांचा सतगुरु पाया हे ॥ सां ॥ दरश करि हर्षित थावो हे ॥ गावो० ॥ ५ ॥ गौचरी बेल्यां दिसि अवलोकी वैसी भावना भावो हे ॥ वै ॥ प्रीत धर साता चावो हे ॥ गावो० ॥ ६ ॥ आंगण आया बिनय भक्तिसे सुध चिहु आहार बहिरावो हे ॥ सु ॥ गुलाब कहे शिव पद पावो हे ॥ गावो० ॥ ७ ॥

अथ श्रीचर्मजिनस्तवनम् ।

पीपलीका गीतमें ।

अब घर आजा विर्खा लगरही जी (ए देशी)

चरमोदधि जिम चर्मजिनेश्वर गुण नि-
लार्जा होजी कांई जाप जपूं सुखकार । अंतरजा-
मी स्वामी सासणना धणीजी होजी कांई त्रिभु-
वनपति सिरदार । जियातू जपले प्रभु महावीर-
नेजी (ए आंकड़ी) ॥ १ ॥ विवद परि सह उप
सूग जीतियाजी कांई कर्म रिपू क्षय कीध । ज्ञाना-
नन्त गुण स्थानक तेरमेंजी । होजी कांई प्रगट
कियां सुप्रसिद्ध ॥ जिया तू जपले० ॥ २ ॥ द्वा
दसांग वच्च अतिही गरजताजी कांई बरषत अ-
मरित धार । भवी जन मोर पपीहा हर्षताजी हो-
जी कांई लोकालोक विचार ॥ जियातू० ॥ ३ ॥
गण धर द्वारे प्रभूजी तारियाजी कांई श्रमण
सहु चौदे हजार । सातसह तिणमां केवलीजी
होजी कांई पाम्यां शिव सुखसार ॥ जियातू०
॥ ४ ॥ चंदन वाला आदिदेजी कांई साधवी
सहस छतीस । निरमल चारित्र पाल्यो भावसूंजी

होजी काई म्हासतियां सुजगीस ॥ जियातू० ॥ ५ ॥ नाण अवधि मन परियवाजी कांई थया बहुत अणगार। आतम ध्यानी तपस्वी अतिघणा-जी होजी कांई लब्ध तणा भंडार ॥ जियातू० ॥ ६ ॥ पायो सासण आपरोजी कांई मेंछू च-रणारो दास गुलाबचन्द कहै सरणों आवियोजी होजी कांई मेटो भव दुख पास ॥ जियातू० ॥७॥

पुनः स्तवनम् ।

छबि दिखलाजा बांके सांवरिया ध्यान लगो मोय तोरारे (ए देशी)

श्री बर्धमान स्वाम सुख करजिन जाप ज-पूंमें तोरारे। सीतल बानि खानि निजगुन सुन हरषत दरशत प्रगट पाप पुन्य फल दुख सुख है शुभाशु-भ योग ताते कुमति संग छोरारे ॥ श्रीबर्ध० ॥१॥ लागी लगन धर्मसे मेरी सिरपर धारी आणातोरी प्रीत जगी अंतर आतम बिच जैसे चंदचकोरारे॥ श्रीबर्ध० ॥२॥ सुख बासन शासन तुज नामी मन बाञ्छित फल दायक स्वामी। गुलाब कहै ये अरज दरज कर करतहूं कर युग जोरारे॥ श्रीबर्ध० ॥३॥

पुनः स्तवनम् ।

ज्ञान जोर तोरे चरणपरी आवो नगर मोरे हरी (ए देशी)

शर्ण लियो भव सिन्धु तरणको तारो जिन करुणा करी (ए आंकड़ी) आप निरंजन जन मन रंजन चेतन मंजन भव दुःख भंजन राहलियो तोरे कुगति टरी ॥ तारो जिन करुणा करी० ॥ १ ॥ बीतराग तुम धर्म रागि हम अमित जागि रम परणित आतम निज गुन सारत बिपत हरी ॥ तारो० ॥ २ ॥ उन मारग तज सुध मारग भज करण सिद्धि कज गुनगावत तुज गुलाबचंद कहे आनन्द घरी ॥ तारो० ॥ ३ ॥

अथ निजजीवको प्रतिबोधनेकी ग़ज़ल।

आया करो इधरभी मेरी ज्यान कभी २ (ए देशी)

ल्याया करो शुभ भाव चेतन यार सही सही । मिलेंगे सुख तभी अपरंपार सही २ । (ए आंकड़ी) काबूमें करके दिलको चला सिद्धि स्थानकी तरफ। वहां है अनन्त शक्तिवंत वहार सही २ ॥ ल्याया० ॥ १ ॥ तू है वैसाही याद कर निजरूप भूपको

मगर कर्मोंके संग रंग छार सही २ ॥ ल्याया० ॥ २ ॥ निज पहिलोंको तू भूल पर रूलमें रमें गमे नहीं ये रीत प्रीत बार सही२॥ ल्याया ॥ ३ ॥ मत कर पराई बात घात प्रांण मात्र ही । अहिंन्सा धर्म पर्म नरम सार सही२॥ ल्याया० ॥ ४ ॥ अब चेत प्यारे पाप टार साधना वही । महाबरत पंच करत अंगीकार सही २ ॥ ल्याया० ॥ ५ ॥ भवन भव दुःख ज्यो चाहे अगर नहीं तो सच्चे गुरुकूं करो नमस्कार सही २ ॥ ल्याया० ॥ ६ ॥ पावेंगे सुख अजर अमर गुलाब यों कही । रखूं जतन रतन तीन सार सही २ ॥ ल्याया० ॥ ७ ॥

दयाधर्मस्तवनम् ।

चाहे बोलो या न बोलो दिलो जानसे फिदा हूं (ए चाल)

ये बात सही कर जानो जिन धर्म दयामें मानो (ए आंकड़ी) बिन दया धर्म नहिं होवे । तू चेत जरा क्या सोवे । छउ कायाको पहिचानो जिन० ॥ १ ॥ सब मतमें दया बताई । हिन्सा खोटी दरसाई । कुल वेद पुरान बखानो ॥ जिन० ॥ २ ॥ जिन आगम मांहि सुन्योछै अहिन्सा

धर्म थुन्योछै । ये रतन वतन पहिचानो ॥ जिन० ॥ ३ ॥ मत हणो प्राण खटकाई । कही परसे हणावो नाहीं । हणताने भलो मतजानो ॥ जिन० हिन्सामें धर्म ज्यो लाधे । तो दया कियां अपराधे करो गोर झूंठ मततानो ॥ जिन० ॥ ५ ॥ इक-इन्द्री जीव मराई । त्रसकू साता उपजाई । तब दया धर्म कहां ठानो ॥ जिन० ॥ ६ ॥ ये मर्म धर्मनो सोचो जरा अंतरघट आलोचो । बेर बेर न नर भव पानो ॥ जिन० ॥ ७ ॥ धर्म हेत जंतु जे मारे । माने नहिं दोष लगारे । ये अन तीर्थक निवानो ॥ जिन० ॥ ८ ॥ भगवंत तणी ये बांणी । तिरिया जे सत्य कर जांणी । सुध समकित दिलमें आनो जिन० ॥ ९ ॥ जे दया धर्म आदरियो । तसु भव भ्रमनां दुख टरियो । संजमथी शिवगति स्थानो ॥ जिन० ॥ १० ॥ पंच आश्रव द्वारको टारो । जब थावे सुःख अपारो । कहे गुलाबचंद हुलसानो ॥ जिन० ॥ ११ ॥

जिनबाणी स्तवनम् ।

बटवां गूथणेंदेर मीजाजिड़ा बंटवां (ए चाल)

बांणी अमरित धार प्रभूजी थारी ॥ वां ॥ मोय

प्यारी सुख कारी बाले हारी जिनंद थारी बांणी अमरित धार (ए आंकड़ी) प्रभु मुख नि-कासि कुसम वत् बिकसी प्रफुलित करी गण स्यार । हे सोहम गणधर संग्रह करके आगामी सूत्र मंझार । ॥ मोयप्यारी ॥ १ ॥ स्याद वाद सज विषंवाद तज पज भवसागर तार । हे सुन संजम धर तत्व बिलोकि वरता शिव सुखनार ॥ मोयप्यारी ॥ २ ॥ नय निक्षेप यथारथ समजी किया सुगरू अंगीकार हे कहे गुलाब तेरो पंथ पायो थायो हर्ष अपार । ॥ मोयप्यारी ॥ ३ ॥

महाबीर जिनस्तवनम् ॥

भरी गगर मोरि ढुरकाई छैल (एचाल)

सुनो अरज मोरी जिन राज आज ॥ सु ॥ करो सिद्ध काज देवो शिवको राज ॥ सु ॥ (ए आंकड़ी) दुस्तर भव जल पलमें तरनकों मिले मोय सुगर गुणोंकी जहाज ॥ सुनो ॥ १ ॥ तूं अलमस्त समस्त प्रकाशत श्रीमहाबीर गरीब निवाज ॥ सुनो ॥ २ ॥ आतम संमपाति प्रकट करन कूं दया धर्म सुध पर्मसाज ॥ सुनो ॥ ३ ॥ व्रत भूषण दूषण रुब बरजित शिरधारी तुम

आंण ताज ॥ सुनो ॥ ४ ॥ गुलाबचंद हद आनंद पायो सरणआयेकी रखिय लाज ॥ सुनो ॥ ५ ॥

अथ कव्वालीकी चालमें ।

अब मोह नगरियामें नहिं रहुं मोय प्यारी लगे अपनी नगरी ॥ मोयप्यारी लगे ॥ (एआंकड़ी) काल अनादिसे बास लह्यो। अस्ट कर्मोंके संग उलठ भयो चक्र भम्यो ड़गरी ड़गरी ॥ मोय प्यारी लगे अपनी नगरी ॥ १ ॥ अब जिन वच सांभल लगन लगी । उरमें सुध समकित जोत जगी । तब घोर मिथ्यात्वकी नीदटरी ॥ मोयप्यारी लगे ॥ २ ॥ निज आतम रिधि है सिद्ध जिसी । एजान ज्ञानोदयसे हुलसी । करस्यूं करणी सखरी सखरी ॥ मोयप्यारीलगे ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता भाव झिले । भिन्नाधिकरणता दूर टले । सुख साश्वय बेग मिले तबरी ॥ मोय प्यारी लगे ॥ ४ ॥ कहै गुलाबचंद आनंद लहै । जे नाथ निरंजन सरण गहै । प्रभु ध्यान कीयां प्रभुता सगरी ॥ मोयप्यारी लगे अपनी नगरी ॥ ५ ॥

अथ श्रीड़ालचंदाचार्यस्तवनम् ।

होलीका गीतकी चाल ।

हां सगीजीनें पेड़ा भावे (एदेसी)

हांके गणीवर डाल पियारो । सासणपति सत् जग उजियारो । च्यार तीरथरो साहिबो तेरा-पंथवारोरे । के गणीवर डाल पियारो ॥ १ ॥ मालवदेश उजेण मंझारो । सेठ कनीराम जात पियारो । तस सुत अदभुत क्रान्ति सान्ति चित गुण युत सारोरे ॥ के गणीवर डाल पियारो ॥ २ ॥ लघुवयमें संजम व्रतधारो । प्रबल बुद्ध धरि शुध आचारो । नीत निरमल बल तेजसे पाखंड सब टारोरे ॥ के गणीवर डाल पियारो ॥ ३ ॥ मांणक पट थट करत अपारो । ज्ञानालय अतिशय सुखकारो विविध रीत हित साधसती विच वाग्रत कारोरे ॥ के गणीवर डाल पियारो ॥ ४ ॥ गुण गिरवो अति मोहनगारो । भविजन मन थयो हर्ष अपारो । गुलाबचंद आनंद कंद लह्यो सरण तिहारोरे ॥ के गणीवर डाल पियारो ॥ ५ ॥

राग सारंग ।

च्यार तीरथरा लाड़लाजी म्हारे जयोश्री डालगणिन्द (एआंकड़ी) श्रीभिक्षु तुज गणनलभोजी काई ये मुनिवरनों ब्रन्द ॥ च्यार तीरथरा लाड़लाजी म्हारे जयोश्री डालगणिन्द ॥ १ ॥ बलि म्हासतियां दीपतीजी कांई श्रावग श्राविका कन्द ॥ च्यार ॥ २ ॥ गणपति गिरवा शोभताजी कांई जिम सुर सभामें सकिन्द ॥ च्यार ॥ ३ ॥ ज्ञानोदय तुम रवि समोंजी कांई मेटण मिथ्या मन्द ॥ च्यार ॥ ४ ॥ गरजत घन जिम देसनाजी कांई बाग्रत वयन अमन्द ॥ च्यार ॥ ५ ॥ प्रिय लागे तनु संपदाजी कांई मुख पूरण जिमचन्द ॥ च्यार ॥ ६ ॥ करि दरशन सुख पावियोजी कांई गुलाबचंद आनंद ॥ च्यार ॥ ७ ॥

म्हारी घूमरकै नखराली हेमा घूमर रंमवा जावादे (एचाल)

देसना घन जिम अति गाजे श्रीडालचंद गणी राजेहो स्वाम । म्हाने व्हालो लागे सन्त समा जे हो स्वाम । सुमर्‍यां हुवे वांछित का

जेहो स्वाम ॥ देसना धन जिम अति गाजे ॥ (एआंकड़ी) श्री भिक्षु मुनि पट भलारे ज्ञान गुणो भंडार । संत सत्यां बिच शोभतारे ओपता जिम जगतार सार सुख साजे हो स्वाम ॥ देशनां ॥ १ ॥ समकित तरू प्रफुलित हुवेरे भवि-जन हृदय मंझार । बरत पुष्प फल नीपजेरे तिण-से खेवो पार जहार गुंण छाजेहो स्वाम ॥ देशनां ॥ २ ॥ पूज मिष्ट बच छोड़के रे मिच्छत बिषमत धार । गुलाब कहे सुखते लहैरे थावेजे अणगार खार अघ भाजेहो स्वाम ॥ देशनां ॥ ३ ॥

ढाल देसीगतकी

क्या जादूड़ारामें झारी लीयां ठाडीरे ज्यान क्या जादू ड़ारा (एचाल)

क्या छविप्यारी थांरी मुद्रा मोहनगारी हो स्वाम ॥ क्या० ॥ तुम पंच महाव्रत धारीहो स्वाम ॥ क्या० ॥ में निरख निरख वलिहारीहो स्वाम क्या छवि (एआंकड़ी) बैठाश्रीजिन गादी ऊपर शोभे अतिशय धारी । करी प्रफुलित गण गुलक्यारीहो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥ १ ॥

क्षान्ति दान्ति चित सान्ति गुणांगर निरमभ निरहंकारी । दियो पाखंड़ पंथ बिड़ारीहो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥ २ ॥ बिविध मरियाद अमृत हित बचथी संभलावो । सुखकारी करो सरणा संत सत्यांरो हो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥ ३ ॥ किरपा सुनिजर रहे नित हमपे करुणा भाव विचारि थांरी सेवा अति हितकारीहो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥ ४ ॥ माफ करो अवगुण सब मेरे बिड़द जाण पोतारी ये अरज गुलाब गुजारी हो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥

ढाल नाटककी चालमें ।

सुख पारे तूंतो ध्यारे जीया ड़ालगणिन्द गुण गारे (एआंकड़ी) मुनी पट भित्तके हदसो-हवे तसू चरणां चित ल्यारे ॥ जिया ड़ालगणि-न्द गुंण गारे ॥ तूध्यारे ॥ १ ॥ पदवी धर गण वत्सल साहिब सुमरत कर्म खपारे ॥ जिया ॥ २ ॥ दायक समकित चर्ण तणो ये देख दरश हुल-सारे ॥ जिया ॥ ३ ॥ वाणित बच जिन मार्ग य-थारथ सुध दरशन दरसारे ॥ जिया ॥ ४ ॥

दूजो एहवो नाहिं भर्तमें होतो मोय बतलारे ॥ जिया ॥ ५ ॥ सुध आचारजके गुण गातां तिर्थं कर पद पारे ॥ जीया ॥ ६ ॥ गुलाबचंद आनन्द सरणमें हुलस २ गुण गारे ॥ जिया ॥ ७ ॥

चाल नाटककी ।

श्रीराजमाता गणनाथ नगरी म्हारानी म्हारानी (एचाल)

श्रीडालचंद गणीराज गछपत म्हाराजा म्हाराजा ॥ तुमहो तारन जिहाज गछपति म्हाराजा ॥ म्हाराजा (एआंकड़ी) तुम शिव गामी अंतरजामी भवदधिकेपाजा सुरनर वंदे । पाप निकन्दे पाय पड़े राजा ॥ श्रीम्हाराजा म्हाराजा ॥ १ ॥ मनसा पूरण चिन्ता चूरण चिन्तामण ताजा संकट हरणे तेरो सरणो है गरीब निवाजा ॥ श्रीम्हाराजा ॥ म्हा ॥ २ ॥ गुलाबचंद कहै थयो अति आनन्द गुन गावत साजा ज्यो तुम ध्यावे शिव सुख पावे बाजे जस बाजा ॥ श्रीम्हाराजा ॥ म्हाराजा ॥ ३ ॥

इति संपूरणांम् ॥

सवैया ३१ सा ।

एसो जिन सासन है प्रकट प्रवीन जामें भविक लहलीन रहे गणि गुण गाय के । अनुतर भुवनके अमर धरत ध्यान जिन सा मुनिन्द जान कहे सुख पायके मुनि पट भित्त के फावत ड़ाल इन्द महिमां अप्रम पार कोर अघ तोड़के कीरत सुजस जाकी मधुर बचन ताकी जावे बलि हारी ए गुलाब चंद जोड़के ॥ १ ॥

पुनः सवैया ३१ सा ।

शोभत हैं सोहम सभापति सक्रेन्दसे भूपति दरवार फावै चक्रराय आनिए तारा गण सशि पुन पंड़िता भूषण गुन वनिता सिणगार सील तनु मैं प्राणि ए । ओपे क्रिया ज्ञानतें सर्धा तत्व ज्ञानतें आत्माहूके ध्यानतें अध्यामतां बखानिए । कहते गुलाब ऐसें आज इस भर्तमांहि शासन सिरोमन श्रीड़ाल भशिजानिए ॥ १ ॥

इति संपूरणाम् ।

अथ उपदेस वर्णन् कलस ।

चाल गीतकी छन्द

वर अथिर ये संसार सगपण लघू बड़पण कारमों । जिम ओस बिन्दू जिहांसो भिन्दू निश निकन्दू नां रम्यो फुन स्वपन में इक मानवी मन जानवीहूं नर पती । बहु गरथ पाई दुख गमाई रिधि सम्भाई है अती । ते रंक बंक निसंक निद्रा पाय सूतो बन मही । शिर हेट हड़िया कर पकड़िया स्वान अड़िया जागही । नहिं राज पाट सु थाट नरनो चिन्तवे ये स्योथयो । इम कहै गुलाब सतावसे धर्म कीजेये जे जिन कह्यो ॥ १ ॥

त्रिभंगी छन्द ।

पहिले गुन ओलख । पेख अमोलक । खोले गोलख तब बानियां । तो नफा उगावे चित हरकावे गगर बजावे भर पनीयां । इम भविगुर धारे ज्ञान बिचारे कुगरु निवारे धन संगी । बिपत मिटावे शिव पद पावे छन्द कहावे तिरभंगी ॥ १ ॥

सवैया ३१ सा।

कुमति कुनारी नाह ताहिको विचारो सारो कुगुरु कुठारी जैसो सांपको पिटारो है। निन्दक अपारो बिन आगा धर्मधारो जिन सासनसे न्यारो निज गुणको डगारो है। राग द्वेष धारो माया लोभमें मथारो ऐसो कुगुरु धुतारो तन मनसे बिसारो है। कहत गुलाब जब हर्ष आनन्द सब पाई समकित अब तेरो पंथ प्यारो है १ ॥

उपदेस कलस।

अहो प्राणी क्यों अजाणी रहै तनसदा निज उत्पत्तिको याद कर डर-गर्भ दुखपायो तदा पदऊंच मस्तक नीच कर दोयं मुष्ट चक्षू पामही पुन भाकसी जिम पेख देख गुमान मति कर जासही॥ १ ॥

पुनः कलस।

चेत चैतन्य अथिर है तन धन जोबन नितना रहै इसवास्ते निज वस्तुजानी इक ठिकानी चित गहै बलि अंजलीना नीर जिम पुन पान पाको गिर-

तही इम कुगुरु करमी जीव डूबत सुगरु संगी तिर-
तही ॥ १ ॥

कलस चाल गीतकी छन्द।

श्रीवीरसासन सुखको बासन धर्म आसन जानही। भिक्षुगणीनो गण अनोपम मिल्यो निज गुण थानही। सुध दरश दरस्यो आतम फरस्यो उदय समकित नो थयो। गणी डालचंद प्रसाद श्रावक गुलाब कहै आनंद भयो ॥ १ ॥

इतिसंपूर्णम्।

शुद्धाशुद्धिपत्रम ।

पाने	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
७	१०	पुद्दल	पुदगल
८	१४	मालूमनहीमक्का	सम्पूरणमालूमनहोसक्का
९	११	भूमरड्ल	भूमंड़ल
१३	१३	संद्यनो	संघनो
१३	१६	सुर	सुख
१४	२	याम	पामें
१६	३	केलंवी	केलबी
१६	४	आवांतो	अवतो
२०	९	निजपर्याय	कुलमर्याय
२२	७	सिड़ाय	सिझाय
२३	१९	थांजीवे	धावेजी
३१	१३	कुथु	कुंथु
३८	१८	हदनांकोजी	हदनींकोजी
५१	१९	सुगुरु	सुरगुरु
५२	१०	त्राता	त्राता
५३	७	अन्तमें	अंगमें
५४	१८	पासंग	पासग
५७	१९	ओखियोरो	आखियोरे

पाने	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
५६	५२	सजंम	असंजम
५९	१७	वीर	वार
६२	१८	यामो	पामो
६६	१४	खप	खय
६९	१३	मणा	मणु
७०	५	अस	त्रस
७०	९	देवरु	देवगरु
७०	१८	वाल्यादिकनों	छाल्यादिकनो
७४	६	विनजाया	विनजोया
७५	८	पुनिराजनी	मुनिराजनी
७६	१	वाध्योहुवे	वांछ्योहुवे
७६	८	श्रीजिमवर	श्रीजिनवर
९८	१५	भवोदिखई	भवोदधिखाई
१०१	१२	साम्य	सौम्य
१०२	१६	जम	जेम
१०३	१	गणांरी	गणीं
१०३	७	अरिकंद	अरि।विन्द।
१०३	१५	वाजा	वाजी
१०६	४	कीर	कार
१०६	४	करताज	कारदीजे